स्वस्थ चेतना का वाहक

अक्तूबर 2026

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
40/-₹

— विशेष आयोजन —

जेनरेशन Z

— उसकी सोच —

भविष्य की राजनीति

पर उसका प्रभाव

- डिजिटल सोच वैश्विक दृष्टि
- संवाद करने वाली नई पीढ़ी
- सोशल मीडिया से सामाजिक बदलाव तक
- नीतियों पर सवाल भागीदारी की चाह



(An ISO 22000:2005 Certified Company)

OCEANS SECRET

INDIA'S LEADING CANNED FOOD BRAND

- TUNA
- SARDINES
- MACKEREL



www.oceanssecret.in | info@seahath.com | Follow Us: oceanssecret | SHOP ONLINE @ amazon

SEAHATH CANNING CO. Plot - 8, Margao Industrial Estate, Curtorim, GOA, INDIA - 403 709 **CUSTOMER CARE : 0832-2860412**

प्रधान संपादक
डॉ. फ़रहत हुसैन

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 40/- रु॰ एक वर्ष 450/- रु॰
पांच वर्ष 2000/- रु॰ आजीवन रु॰ 6000/
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 150/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 50/- US डॉलर

अदाएगी के बाद स्क्रीनशॉट हेल्पलाइन न॰ **9818799223** पर अवश्य भेजें।

Name: KANTI
Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ़्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत
ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं

Printer : Akhilesh Singh
Press : AARYA PRINTERS
201, Ground Floor, DSIDC Complex
Okhla Industrial Area phase-1,
New Delhi-110020
Editor : Mohammad Ahmad

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

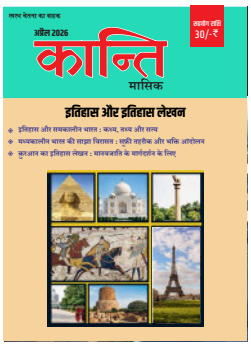
विचार सौरभ **डॉ. कौसर यज़दानी नदवी**

तुम हंसे किस पर ?

सन् 1498 ई॰ के लगभग
अमेठी के पास जायस नामक गांव में
एक बच्चे ने जन्म लिया,
जो बाद में अपनी विद्वता के कारण
हिन्दी कवि के रूप में इस शान से उभरा
कि हिन्दी साहित्य
उसकी चर्चा के बिना अधूरा रहेगा।
उस कवि का नाम था मलिक मुहम्मद जायसी,
सर्व विख्यात 'पद्मावत' के रचयिता।
मलिक मुहम्मद जायसी के मां-बाप
बचपन ही में गुज़र गए थे।
उन्हें चेचक ने भी आ दबोचा था।
इसमें उनकी एक आंख भी चली गई थी,
और चेहरे पर दाग़ भी पड़ गए थे,
जिसने उन्हें कुरूप बना दिया था।
जायसी की ख्याति सुनकर एक बार
बादशाह शेरशाह ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया।
जायसी जब भरे दरबार में पहुंचे,
तो उनका कुरूप चेहरा देखकर बादशाह को हंसी आ गई,
दरबारी भी हंस पड़े।
स्वाभिमानी जायसी ने निर्भीकता से पूछा,
तुम मुझ पर हंस रहे हो, यह ग़लत है।
तुम्हें तो हंसी आ रही है उस कुम्हार (विधाता) पर,
जिसने मुझे रचा है।
क्या यह सत्य नहीं है ?
शेरशाह तत्काल अपनी ग़लती समझ गया।
विद्वान भले ही कुरूप हो,
आदर-सत्कार तो उसकी विद्वता का होगा।
वह बहुत लज्जित हुआ,
उनसे क्षमा भी मांगी,
फिर बाद में उनका बड़ा सत्कार भी किया।

(प्रथम प्रकाशन : अगस्त-1998)

वर्ष 36 अंक 04 अक्तूबर 2026





स्वस्थ चेतना का वाहक

कान्ति
मासिक

इस अंक में

- तुम हंसे किस पर ? (विचार सौरभ) – डॉ. कौसर यज़दानी नदवी 3
- जेनरेशन Z और उसकी सोच (संपादकीय) –डॉ. फ़रहत हुसैन 5
- मार्गदर्शन –अब्दुल अल्लाम नदवी 6
- सिमटती दुनिया और इस्लाम की बढ़ती प्रासंगिकता –एफ़. ए. मुजीब 7
- सफल जीवन का K.I.S.S. फ़ार्मूला –संपादन प्रभाग 9
- नई पीढ़ी, नई तकनीक और भविष्य की राजनीति –सय्यद ख़ुर्रम रज़ा 11
- जेन ज़ी की सोच : समाज, परिवार और रिश्तों के नए मायने –एफ. ए. मुजीब 15
- आसान नहीं जेन ज़ी की राह –सुफ़ियान अहमद 19
- स्क्रॉल, लाइक्स, फ़ॉलोअर्स के बीच अपनी जगह ढूँढ़ती किताब –डॉ. मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी 21
- क्या Gen Z अपनी सभ्यता, संस्कृति और नैतिक एंव धार्मिक मूल्यों से विमुख हो रही है ? (साक्षात्कार) –मुशर्रफ़ अली 25
- Gen-Z की परवरिश और उन्हें समझने के दस मूल नियम –डॉ. जावेद इक़बाल 29
- विश्व घटनाचक्र –संपादन प्रभाग 31
- गांधी जी का चिंतन और आज का भारत –संपादन प्रभाग 33
- त्योहार तथा पर्व –संपादन प्रभाग 35
- ग़ज़ल –हफ़ीज़ मेरठी 37
- किताबों की आख़िरी हिचकी –वुसअतुल्लाह ख़ान 39
- AI के दौर में महिलाओं की गरिमा कितनी सुरक्षित? –तबस्सुम शेख़ पुसद 41
- शिक्षा : अधिकार से बाज़ार तक –जुनैद अली 43
- मदीना मार्केट की स्थापना –डॉ० फ़रहत हुसैन 45
- यसरिब वाले –मुशर्रफ़ अली 47
- भारतीय धर्म-ग्रंथ और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) –सय्यदा हुमैरा 50

संपादकीय



डॉ. फ़रहत हुसैन

जेनरेशन Z और उसकी सोच

जेन ज़ी (Gen Z) एक ऐसी होशियार, तकनीकी रूप से सक्षम और बदलाव पसंद पीढ़ी है जो पुरानी रूढ़िवादी सोच को लगातार चुनौती दे रही है। यह उन युवाओं का समूह है जिनका जन्म 1997 से 2012 के बीच हुआ है। यह इतिहास की पहली ऐसी पीढ़ी है जिसे डिजिटल नेटिव्स (Digital Natives) कहा जाता है, क्योंकि इन्होंने होश संभालते ही इंटरनेट, स्मार्टफ़ोन और सोशल मीडिया को अपने आसपास पाया। उनकी पहचान आत्मनिर्भरता, व्यावहारिक सोच और वैश्विक जुड़ाव से है। ये लोग किसी पुरानी परंपरा को आंख मूंद कर स्वीकार नहीं करते बल्कि हर चीज़ के पीछे तर्क और निष्पक्षता ढूंढ़ते हैं।

डिजिटल सोच : यह पीढ़ी मानसिक स्वास्थ्य को लेकर बहुत गंभीर है। इंटरनेट के कारण इनका दिमाग़ हर समय जानकारी से परिपूर्ण रहता है, इसलिए इनकी निर्णय लेने की क्षमता काफ़ी तेज़ है। इन्हें दिखावा या बनावटीपन पसंद नहीं है, यह उन्हीं लोगों और विचारों को पसंद करते हैं जो पूरी तरह वास्तविक और पारदर्शी होते हैं। इन्होंने अपने माता-पिता को आर्थिक समस्याओं से जूझते देखा है इसलिए यह पैसों को लेकर बहुत प्रैक्टिकल हैं। पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय इनकी प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर हैं।

मेरिट पर भरोसा : भारतीय समाज में नई जनरेशन का दृष्टिकोण धार्मिक और जातिगत भेदभाव को लेकर पिछली पीढ़ियों की तुलना में काफ़ी उदार, व्यावहारिक और प्रगतिशील है। पिछली पीढ़ी में किसी व्यक्ति का मूल्यांकन अक्सर उसकी जाति या धर्म के आधार पर होता था, लेकिन नई पीढ़ी मेरिट पर भरोसा करती है। वे एक ऐसे समाज की वकालत करते हैं जहां हर किसी को उसकी पृष्ठभूमि के बजाय उसकी योग्यता के आधार पर आंका जाए। धर्म और जाति, सार्वजनिक प्रदर्शन या भेदभाव का ज़रिया नहीं बल्कि व्यक्तिगत पहचान तक सीमित रहे।

जवाबदेही चाहते हैं : युवा पीढ़ी यह भी समझती है कि राजनीतिक लाभ के लिए धर्म और जाति का इस्तेमाल एक हथियार की तरह किया जा सकता है। वह जाति और धर्म के विवादों के बजाय शिक्षा रोज़गार, महंगाई और मानसिक स्वास्थ्य जैसे बुनियादी मुद्दों पर सरकार और समाज से जवाबदेही चाहते हैं। यदि कहीं उत्पीड़न या धार्मिक असहिष्णुता की घटना होती है तो नई पीढ़ी सोशल मीडिया के माध्यम से तुरंत उसके ख़िलाफ़ मुहिम चलाती है और न्याय की मांग करती है। ये मीम्स, रील्स और लेखों के ज़रिए पुरानी पीढ़ी के रूढ़िवादी विचारों का मज़ाक़ उड़ाते हैं और समाज को अधिक उदार बनने की सीख देते हैं।

चुनौतियां : इस पीढ़ी के सामने कुछ गंभीर चुनौतियां भी हैं। सोशल मीडिया के एलगोरिथ्म के कारण कुछ युवा, कट्टरपंथी विचारों के चक्कर में फंस जाते हैं जिससे ऑनलाइन ट्रोलिंग और धार्मिक बहसें बढ़ जाती हैं। दूसरे यह कि शहरों में रहने वाली नई पीढ़ी जाति धर्म से काफ़ी ऊपर उठ चुकी है लेकिन ग्रामीण या अर्द्धशहरी इलाक़ों के युवा पूरी तरह से इन बंधनों से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। पिछली पीढ़ियों में मानसिक मज़बूती और विपरीत हालात को झेलने की क्षमता कुछ बेहतर थी, जेन ज़ी छोटी-छोटी बातों पर जल्दी निराश हो जाते हैं। एक समस्या यह भी है कि किसी एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने की इनकी अवधि (attention span) कम होती जा रही है। एक बड़ी चुनौती यह है कि जेन ज़ी एक ऐसे समय में अपने करियर की शुरुआत कर रही है जहां एआई (Artificial Intelligence) तेज़ी से बढ़ रहा है, रोज़गार कम हो रहे हैं, और महंगाई आसमान छू रही है।

आत्म-चिंतन का समय : जेन ज़ी की कमियां असल में उनके आसपास की बेहद तेज़ डिजिटल दुनिया का नतीजा है। उन्हें पिछली पीढ़ियों से धैर्य और मानसिक मज़बूती सीखने की ज़रूरत है, जबकि पिछली पीढ़ियों को उनसे, बदलाव को तेज़ी से अपनाना और खुलापन सीखना चाहिए। पुरानी पीढ़ी के लिए यह अवसर आत्मचिंतन का भी है कि उसने भावी पीढ़ियों के लिए कैसा समाज छोड़ा है–ऐसा समाज जहां नफ़रतें हैं, भेदभाव है, आर्थिक असमानताएं हैं, धर्म और जाति आधारित विवाद हैं, अन्याय और शोषण है, पर्यावरण प्रदूषित है। ■■

–अब्दुल अल्लाम नदवी

क़ुरआन



नौजवानों और जवानी की अहमियत

“निश्चय ही वे कुछ नौजवान थे, जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उन्हें हिदायत में और बढ़ा दिया।” (क़ुरआन 18:13)

इतिहास गवाह है कि जब नौजवान किसी उद्देश्य को दिल से अपना लेते हैं, तो हालात बदलने लगते हैं। जमी हुई सोच में हलचल पैदा होती है, समाज की दिशा बदलती है और कभी-कभी पूरा व्यवस्था-तंत्र भी नए दौर में प्रवेश करता है। युवावस्था केवल जीवन का एक पड़ाव नहीं, बल्कि ऊर्जा, साहस, कल्पना और कुछ कर गुज़रने की उम्र है। इसलिए दुनिया में बड़े सामाजिक परिवर्तन के पीछे अक्सर जागरूक और दृढ़ निश्चयी युवाओं की शक्ति दिखाई देती है।

असहाबे-कहफ़ इसी सच्चाई का क़ुरआनी उदाहरण हैं। वे कुछ नौजवान थे, जिन्होंने अपने समय के ग़लत वातावरण के सामने झुकने के बजाय अपने रब पर ईमान को चुना। उनके पास बड़ी संख्या नहीं थी, लेकिन उनके पास सही विश्वास, मज़बूत इरादा और अपने सिद्धांतों पर डटे रहने का साहस था। क़ुरआन ने उनकी इसी विशेषता को सम्मान के साथ याद किया।

आज भी यदि युवा यह ठान ले कि उसे अपने समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है, तो कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती। लेकिन वास्तविक परिवर्तन केवल नारे लगाने, विरोध करने या दूसरों की ग़लतियाँ गिनाने से नहीं आता। धरती पर बदलाव लाने से पहले अपने भीतर बदलाव लाना पड़ता है। सोच सही हो, चरित्र मज़बूत हो, उद्देश्य स्पष्ट हो और मेहनत लगातार जारी रहे—तभी युवा परिवर्तन का वास्तविक वाहक बन सकता है।

हदीस

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया : “पाँच चीज़ों को पाँच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो: अपनी जवानी को बुढ़ापे से पहले, अपनी सेहत को बीमारी से पहले, अपनी ख़ुशहाली को ग़रीबी से पहले, अपने ख़ाली समय को व्यस्तता से पहले और अपनी ज़िंदगी को मौत से पहले।” (हदीस : बैहक़ी)

यह हदीस युवाओं को यह एहसास दिलाती है कि जवानी केवल उम्र का एक दौर नहीं, बल्कि ईश्वर की दी हुई एक अनमोल पूँजी है। इसलिए इस दौर को केवल मनोरंजन, दिखावे और समय की बर्बादी में गुज़ार देना अपने सबसे मूल्यवान अवसर को खो देना है। जो युवा अपनी जवानी की क़द्र करता है, अपने समय को पहचानता है और अपनी क्षमता को किसी अच्छे उद्देश्य में लगाता है, वही अपने भविष्य को नई दिशा दे सकता है।

दूसरी हदीस में–नबी (सल्ल०) ने उन सात लोगों का उल्लेख किया जिन्हें क़यामत के दिन ईश्वर अपने अर्श की छाया प्रदान करेगा। उनमें एक वह “नौजवान है जो ईश्वर की इबादत में पला-बढ़ा हो।” (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

इस हदीस में युवाओं के लिए सम्मान और उम्मीद दोनों हैं। हदीस यह बताती है कि जवानी केवल इच्छाओं और सपनों का नाम नहीं; यह अपने आपको सँवारने, अपने चरित्र को ऊँचा करने और अपने जीवन को किसी महान उद्देश्य से जोड़ने का समय है। आज की युवा पीढ़ी के हाथ में तकनीक, ज्ञान और सोशल मीडिया की बड़ी शक्ति है। वह चाहे तो अपना समय खो सकती है और चाहे तो इसी शक्ति से ज्ञान, अच्छाई और सकारात्मक विचारों को हज़ारों लोगों तक पहुँचा सकती है। ऐ नौजवानों ! आज का तुम्हारा एक सही फ़ैसला, कल के बड़े बदलाव की शुरुआत बन सकता है। ■■

चिंतन

सिमटती दुनिया और इस्लाम की बढ़ती प्रासंगिकता

❖एफ़. ए. मुजीब

दुनिया कभी इतनी तेज़ नहीं थी, जितनी आज है। जो काम कभी महीनों में पूरे होते थे, अब मिनटों बल्कि सेकंडों में हो जाते हैं। हज़ारों किलोमीटर दूर बैठा व्यक्ति कुछ ही क्षणों में हमारे सामने आ जाता है, आवाज़ें सीमाओं को पार कर जाती हैं, विचार एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक पहुँच जाते हैं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने समय और श्रम के पारंपरिक पैमानों को ही बदल दिया है। हवाई यात्रा, इंटरनेट, स्मार्टफोन और आधुनिक संचार माध्यमों ने दूरियों को इस हद तक समेट दिया है कि दुनिया वास्तव में एक वैश्विक गाँव बनती दिखाई दे रही है। लेकिन इस तेज़ी के बीच एक दिलचस्प विरोधाभास भी हमारे सामने है: मनुष्य एक-दूसरे के बेहद क़रीब आ गए हैं, लेकिन मानवता अब भी एक-दूसरे से दूर है। आज किसी देश में छिड़ा युद्ध हज़ारों किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति के मोबाइल की स्क्रीन पर सीधे देखा जा सकता है और उसके प्रभाव वैश्विक अर्थव्यवस्था तक पहुँच सकते हैं। एक महामारी कुछ ही दिनों में महाद्वीपों को अपनी चपेट में ले सकती है, किसी एक देश की आर्थिक अनिश्चितता दूसरे देश के बाज़ारों को प्रभावित कर सकती है, जबकि पिघलते ग्लेशियर और बदलता मौसम यह बता रहे हैं कि पृथ्वी की कोई समस्या अब केवल किसी एक क्षेत्र की समस्या नहीं रह गई है। मनुष्य का भाग्य पहले से कहीं अधिक साझा हो चुका है।

ऐसी दुनिया में असली सवाल यह नहीं है कि मनुष्य एक-दूसरे से कैसे जुड़े, बल्कि यह है कि इतने क़रीब आ जाने के बाद वे एक-दूसरे के साथ किस सिद्धांत के आधार पर जीवन व्यतीत करें। यही वह बिंदु है जहाँ इस्लाम की प्रासंगिकता एक नए दृष्टिकोण से सामने आती है। इस्लाम की मूल शिक्षा ही सार्वभौमिकता पर आधारित है। क़ुरआन केवल किसी एक जाति, समुदाय, भाषा या क्षेत्र को संबोधित नहीं करता, बल्कि "ऐ इंसानो" कहकर पूरे मानव समाज को संबोधित करता है। विभिन्न जातियों और समुदायों के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए वह उनके उद्देश्य को केवल एक-दूसरे को पहचानना बताता है। अर्थात् मानवीय विविधता स्वाभाविक है, लेकिन इस विविधता को घृणा, अपमान या आपसी दुश्मनी का आधार नहीं बनाया जा सकता। आज की वैश्वीकृत दुनिया में यह विचार असाधारण महत्त्व रखता है, क्योंकि मनुष्य अब केवल अपने शहर या देश का नागरिक नहीं रहा; वह ऐसे वैश्विक समाज का हिस्सा बन चुका है, जहाँ उसके निर्णय दूसरों को भी प्रभावित करते हैं।

मनुष्य का मूल्य उसके रंग, नस्ल, भाषा, धन या राष्ट्र से नहीं, बल्कि उसके चरित्र से निर्धारित होता है। अरब और ग़ैर-अरब, पूर्व और पश्चिम, अमीर और ग़रीब—सभी अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान के साथ रह सकते हैं, लेकिन मूल मानवीय गरिमा सभी के लिए समान है। यही विचार ऐसे वैश्विक समाज की नींव बन सकता है, जहाँ विविधता विभाजन का नहीं, बल्कि परिचय और पारस्परिक सम्मान का माध्यम बने।

यात्रा, व्यापार, शिक्षा, रोज़गार, मीडिया और डिजिटल संचार ने मनुष्य को एक-दूसरे का पड़ोसी बना दिया है। लेकिन पड़ोसी बन जाने से ज़िम्मेदारी की भावना अपने आप पैदा नहीं होती। इसके लिए एक नैतिक आधार आवश्यक है। इस्लाम इसी आधार की ओर ध्यान आकर्षित करता है। उसके अनुसार मनुष्य का मूल्य उसके रंग, नस्ल, भाषा, धन या राष्ट्र से नहीं, बल्कि उसके चरित्र से निर्धारित होता है। अरब और ग़ैर-अरब, पूर्व और पश्चिम, अमीर और ग़रीब—सभी अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान के साथ रह सकते हैं, लेकिन मूल मानवीय गरिमा सभी के लिए समान है। यही विचार ऐसे वैश्विक समाज की नींव बन सकता है, जहाँ

विविधता विभाजन का नहीं, बल्कि परिचय और पारस्परिक सम्मान का माध्यम बने।

तकनीक ने संपर्क की संभावनाओं को लगभग असीमित कर दिया है, लेकिन उसने एक नई समस्या भी पैदा की है। सोशल मीडिया पर प्रेम, ज्ञान और मित्रता जिस गति से फैलते हैं, उसी गति से घृणा, पूर्वाग्रह, झूठ और उत्तेजना भी फैल सकती है। समस्या तकनीक की नहीं, बल्कि उस मानसिकता और चरित्र की है जो उसका उपयोग करता है। इसलिए भविष्य की दुनिया को केवल अधिक शक्तिशाली तकनीक की नहीं, बल्कि अधिक मज़बूत नैतिक चेतना की आवश्यकता होगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव क्षमताओं का असाधारण विस्तार कर सकती है, लेकिन वह यह नैतिक निर्णय नहीं सिखा सकती कि इस शक्ति का उपयोग कल्याण के लिए करना है या विनाश के लिए। ज्ञान और शक्ति की गति जितनी बढ़ेगी, नैतिकता और ज़िम्मेदारी की आवश्यकता भी उतनी ही बढ़ती जाएगी। इस्लाम इसी संतुलन पर बल देता है। वह मनुष्य को केवल उसके अधिकार नहीं बताता, बल्कि उसकी ज़िम्मेदारियों की भी याद दिलाता है। आधुनिक दुनिया अधिकारों की भाषा को अच्छी तरह समझती है, लेकिन ज़िम्मेदारी की भाषा कहीं अधिक कमज़ोर होती जा रही है। हर व्यक्ति अपने अधिकार की माँग करता है, लेकिन दूसरे के अधिकार के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार करने के लिए हमेशा तैयार नहीं होता। इस्लाम अधिकार के साथ कर्तव्य, स्वतंत्रता के साथ ज़िम्मेदारी, शक्ति के साथ न्याय और संपत्ति के साथ सामाजिक कल्याण को जोड़ता है। यही संतुलन ऐसे वैश्विक समाज के लिए आवश्यक है, जहाँ एक व्यक्ति का कार्य कई बार हज़ारों या लाखों लोगों को प्रभावित कर सकता है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था इसका स्पष्ट उदाहरण है। दुनिया के बाज़ार एक-दूसरे से जुड़ चुके हैं, लेकिन धन और अवसरों का असमान वितरण अब भी एक बड़ी समस्या है। इस्लाम धन कमाने और उसे रखने की अनुमति देता है, लेकिन उसे सामाजिक ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं करता। ज़कात, दान, अनाथों और ज़रूरतमंदों के अधिकार, नाप-तौल में न्याय तथा आर्थिक शोषण से बचने की शिक्षा इस विचार को स्पष्ट करती है कि अर्थव्यवस्था केवल लाभ कमाने का खेल नहीं, बल्कि मानव जीवन का एक नैतिक क्षेत्र भी है।

युद्ध और पर्यावरण से जुड़े प्रश्न भी इसी साझा ज़िम्मेदारी की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। आज एक देश में होने वाले युद्ध के प्रभाव हज़ारों किलोमीटर दूर की अर्थव्यवस्था और मानव जीवन को प्रभावित कर सकते हैं, जबकि पर्यावरणीय परिवर्तन यह सिद्ध कर रहे हैं कि पृथ्वी और उसके संसाधन किसी एक राष्ट्र की संपत्ति नहीं हैं। दुनिया जितनी अधिक परस्पर जुड़ती जाएगी, मनुष्य के लिए अपने निजी हित से आगे बढ़कर सामूहिक कल्याण के बारे में सोचना उतना ही आवश्यक होगा। इस्लाम की सार्वभौमिकता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वह एकता को एकरूपता नहीं बनाता। अलग-अलग भाषाएँ,, वेशभूषाएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ अपनी जगह क़ायम रह सकती हैं। इस्लाम मनुष्य से यह अपेक्षा नहीं करता कि वह अपनी सभी ज़ाहिरी पहचानों को मिटाकर एक जैसा बन जाए; वह इससे अधिक बुनियादी बात कहता है कि मतभेदों के बावजूद मानवीय गरिमा, न्याय और पारस्परिक सम्मान क़ायम रहना चाहिए। यही सिद्धांत वास्तविक वैश्विक समाज का निर्माण कर सकता है।

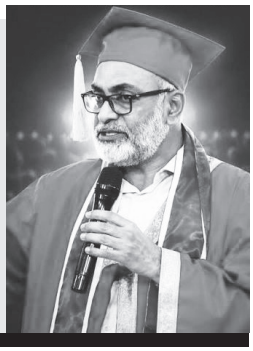
हमने दूरियाँ कम कर दी हैं, लेकिन दिलों की दूरियाँ अब भी बनी हुई हैं। हमने आवाज़ों को एक-दूसरे तक पहुँचा दिया है, लेकिन एक-दूसरे के दर्द को समझने की चेतना अभी भी आवश्यक है। हमने दुनिया को Global Village बना दिया है, लेकिन उसे ऐसा मानवीय समुदाय बनाना अभी बाक़ी है, जिसमें निकटता के साथ ज़िम्मेदारी भी हो। इसलिए इस्लाम की प्रासंगिकता को केवल अतीत की एक धार्मिक अवधारणा के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। उसे भविष्य की दुनिया के संदर्भ में भी समझने की आवश्यकता है। ऐसी दुनिया में, जहाँ सीमाएँ तेज़ी से कम महत्त्वपूर्ण होती जा रही हैं, मनुष्य को ऐसे सिद्धांतों की आवश्यकता है जो सीमाओं से ऊपर हों; जो मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखें, विकास को नैतिकता से, स्वतंत्रता को ज़िम्मेदारी से, शक्ति को न्याय से और संपत्ति को सामूहिक कल्याण से जोड़ें।

दुनिया और अधिक सिमटेगी, तकनीक और अधिक तेज़ होगी और मनुष्य एक-दूसरे पर और अधिक निर्भर होता जाएगा। लेकिन वास्तविक सफलता यह नहीं होगी कि मनुष्य एक-दूसरे तक कितनी तेज़ी से पहुँच सकता है; वास्तविक सफलता यह होगी कि इतनी निकटता के बावजूद वह एक-दूसरे के साथ कितने न्याय, सम्मान और करुणा के साथ रह सकता है। तकनीक हमें क़रीब ला सकती है, वैश्वीकरण हमें एक-दूसरे पर निर्भर बना सकता है, लेकिन मानवता को वास्तविक अर्थों में क़रीब लाने के लिए नैतिक चेतना आवश्यक है। और यही वह बिंदु है जहाँ इस्लाम का सार्वभौमिक संदेश—एक ईश्वर, एक मानव परिवार और एक साझा नैतिक ज़िम्मेदारी—सिमटती हुई इस दुनिया में केवल एक धार्मिक विचार नहीं रह जाता, बल्कि बढ़ती हुई वैश्विक आवश्यकता का रूप ले लेता है। ■■

विचार बोध

सफल जीवन का K.I.S.S. फ़ार्मूला

हाल ही में शाहीन डिग्री कॉलेज के दीक्षांत समारोह में जमाअत इस्लामी हिन्द के उपाध्यक्ष एस. अमीनुल हसन द्वारा साझा किए गए K.I.S.S. (Knowledge, Interests/Hobbies, Skills, Spirituality) फ़ार्मूले के आधार पर जीवन के चार प्रमुख स्तंभों का विश्लेषण करता यह लेख।



❖संपादन प्रभाग

आज के प्रतिस्पर्धी युग में, शिक्षा और करियर को लेकर युवा पीढ़ी अक्सर एक चौराहे पर खड़ी होती है। डिग्री तो हर किसी के हाथ में है, लेकिन क्या वह हमें 'सफल' और 'सार्थक' जीवन जीने के लिए तैयार करती है? हाल ही में शाहीन डिग्री कॉलेज के दीक्षांत समारोह में जमाअत इस्लामी हिन्द के उपाध्यक्ष एस. अमीनुल हसन द्वारा साझा किया गया K.I.S.S. (Knowledge, Interests/Hobbies, Skills, Spirituality) फ़ार्मूला इस प्रश्न का एक आधुनिक और दार्शनिक उत्तर देता है। यह लेख इसी फ़ार्मूले के आधार पर जीवन के चार स्तंभों का विश्लेषण करता है।

1. नोलेज (Knowledge) : जानकारी से ज्ञान की यात्रा : अक्सर हम 'सूचना' (Information) को ही 'ज्ञान' समझ लेते हैं। अमीनुल हसन के अनुसार, डिग्री केवल एक आधार है, असली ज्ञान तो इसके बाद शुरू होता है। आज के डिजिटल युग में, हमारे पास 'फ़ियर ऑफ मिसिंग आउट' (FOMO) के कारण ढेर सारी जानकारी तो है, लेकिन किसी एक विषय पर गहराई की कमी है। सच्चा ज्ञान 'टी-शेप्ड' (T-Shaped) होना चाहिए—अर्थात, आपको हर चीज़ के बारे में कुछ न कुछ पता हो, लेकिन किसी एक विशेष क्षेत्र में आपकी पकड़ इतनी गहरी हो कि आप उसके विशेषज्ञ बन सकें।

ज्ञान और सूचना के बीच के अंतर को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज के डिजिटल युग में हमें चारों ओर से जानकारी की बाढ़ का सामना करना पड़ता है। सूचना मुख्य रूप से 'कच्चे तथ्यों' (raw facts), डेटा या किसी संदेश का एक संग्रह है। यह हमें किसी विषय या वस्तु के बारे में जानकारी तो देती है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि वह हमारे व्यवहार या समझ में गहराई लाए। उदाहरण के लिए, इंटरनेट पर किसी घटना के बारे में पढ़ना सूचना है।

ज्ञान सूचना का ही एक विकसित और परिष्कृत रूप है। जब हम सूचना को अपने अनुभव, तर्क, समझ और सूझ-बूझ के साथ जोड़ते हैं, तब वह 'ज्ञान' बनता है। ज्ञान का अर्थ केवल जानकारी होना नहीं, बल्कि यह समझना है कि उस जानकारी का उपयोग कैसे और कब करना है। संक्षेप में कहें तो सूचना बाहरी होती है, जबकि ज्ञान आंतरिक होता है। सूचना को आसानी से साझा किया जा सकता है, लेकिन ज्ञान को आत्मसात करने में समय और अनुभव की आवश्यकता होती है। सूचना केवल 'क्या' (What) का उत्तर देती है, जबकि ज्ञान 'क्यों' (Why) और 'कैसे' (How) का उत्तर देता है।

जैसा कि एस. अमीनुल हसन ने भी अपने भाषण में उल्लेख किया है, सूचनाओं का होना ही काफ़ी नहीं है; असली कौशल तब आता है जब आप उस सूचना को गहराई से समझते हैं और उसे व्यावहारिक जीवन में लागू करने की योग्यता (Wisdom) विकसित करते हैं।

2. इंटरेस्ट और हॉबीज (Interests/Hobbies): जीवन में प्राण फूंकना : केवल काम करना इंसान को मशीन बना देता है। हॉबीज केवल समय बिताने का साधन नहीं, बल्कि हमारे व्यक्तित्व का विस्तार हैं। वे हमें तनाव से

बचाती हैं और रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं। जब आप अपनी रुचि के किसी काम (जैसे-चित्रकारी, भ्रमण, साहित्य या खेल) में समय बिताते हैं, तो आप न केवल ख़ुद को तरोताज़ा करते हैं, बल्कि दुनिया को देखने का एक नया नज़रिया भी विकसित करते हैं। यह वही पैशन है जो इंटरव्यू के दौरान आपकी डिग्री से ज़्यादा आपके व्यक्तित्व को प्रभावी बनाता है।

3. स्किल्स (Skills) : व्यवहारिकता का अस्त्र : डिग्री तो योग्यता का प्रमाण है, लेकिन बाज़ार में टिकने के लिए 'कौशल' या स्किल्स की आवश्यकता होती है। आज के दौर में पब्लिक स्पीकिंग, राइटिंग स्किल्स, डिजिटल साक्षरता और कम्युनिकेशन जैसे कौशल किसी भी व्यक्ति की वैल्यू को कई गुना बढ़ा देते हैं। अमीनुल हसन का मानना है कि केवल अकादमिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है; आपको वह सीखना होगा जो समाज और उद्योग की मांग है।

4. स्पिरिचुअलिटी (Spirituality) : अध्यात्म आत्मा की मज़बूती : अंत में, और सबसे अहम अध्यात्म या रूहानियत है । भौतिक सफलताएं (पैसा, शोहरत, पद) क्षणभंगुर हो सकती हैं। यदि इंसान के भीतर नैतिकता, दया, ईमानदारी और ईश्वर से जुड़ाव नहीं है, तो डिग्री और धन का कोई अर्थ नहीं। सच्ची रूहानियत हमें अनुशासित रखती है, दूसरों के प्रति सहानुभूति सिखाती है और कठिन समय में मानसिक मज़बूती प्रदान करती है। यह वह शक्ति है जो इंसान को पशुवत व्यवहार से बचाकर एक 'बेहतर इंसान' बनाती है।

सफलता कोई गंतव्य नहीं, बल्कि एक सतत यात्रा है। यदि हम अपने ज्ञान को गहरा करें, हॉबीज के माध्यम से अपने पैशन को जीवित रखें, स्किल्स से ख़ुद को सक्षम बनाएं और आध्यात्मिकता से अपनी अंतरात्मा को शुद्ध रखें, तो हम न केवल एक अच्छा करियर बनाएंगे, बल्कि एक अच्छी विरासत भी छोड़ेंगे।

अध्यात्म और आर्थिक जीवन

अध्यात्म को करियर के साथ जोड़ने का अर्थ काम को केवल एक आजीविका न मानकर, उसे जीवन के एक उच्च उद्देश्य से जोड़ना है। अपने संबोधन में एस.अमीनुल हसन ने स्पष्ट किया है कि रूहानियत (आध्यात्मिकता) ही वह शक्ति है जो इंसान को भौतिक सफलता के पीछे भागते हुए भी मानवीय मूल्यों से जोड़े रखती है। आर्थिक जीवन में अध्यात्म को शामिल करने के कुछ व्यावहारिक तरीक़े हैं :

ईमानदारी और नैतिकता : अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण पारदर्शिता और सत्यनिष्ठा बनाए रखें, डिग्रियां तो क्षमता देती हैं, लेकिन अमानतदारी और नैतिक आचरण ही असल रूहानियत है।

सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार : सहकर्मियों और ग्राहकों के साथ विनम्रता, दया और क्षमा भाव से पेश आना। अपनी बातों में नरमी और दूसरों की मदद करने का भाव रखना ही एक स्पिरिचुअल व्यक्तित्व की पहचान है।

संतुलन और आत्म-चिंतन : नियमित प्रार्थना, ध्यान, क़ुरआन तथा एनी ग्रंथों के स्वाध्याय को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना ताकि बाहरी भागदौड़ के बीच मन शांत रहे।

सेवा भाव : करियर के माध्यम से समाज को क्या वापस दिया जा सकता है, इस पर ध्यान केंद्रित करना। जब आप दूसरों की सेवा को अपना लक्ष्य बना लेते हैं, तो कार्य तनावपूर्ण नहीं, बल्कि संतोषजनक हो जाता है।

याद रखें, रूहानियत का मतलब करियर छोड़कर वैराग्य लेना नहीं है, बल्कि करियर को 'ईश्वर की इबादत' के रूप में स्वीकार करना है।

वस्तुतः सफलता कोई गंतव्य नहीं, बल्कि एक सतत यात्रा है। यदि हम अपने ज्ञान को गहरा करें, हॉबीज के माध्यम से अपने पैशन को जीवित रखें, स्किल्स से ख़ुद को सक्षम बनाएं और आध्यात्मिकता से अपनी अंतरात्मा को शुद्ध रखें, तो हम न केवल एक अच्छा करियर बनाएंगे, बल्कि एक अच्छी विरासत भी छोड़ेंगे। ज्ञान की गहराई, रुचियों का आनंद, कौशल की निपुणता और आध्यात्मिकता की शुद्धता ही वह आधार है जिस पर एक अर्थपूर्ण भविष्य का निर्माण होता है। आज ज़रूरत इस बात की है कि हम एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उभरें जो समाज में सकारात्मक बदलाव ला सके। अपने भीतर सच्ची इंसानियत को जीवित रखें, क्योंकि अंततः आपकी पहचान आपके मानवीय मूल्यों और चरित्र से ही तय होगी। ■■

जेन ज़ी एवं जेन अल्फ़ा

नई पीढ़ी, नई तकनीक और भविष्य की राजनीति

❖सय्यद ख़ुर्रम रज़ा

आज दुनिया भर में जब युवाओं, तकनीक, सोशल मीडिया और राजनीतिक बदलाव की बात होती है, तो सबसे पहले जेनरेशन ज़ेड का ज़िक्र आता है। यह वह पीढ़ी है जिसने विरोध प्रदर्शन के पारंपरिक तरीक़ों के साथ-साथ मोबाइल फ़ोन, सोशल मीडिया, वीडियो और रील्स को भी अपनी आवाज़ का माध्यम बनाया। इस पीढ़ी ने यह साबित किया कि राजनीतिक और सामाजिक बदलाव के लिए केवल बड़ी उम्र, अनुभव या ताक़त ही ज़रूरी नहीं, बल्कि एक सक्रिय और जागरुक युवा पीढ़ी भी पूरे सिस्टम का ध्यान अपनी ओर खींच सकती है।

लेकिन जेनरेशन ज़ेड के बाद अब एक और पीढ़ी सामने आ रही है, जिसे आम तौर पर जेनरेशन अल्फ़ा कहा जाता है। इस पीढ़ी के जन्म की समय-सीमा विशेषज्ञों के अनुसार कुछ अलग-अलग बताई जाती है, लेकिन सामान्य तौर पर 2010 के बाद पैदा हुए बच्चों को इस पीढ़ी में शामिल किया जाता है। यानी जेनरेशन अल्फ़ा भी अभी बड़े पैमाने पर स्कूल जाने, शिक्षा प्राप्त करने और अपनी पहचान बनाने के दौर में है।

जिस तेज़ी से तकनीक बदल रही है, उससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि आने वाले वर्षों में यह पीढ़ी केवल जेनरेशन ज़ेड की जगह लेने वाली नहीं होगी, बल्कि तकनीक के साथ इसका संबंध कहीं अधिक गहरा होगा। यहां एक दिलचस्प सवाल पैदा होता है: अगर जेनरेशन ज़ेड ने तकनीक को अपने हाथ में लेकर दुनिया को हैरान किया है, तो जेनरेशन अल्फ़ा क्या करेगी? आज हम इसी सवाल पर चर्चा करेंगे।

हर दौर में सामाजिक बदलाव के पीछे युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। युवाओं में एक ख़ास बात होती है-वे सवाल करने से डरते नहीं हैं। उन्हें इस बात की चिंता कम होती है कि लोग क्या कहेंगे, सरकार क्या करेगी या समाज उन्हें किस नज़र से देखेगा। यही बेख़ौफ़ी कई बार बदलाव की बुनियाद बनती है।

जेनरेशन ज़ेड में भी यही विशेषता दिखाई देती है। यह पीढ़ी अपने अधिकारों को लेकर अधिक संवेदनशील है, सवाल पूछती है, विरोध करती है और अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए तकनीक का इस्तेमाल करती है। स्कूलों, विश्वविद्यालयों, सरकारों और अलग-अलग संस्थाओं के ख़िलाफ़ होने वाले कई प्रदर्शनों में युवाओं की भागीदारी ने यह साबित किया है कि आज की युवा पीढ़ी केवल तमाशाई बनकर रहने वाली नहीं है।

हर दौर में सामाजिक बदलाव के पीछे युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। युवाओं में एक ख़ास बात होती है-वे सवाल करने से डरते नहीं हैं। उन्हें इस बात की चिंता कम होती है कि लोग क्या कहेंगे, सरकार क्या करेगी या समाज उन्हें किस नज़र से देखेगा। यही बेख़ौफ़ी कई बार बदलाव की बुनियाद बनती है।

लेकिन जेनरेशन अल्फ़ा के मामले में स्थिति इससे भी भिन्न हो सकती है। जेनरेशन ज़ेड ने तकनीक को आते हुए देखा है। उसने मोबाइल फ़ोन, सोशल मीडिया, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और फिर रील्स के दौर को अपनी आंखों के सामने विकसित होते देखा है। जबकि जेनरेशन अल्फ़ा ने आंख ही ऐसे माहौल में खोली है, जहां आज स्मार्टफोन, तेज़ इंटरनेट, वीडियो प्लेटफॉर्म, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल दुनिया पहले से मौजूद है।

इस अंतर को मामूली नहीं समझना चाहिए। जेनरेशन ज़ेड ने तकनीक को सीखा है, जबकि जेनरेशन अल्फ़ा के लिए

तकनीक जीवन का एक हिस्सा है। आज एक छोटा बच्चा मोबाइल फ़ोन हाथ में लेता है तो उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं होती कि स्क्रीन कैसे खोलनी है, वीडियो कैसे चलाना है या अपनी पसंद की चीज़ कैसे सर्च करनी है। तकनीक के मामले में बच्चे भी माता-पिता के भी गुरु बन रहे हैं।

इसका परिणाम यह हो रहा है कि परिवार के भीतर निर्णय लेने के तरीक़े भी बदल रहे हैं। माता-पिता अपनी संतान की राय पर अधिक निर्भर होने लगे हैं, क्योंकि बच्चे इस डिजिटल दुनिया को उनसे कहीं अधिक तेज़ी से समझ रहे हैं।

लेकिन यही स्थिति जेनरेशन ज़ेड और जेनरेशन अल्फ़ा के बीच एक नई तरह की प्रतिस्पर्धा को भी जन्म दे सकती है। जेनरेशन ज़ेड के पास यह गर्व होगा कि उसने सोशल मीडिया के शुरुआती दौर को देखा है, रील्स को लोकप्रिय बनाया है, डिजिटल विरोध-प्रदर्शन को ताक़त दी है और अपने तरीक़े से तकनीक का इस्तेमाल करना सीखा है। उन्हें लग सकता है कि वे तकनीक के मास्टर हैं।

लेकिन क्या जेनरेशन अल्फ़ा इसे स्वीकार करेगी? शायद नहीं। वह कहेगी कि आपने मोबाइल और रील्स देखी हैं, हमने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोट और उससे आगे की दुनिया को देखा है। जेनरेशन अल्फ़ा ने जो कल्पना की है, उसे होते हुए देखा है। यहीं से पीढ़ियों के बीच एक दिलचस्प मुक़ाबला शुरू हो सकता है।

जेनरेशन ज़ेड कहेगी कि हमने सबसे पहले आवाज़ उठाई थी, हमने सड़कों पर विरोध किया था, हमने सरकारों को सवालों के घेरे में खड़ा किया था। जेनरेशन अल्फ़ा जवाब दे सकती है कि आपने जो कुछ किया, वह अपने समय की तकनीक के साथ किया। हम उससे कहीं आगे की दुनिया में पैदा हुए हैं। शायद यही आने वाले समय का सबसे दिलचस्प पीढ़ीगत टकराव होगा। लेकिन इस मुक़ाबले का एक दूसरा पहलू भी है और वह है राजनीति। इतिहास हमें बताता है कि राजनीतिक दलों और नेताओं ने अपने हितों के लिए युवा शक्ति का इस्तेमाल किया है। युवा अगर संगठित, सक्रिय और बड़ी संख्या में सड़कों पर उतर आएं तो वे सरकारों पर दबाव डाल सकते हैं।

लेकिन अगर यही युवा अपनी शक्ति के राजनीतिक इस्तेमाल को समझने में नाकाम रहे, तो उन्हें किसी और के एजेंडे के लिए इस्तेमाल करना भी आसान हो जाता है। जेनरेशन ज़ेड और जेनरेशन अल्फ़ा, दोनों के सामने यही सबसे बड़ी चुनौती होगी।

अगर ये दोनों पीढ़ियां केवल एक-दूसरे को हराने, अपनी श्रेष्ठता साबित करने या सोशल मीडिया पर अधिक लोकप्रिय होने की लड़ाई लड़ती रहीं तो फ़ायदा किसी तीसरे को होगा। राजनीतिक नेता उन्हें एक-दूसरे के ख़िलाफ़ खड़ा करके अपनी राजनीति मज़बूत कर सकते हैं, यानी अपनी राजनीतिक रोटियां सेंक सकते हैं। एक पीढ़ी को दूसरी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया जा सकता है, युवाओं की भावनाओं को राजनीतिक नारों में बदला जा सकता है और फिर जब उद्देश्य पूरा हो जाए तो वही युवा दोबारा अपनी समस्याओं के साथ अकेले खड़े रह जाएं।

> **“इसलिए जेनरेशन ज़ेड और जेनरेशन अल्फ़ा के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ केवल तकनीक का इस्तेमाल सीखना नहीं, बल्कि तकनीक को समझना है-यह समझना कि तकनीक का सही इस्तेमाल क्या हो सकता है और कैसे हो सकता है। उन्हें यह समझना होगा कि मोबाइल की स्क्रीन पर जो कुछ दिखाई देता है, ज़रूरी नहीं कि वह सच भी हो।”**

इसलिए सवाल यह नहीं है कि जेनरेशन ज़ेड अधिक ताक़तवर है या जेनरेशन अल्फ़ा। असली सवाल यह है कि क्या दोनों पीढ़ियां अपनी ताक़त को समझती हैं? क्योंकि केवल सरकार बदल देना ही बदलाव नहीं है। किसी विरोध-प्रदर्शन में सफल होना भी पूरी सफलता नहीं है। असली सफलता तब है जब युवा अपने विरोध के बाद यह भी जानते हों कि वे किस तरह का समाज चाहते हैं, शिक्षा व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, रोज़गार के अवसर कैसे पैदा हों, तकनीक का इस्तेमाल किसके हित में हो और सरकार जनता के प्रति

किस तरह जवाबदेह हो।

यही वह जगह है जहां दूरदर्शिता की ज़रूरत है। भारत जैसे देश में इस चर्चा का एक महत्वपूर्ण पहलू धर्म और सामाजिक भावनाएं भी हैं। भारत संवैधानिक रूप से एक धर्मनिरपेक्ष देश है, लेकिन धर्म जनता और सामाजिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए आने वाले समय में तकनीक, युवाओं और धार्मिक भावनाओं का संबंध बहुत महत्वपूर्ण हो जाएगा।

आजकल का रुझान, ख़ासकर हमारे देश में, धर्म की ओर अधिक है। सोशल मीडिया पर धार्मिक भावनाओं को कुछ ही सेकंड में लाखों लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। एक वीडियो, एक तस्वीर या एक छोटा-सा संदेश लोगों की भावनाओं को प्रभावित कर सकता है। यही तकनीक सकारात्मक काम के लिए भी इस्तेमाल हो सकती है और सामाजिक विभाजन के लिए भी।

इसलिए जेनरेशन ज़ेड और जेनरेशन अल्फ़ा के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ केवल तकनीक का इस्तेमाल सीखना नहीं, बल्कि तकनीक को समझना है-यह समझना कि तकनीक का सही इस्तेमाल क्या हो सकता है और कैसे हो सकता है। उन्हें यह समझना होगा कि मोबाइल की स्क्रीन पर जो कुछ दिखाई देता है, ज़रूरी नहीं कि वह सच भी हो।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में फ़र्ज़ी वीडियो, फ़र्ज़ी आवाज़ें, बदली हुई तस्वीरें और भ्रामक सूचनाएं पहले से कहीं अधिक ख़तरनाक हो सकती हैं। और फिर एक बड़ा सवाल यह भी है कि इस पूरी तकनीक का मालिक कौन है?

हम रोज़ ऐसी तकनीक का इस्तेमाल करते हैं जिसे पश्चिम की बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विकसित किया है। हमारे डेटा से लेकर हमारी पसंद, हमारी आदतों, हमारी खोज और हमारी ऑनलाइन गतिविधियों तक बहुत कुछ सिस्टम में सुरक्षित रहता है। तो क्या हम तकनीक का इस्तेमाल करने वाले हैं या धीरे-धीरे तकनीक के उपयोगकर्ताओं से अधिक उसके अधीन होते जा रहे हैं?

यह सवाल किसी एक देश या एक पीढ़ी का नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया का सवाल है। जेनरेशन अल्फ़ा के सामने शायद सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि तकनीक को अपनी स्वतंत्रता का माध्यम बनाएं या तकनीक उन्हें ऐसे सिस्टम का हिस्सा बना दे, जिसके फ़ैसले कोई और करे। यानी हमारे फ़ैसलों पर पश्चिम की छाप दिखाई दे।

रोबोट आएंगे, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अधिक शक्तिशाली होगी। संभव है कि आज इनसान जो बहुत से काम करते हैं, कल मशीनें उन्हें करने लगें। लेकिन इस विकास के बीच युवाओं का क्या स्थान होगा? राजनीति कैसे बदलेगी? शिक्षा किस तरह बदलेगी?

जेनरेशन ज़ेड ने दरवाज़ा खोल दिया है। जेनरेशन अल्फ़ा उस दरवाज़े से गुज़रकर ऐसी दुनिया में प्रवेश करेगी, जिसका पूरा अंदाज़ा आज हम नहीं लगा सकते।

इसलिए जेनरेशन ज़ेड और जेनरेशन अल्फ़ा, इन दोनों पीढ़ियों के बीच संवाद ज़रूरी है। एक पीढ़ी के पास अनुभव है, दूसरी के पास भविष्य की रफ़्तार। एक ने तकनीक को बदलते हुए देखा है, दूसरी तकनीक के बीच पैदा हुई है। अगर दोनों एक-दूसरे से सीखें, तो यह प्रतिस्पर्धा विकास में बदल सकती है। लेकिन अस्ल सवाल यह है कि क्या युवा अपनी ताक़त को पहचानकर अपने भविष्य के फ़ैसले खुद करेंगे या कोई और उनकी भावनाओं, उनकी तकनीक और उनकी ताक़त का इस्तेमाल अपने हितों के लिए करेगा? ■■

(लेखक क़ौमी आवाज़ के डिजिटल एडिटर हैं)

जेनरेशन ज़ेड ने दरवाज़ा खोल दिया है। जेनरेशन अल्फ़ा उस दरवाज़े से गुज़रकर ऐसी दुनिया में प्रवेश करेगी, जिसका पूरा अंदाज़ा आज हम नहीं लगा सकते।इसलिए जेनरेशन ज़ेड और जेनरेशन अल्फ़ा, इन दोनों पीढ़ियों के बीच संवाद ज़रूरी है। एक पीढ़ी के पास अनुभव है, दूसरी के पास भविष्य की रफ़्तार। एक ने तकनीक को बदलते हुए देखा है, दूसरी तकनीक के बीच पैदा हुई है। अगर दोनों एक-दूसरे से सीखें, तो यह प्रतिस्पर्धा विकास में बदल सकती है।

क़ौम के अहले- सर्वत और
अहले - ख़ैर हज़रात से
ख़ुसूसी अपील

यतीमख़ाना इस्लामिया गया आपके माली ताआवुन का मुंतज़िर है

109 साल की ख़िदमात



तआरुफ़ इदारा की बुनियाद अक्तूबर 1917 में एक उस्ताद और दो यतीम बच्चों से आठ आने (50 पैसे) माहवार किराया की कोठरी में Rs. 30 रुपये की छोटी-सी रक़म से पड़ी थी **तालीमी साल :** अप्रैल ता मार्च **तालीमी मराहिल :** इब्तिदाई, • सानवी, • आला, • शोबा-ए-हिफ़्ज़ व नाज़रा, • इनायत (I.T.I) • पांच जवानों में तालीम • अरबी • उर्दू • फ़ारसी • हिन्दी • अंग्रेज़ी • तादाद ज़ेरे-तालीम तलबा व तालिबात : तक़रीबन 450 **• तादाद कुल यतीम तलबा** 60 • बेरूनी तलबा, जो अपना ख़र्च देकर हॉस्टल में रहते हैं, उसके अलावा हैं। • तादाद तदरीसी व ग़ैर-तदरीसी स्टाफ़ : 28 **सालाना ख़र्च :** चालीस लाख (RS. 40,00,000) रुपये से ज़्यादा। **ज़रिया आमदनी :** मुस्लिम अवाम के चंदे। **ख़र्चे :** यतीम तलबा का सारा ख़र्च (तआम, क़ियाम, रिहाइश वग़ैरा बिल्कुल मुफ़्त [Free]) ये सारा ख़र्च इदारा पूरा करता है। किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। **याद रखें :** (1) यहां का कोई भी मुहस्सिल कमीशन या उजरत पर चंदा वसूल नहीं किया करता है। (2) पांच ज़बानों में क़ुरआन व इस्लामियात के साथ क्लास 1 से मैट्रिक (Matric) तक (जो बिहार बोर्ड से मंज़ूरशुदा है) मेयारी तालीम दी जाती है। • हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक का नज़्म (3) 108 साल से इदारा यतीम और ग़ैर-यतीम तलबा की इस्लामी माहौल में दीनी व असरी तालीम के साथ तालीमी व तरबियती ख़िदमात अंजाम दे रहा है। (4) इदारा ही के अहाते (Campus) में दो हरे-भरे पार्क के साथ शानदार मस्जिद, तालीमगाह, इक़ामतगाह, मतबख़ और दूसरे शोबे वग़ैरा हैं • इसलिए तलबा को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता है। **किफ़ाला स्कीम (Sponsorship)** के तहत एक यतीम तालिब-इल्म का सालाना ख़र्च तीस हज़ार रुपये RS. 30,000 है। आप भी इस कारे-सवाब में शरीक हों। • यहां के तलबा को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनिवर्सिटी में आलिमियत के पहले व दूसरे साल में आसानी से दाख़िला मिल जाता है। (5) यतीमख़ाना से मैट्रिक पास करने वाले यतीम तलबा का दाख़िला यतीमख़ाना के इनायत (I.T.I.) में बिल्कुल मुफ़्त (Free) है। उनसे किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। पहले ही की तरह रहने-सहने और खाने-पीने की सारी सहूलियात दी जाती है। **अपील :** इस माद्दापरस्ताना (Materialistic) और जदीद दौर में दीनी व असरी उलूम के रिहाइशी (Residential) इदारों की पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। • आप आसमान छूती महंगाई में इदारा की भरपूर माली मदद करें। तआवुन की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं जैसे • ज़कात • अतियात • सदकात वग़ैरा और इदारा के बाक़ी तालीमी व तामीरी मन्सूबों के लिए भी रुपये की बहुत ज़रूरत है। इदारा आपसे नन्हे-मुन्ने मासूम यतीम बच्चों को तालीम के साथ-साथ बाहुनर बनाने के लिए और उन्हें ऊंचा उठाने के लिए फ़राख़दिलाना माली तआवुन की अपील करता है।

नोट : इदारा की मुख़्तसर तारीख़ दस्तावेज़ी फ़िल्म (Documentary Film) नज़रे-इनायत (Nazr-e-Enayeth) यू-ट्यूब (You Tube) पर देखें।

चैक व ड्राफ़्ट और कोर बैंकिंग स्लिप पर सिर्फ़ यह लिखें : THE GAYA MUSLIM ORPHANAGAE

बराए राबिता चैक व ड्राफ़्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता
Hon. Secretary, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE,
Cherki-824237, Distt. : Gaya (Bihar) India

Mobile : 9801213022, Whatsapp No. : 7258063440

Beneficiary Name
THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
Bank A/C No.: 300402010010581 (ज़कात/Zakat)
Bank A/C No.: 300402010002982 (डोनेशन/Donation)
Bank IFSC Code No: UBIN0530042
Bank: UNION BANK OF INDIA
(MAIN BRANCH GAYA)

Scan & Pay

याद रखें : बैंक में रक़म ट्रांसफ़र की तफ़्सील बराए-मेहरबानी स्कैन एंड पै पर (Scan & Pay) या किसी ज़रिये से रक़म ट्रांसफ़र के बाद स्क्रीन शॉट (Screen Shot) और नाम व पता ऊपर के व्हाट्सऐप नम्बर पर भेज दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ान (सदर)
9631867066

डॉक्टर जेड. एच. ख़ान
एज़ाज़ी सेक्रेट्री

E-mail : gmocde@yahoo.com.in
Website : www.gmogaya.in

पटना ब्रांच ऑफ़िस : पटना शहर के हमदर्द अपना चैक व ड्राफ़्ट और रक़म देने के लिए इनसे राबिता क़ायम करें।
जनाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ां (सदर) समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9934943229
जनाब इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ां, समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9631867066

जेन ज़ी की सोच : समाज, परिवार और रिश्तों के नए मायने

❖एफ़. ए. मुजीब

दुनिया की हर नई पीढ़ी अपने साथ जीवन को देखने का नया दृष्टिकोण लेकर आती है, लेकिन जेन ज़ी के मामले में बदलाव की गति असाधारण है। यह वह पीढ़ी है जिसने इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया को जीवन के स्वाभाविक हिस्से के रूप में देखा है। उसने दुनिया को केवल घर, मोहल्ले, शहर या देश की सीमाओं में नहीं, बल्कि एक ही स्क्रीन पर विभिन्न समाजों, संस्कृतियों और जीवन-शैलियों के साथ देखा है। इसलिए परिवार, प्रेम, विवाह, स्वतंत्रता, निजता, करियर और जीवन के उद्देश्य को लेकर उसके प्रश्न भी पहले से अलग हैं। जेन ज़ी को केवल स्वार्थी, अवज्ञाकारी या परंपरा-विरोधी कह देना इस पीढ़ी को समझने के बजाय उस पर आसान लेबल लगा देना है।



यह पीढ़ी आर्थिक अनिश्चितता, रोजगार के दबाव, तेज़ तकनीकी बदलाव, सोशल मीडिया और मानसिक तनाव के बीच बड़ी हुई है। Deloitte की 2025 की वैश्विक शोध-रिपोर्ट, जिसमें 44 देशों के 23 हजार से अधिक Gen Z और Millennials शामिल थे, बताती है कि आर्थिक सुरक्षा के साथ जीवन का उद्देश्य, मानसिक और शारीरिक कल्याण तथा काम और निजी जीवन का संतुलन भी नई पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण हैं। इससे स्पष्ट है कि जेन ज़ी केवल स्वतंत्रता नहीं चाहती; वह ऐसा जीवन चाहती है जिसमें अर्थ, सम्मान, संबंध, आत्मनिर्णय और मानसिक शांति मौजूद हो। यहीं इस्लामी चिंतन के साथ एक महत्वपूर्ण संवाद शुरू होता है। इस्लाम मनुष्य को केवल आर्थिक प्राणी या इच्छाओं का समूह नहीं मानता, बल्कि उसे गरिमा, अधिकार और ज़िम्मेदारी रखने वाला अस्तित्व मानता है। मनुष्य को स्वतंत्रता प्राप्त है, लेकिन वह अपनी स्वतंत्रता के परिणामों से मुक्त नहीं है। उसे अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन दूसरे के अधिकारों की अनदेखी करने का अधिकार नहीं। वह अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है, लेकिन परिवार और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियाँ भी हैं।

आधुनिक व्यक्तिवाद ने व्यक्ति को अपनी पहचान, चुनाव और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक किया है। यह सकारात्मक परिवर्तन है। समस्या तब पैदा होती है जब "मेरा जीवन, मेरी मर्ज़ी" का अर्थ दूसरों के अधिकारों और ज़िम्मेदारियों से पूरी तरह मुक्त हो जाना बन जाए। ऐसी स्वतंत्रता अंततः अकेलेपन और दिशाहीनता का कारण बन सकती है। दूसरी ओर कुछ पारंपरिक समाजों में परिवार और सामूहिक व्यवस्था को इतना अधिक महत्व दिया गया कि व्यक्ति की राय, पहचान और मूल अधिकार दब गए। इस्लामी चिंतन इन दोनों अतियों के बीच संतुलन प्रस्तुत करता है। व्यक्ति महत्वपूर्ण है, लेकिन अकेला नहीं; परिवार आवश्यक है, लेकिन परिवार व्यक्ति का स्वामी नहीं; स्वतंत्रता मूल्यवान है, लेकिन ऐसी स्वतंत्रता नहीं जो दूसरे की गरिमा को नष्ट करे। अधिकार हैं तो उनके साथ ज़िम्मेदारियाँ भी हैं।

इस्लामी चिंतन में परिवार केवल एक घर में रहने वाले

लोगों का समूह नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की पहली पाठशाला है। बच्चा परिवार में प्रेम, विश्वास, त्याग, धैर्य, क्षमा, सम्मान और ज़िम्मेदारी सीखता है। इसलिए परिवार मानव सभ्यता और नैतिक व्यक्तित्व के निर्माण की मूल संस्था है। माता-पिता की ज़िम्मेदारी केवल बच्चों को भोजन, वस्त्र और शिक्षा देना नहीं, बल्कि उनके चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करना भी है। इसी तरह संतान का दायित्व केवल माता-पिता की आज्ञा मानना नहीं, बल्कि उनके सम्मान, सेवा और वृद्धावस्था की ज़िम्मेदारी को समझना भी है। पति-पत्नी का संबंध केवल भावनात्मक या आर्थिक साझेदारी नहीं, बल्कि प्रेम, शांति, निष्ठा, पारस्परिक सम्मान और ज़िम्मेदारी पर आधारित गंभीर प्रतिबद्धता है। आज रिश्तों की एक बड़ी समस्या यह है कि लोग अपने अधिकारों के प्रति तो जागरूक हैं, लेकिन अपने कर्तव्यों के प्रति उतने सजग नहीं। जीवनसाथी से समझ और सम्मान की अपेक्षा होती है, लेकिन स्वयं समझने और बदलने की तत्परता कम हो सकती है। माता-पिता से सम्मान की अपेक्षा होती है, लेकिन उनके संघर्ष और त्याग को समझने का समय कम होता है। इस्लामी चिंतन इस एकतरफ़ा सोच को पारस्परिक ज़िम्मेदारी में बदलता है। प्रश्न केवल यह नहीं कि "मुझे क्या मिल रहा है?", बल्कि यह भी है कि "मेरी ज़िम्मेदारी क्या है?"

जेन ज़ी में विवाह को लेकर दृष्टिकोण बदल रहा है। आर्थिक असुरक्षा, शिक्षा और करियर में देरी, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा भावनात्मक अनुकूलता ने विवाह को अधिक जटिल निर्णय बना दिया है। इसे केवल विवाह-विरोध कहना उचित नहीं। इस्लामी चिंतन विवाह को न केवल सामाजिक दबाव मानता है और न केवल रोमांटिक भावना का परिणाम। यह सहमति, चरित्र, अनुकूलता, ज़िम्मेदारी, निष्ठा और सम्मान पर आधारित गंभीर प्रतिबद्धता है।

जेन ज़ी में विवाह को लेकर दृष्टिकोण बदल रहा है। आर्थिक असुरक्षा, शिक्षा और करियर में देरी, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा भावनात्मक अनुकूलता ने विवाह को अधिक जटिल निर्णय बना दिया है। इसे केवल विवाह-विरोध कहना उचित नहीं। इस्लामी चिंतन विवाह को न केवल सामाजिक दबाव मानता है और न केवल रोमांटिक भावना का परिणाम। यह सहमति, चरित्र, अनुकूलता, ज़िम्मेदारी, निष्ठा और सम्मान पर आधारित गंभीर प्रतिबद्धता है। मतभेद होने पर संवाद, सुधार और मध्यस्थता को महत्व दिया जाता है, लेकिन अत्याचार की स्थिति में व्यक्ति की गरिमा और सुरक्षा की रक्षा भी आवश्यक है।

जेन ज़ी चाहती है कि माता-पिता उसकी पहचान, राय और व्यक्तिगत चुनाव का सम्मान करें। यह स्वाभाविक है। लेकिन युवा को भी माता-पिता के अनुभव और त्याग को समझना चाहिए। इसलिए दोनों पीढ़ियों के बीच संवाद आवश्यक है। इस्लामी तर्बियत माता-पिता को केवल आदेश देने वाला नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और संस्कारदाता मानती है। आज युवा प्रश्न करता है क्योंकि उसके पास दुनिया भर की जानकारी उपलब्ध है। यदि परिवार उसके प्रश्नों को दबाएगा तो वह उत्तर कहीं और तलाश करेगा। इसलिए नई पीढ़ी को धर्म और नैतिकता समझाने का बेहतर तरीक़ा प्रश्नों को दबाना नहीं, बल्कि ज्ञान, तर्क और बुद्धिमत्ता के साथ उनका उत्तर देना है।

निजता भी जेन ज़ी के लिए महत्वपूर्ण है। इस्लामी नैतिकता अनावश्यक हस्तक्षेप, संदेह, टोह लेने और किसी की गरिमा को ठेस पहुँचाने से बचने की शिक्षा देती है। मेरी निजता है तो दूसरे की भी है; मेरी गरिमा है तो दूसरे की भी। सोशल मीडिया ने इस सिद्धांत को और महत्वपूर्ण बना दिया है। झूठी ख़बर, निजी जानकारी का प्रसार, अपमान और चरित्र-हनन कुछ ही क्षणों में हज़ारों लोगों तक पहुँच सकता है। इसलिए सूचना की जाँच, भाषा पर संयम और दूसरे की गरिमा का सम्मान आज डिजिटल जीवन के लिए भी आवश्यक नैतिक सिद्धांत हैं।

जेन ज़ी ऐसी दुनिया में बड़ी हो रही है जहाँ प्रेम, आकर्षण और यौन संबंधों से जुड़ी सामग्री तक पहुँच आसान है। इस्लाम मानवीय इच्छाओं को अप्राकृतिक नहीं मानता, लेकिन उन्हें नैतिक अनुशासन से अलग भी नहीं करता। उसका उद्देश्य इच्छा को समाप्त करना नहीं, बल्कि उसे ज़िम्मेदारी, शालीनता, निष्ठा और परिवार की स्थिर व्यवस्था से जोड़ना है। वास्तविक स्वतंत्रता केवल इच्छा के अनुसार चलने में नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं पर विवेकपूर्ण नियंत्रण

रखने में भी है।

आधुनिक युग का एक बड़ा विरोधाभास यह है कि मनुष्य पहले से अधिक connected है, फिर भी अकेलापन बढ़ रहा है। हज़ारों followers वास्तविक मित्रता का विकल्प नहीं बन सकते। इस्लामी सामाजिक व्यवस्था व्यक्ति को परिवार, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, मित्रों, बीमारों और ज़रूरतमंदों से जोड़ती है। समाज केवल अनजान व्यक्तियों की भीड़ नहीं, बल्कि एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदार मनुष्यों का समुदाय है।

जेन ज़ी के लिए आर्थिक सुरक्षा महत्वपूर्ण है, लेकिन वह उद्देश्य, संतुलन और व्यक्तिगत कल्याण को भी महत्व देती है। इस्लामी चिंतन प्रश्न करता है कि सफलता आख़िर किसे कहा जाए। यदि सफलता केवल धन, प्रसिद्धि, पद या सोशल मीडिया की लोकप्रियता है, तो मनुष्य की इच्छा कभी समाप्त नहीं होगी।

इस्लामी दृष्टिकोण मनुष्य के मूल्य को धन और प्रसिद्धि से अलग करके उसके चरित्र, कर्म, नैतिकता और उद्देश्य से जोड़ता है। इससे प्रश्न बदल जाता है— "मैं क्या प्राप्त कर सकता हूँ?" से "मैं क्या बन सकता हूँ और दूसरों के लिए क्या कर सकता हूँ?"

जेन ज़ी चाहती है कि माता-पिता उसकी पहचान, राय और व्यक्तिगत चुनाव का सम्मान करें। यह स्वाभाविक है। लेकिन युवा को भी माता-पिता के अनुभव और त्याग को समझना चाहिए। इसलिए दोनों पीढ़ियों के बीच संवाद आवश्यक है। इस्लामी तर्बियत माता-पिता को केवल आदेश देने वाला नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और संस्कारदाता मानती है।

यदि मनुष्य यह नहीं जानता कि वह क्यों जी रहा है, तो स्वतंत्रता भी दिशाहीन और सफलता भी अर्थहीन हो सकती है। इस्लाम जीवन को केवल कमाने और आनंद लेने की यात्रा नहीं मानता, बल्कि उसे नैतिक और आध्यात्मिक उद्देश्य से जोड़ता है। मनुष्य को भलाई, न्याय, सेवा, जिम्मेदारी और अपने स्रष्टा के साथ संबंध के माध्यम से जीवन को अर्थ देना है।

जेन ज़ी और इस्लामी चिंतन के बीच सार्थक संवाद तभी संभव है जब युवा के प्रश्नों को दबाने के बजाय सुना जाए और उनके उत्तर तर्क, ज्ञान और संवेदनशीलता के साथ दिए जाएँ। यदि युवा सम्मान चाहता है तो उसे सम्मान मिले और साथ ही दूसरों के सम्मान का बोध भी हो। यदि वह स्वतंत्रता चाहता है तो उसे स्वतंत्रता के साथ ज़िम्मेदारी समझाई जाए। यदि वह माता-पिता से संवाद चाहता है तो माता-पिता भी उसकी बात सुनें और युवा भी उनके अनुभव और त्याग को समझे। यदि वह प्रेम चाहता है तो उसे बताया जाए कि प्रेम भावना के साथ प्रतिबद्धता भी है।

इसलिए समाधान न तो जेन ज़ी को अतीत में वापस ले जाना है और न उसकी हर नई प्रवृत्ति को प्रगति मान लेना। आवश्यकता ऐसे संतुलन की है जो आधुनिक दुनिया के सकारात्मक मूल्यों—ज्ञान, मानव गरिमा, न्याय, शिक्षा और प्रश्न करने की स्वतंत्रता—को प्रेम, निष्ठा, शालीनता, पारिवारिक ज़िम्मेदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़े। इस्लामी चिंतन की शक्ति इसी समग्रता में है। वह मनुष्य को व्यक्ति भी मानता है और परिवार का सदस्य भी; स्वतंत्र भी समझता है और उत्तरदायी भी। इसमें अधिकार हैं तो कर्तव्य भी, स्वतंत्रता है तो ज़िम्मेदारी भी, प्रेम है तो निष्ठा भी और परिवार है तो व्यक्ति की गरिमा भी।

शायद जेन ज़ी के बारे में हमारी सबसे बड़ी भूल यह है कि हम उसे बदलने का प्रयास अधिक करते हैं और समझने का कम। उसके प्रश्न नए हो सकते हैं, लेकिन मनुष्य की मूल आवश्यकताएँ नई नहीं हैं। वह स्वतंत्रता, सम्मान, प्रेम, न्याय और जीवन में अर्थ चाहती है। आवश्यकता इस बात की है कि इन सबको एक-दूसरे के विरोध में नहीं, बल्कि संतुलन के साथ समझाया जाए।

आज ज़रूरत किसी एक पीढ़ी को पराजित करने की नहीं, बल्कि पीढ़ियों के बीच ऐसा पुल बनाने की है जिस पर परंपरा भी चल सके और स्वतंत्रता भी, परिवार भी सुरक्षित रहे और व्यक्ति की गरिमा भी, प्रेम भी बना रहे और न्याय भी, युवा प्रश्न भी कर सके और ज़िम्मेदारी भी स्वीकार करे।

अंततः मज़बूत समाज केवल क़ानूनों से नहीं बनते, परिवार केवल रक्त-संबंधों से क़ायम नहीं रहते और युवा केवल शिक्षा या रोज़गार से सफल नहीं होता। समाज तब मज़बूत होता है जब व्यक्तियों में ज़िम्मेदारी, परिवार में प्रेम और न्याय तथा युवाओं में उद्देश्य और चरित्र पैदा हो। यही इस्लामी चिंतन की समग्रता है और यही वह संतुलित जीवन-दृष्टि है जिसकी आज जेन ज़ी सहित पूरे समाज को आवश्यकता है। ■■

"भलाई और
बुराई समान नहीं है।
तुम (बुरे आचरण की बुराई को)
अच्छे-से-अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो।
फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति,
तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था,
जैसे वह कोई घनिष्ठ
मित्र है।"
(क़ुरआन, 41:34)

A Well Wisher

Jamaat Islami Hind
Muzaffar Nagar (U.P.)

सिर्फ़ आक्रोश से रास्ते नहीं बनते

आसान नहीं जेन ज़ी की राह



❖सुफ़ियान अहमद

मनोविज्ञान में फ़्लिन प्रभाव (Flynn Effect) नाम से एक दिलचस्प अध्ययन है। दशकों तक अलग-अलग देशों में किए गए अध्ययनों में पाया गया कि एक पीढ़ी के बाद आने वाली पीढ़ियों के औसत IQ स्कोर में वृद्धि हुई। लेकिन कुछ देशों में बाद के वर्षों में इसका उलटा रुझान भी सामने आया, जिसे रिवर्स फ़्लिन प्रभाव कहा गया। इसका अर्थ यह नहीं कि नई पीढ़ी अचानक 'मूर्ख' हो गई, बल्कि यह संकेत है कि बदलता सामाजिक और बौद्धिक वातावरण हमारी सोचने, समझने और समस्याओं को देखने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

यही बात आज के युवा आक्रोश पर भी लागू होती है। सूचना के इस अभूतपूर्व दौर में युवा पहले से अधिक जानते हैं, लेकिन क्या वे पहले से अधिक समझते भी हैं? सोशल मीडिया ने उन्हें आवाज़ दी है, संगठन की क्षमता दी है और कुछ ही घंटों में हज़ारों-लाखों लोगों को एक मुद्दे पर जोड़ देने की शक्ति दी है। मगर सूचना की अधिकता हमेशा विवेक की अधिकता नहीं होती। किसी विचार का तेज़ी से फैलना और उसका सही होना, दोनों अलग-अलग बातें हैं।

आज भारत सहित दुनियाभर में जेन ज़ी के नाम पर जिस तरह की राजनीतिक हलचल दिखाई दे रही है, उसके बीच सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह नहीं है कि युवा कितने नाराज़ हैं, बल्कि यह है कि क्या उनका आक्रोश किसी वैचारिक और नैतिक दिशा में बदल रहा है?

दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए जेन ज़ी आंदोलन का सबसे बड़ा हासिल यह रहा कि नई सदी में युवा अचानक भारतीय राजनीति के केंद्र में आ गए। बीते 25 वर्षों में देखें तो अन्ना आंदोलन, निर्भया आंदोलन, सीएए विरोधी प्रदर्शनों और किसान आंदोलन में भी युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, लेकिन ताज़ा घटनाओं के बाद पहली बार ऐसा माहौल बना है जिसमें राजनीतिक दलों का ध्यान विशेष रूप से जेन ज़ी पर केंद्रित दिखाई देता है।

आंदोलन समाप्त होते ही संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मुंबई में क़रीब दो हज़ार जेन ज़ी युवाओं से बात की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वतंत्रता दिवस के भाषण में 'युवा' और 'नौजवान' शब्द बार-बार आए। राहुल गांधी ने 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम किया। राजनीतिक दलों ने युवाओं तक पहुंचने के लिए विशेष संपर्क टीमें बनानी शुरू कर दीं। उत्तर प्रदेश में युवा आयोग बनाने के साथ युवाओं को 25 लाख मुफ़्त टैबलेट देने की घोषणा हुई। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने अपने अभियान को 'मिशन जेन ज़ी' नाम दे दिया। यह पूरी होड़ दरअस्ल, वर्ष 2029 की तैयारी का संकेत है।

रॉयटर्स के मुताबिक़, 2029 तक भारत में क़रीब 40 करोड़ जेन ज़ी मतदाता हो सकते हैं। 2024 में ही देश में क़रीब 98 करोड़ पंजीकृत मतदाताओं में 18 से 29 वर्ष के मतदाताओं की हिस्सेदारी 22.78 प्रतिशत थी। ऐसे में जेन ज़ी को लेकर सत्ता की बेचैनी और विपक्ष का उत्साह समझना कठिन नहीं है, लेकिन युवाओं का आक्रोश जंतर-मंतर पर पैदा नहीं हुआ। परीक्षा में धांधली, बेरोज़गारी, भर्ती में देरी, महंगी शिक्षा और भविष्य की अनिश्चितता ने युवाओं में लंबे समय से बेचैनी पैदा कर रखी

है। जंतर-मंतर ने शायद उस बेचैनी को एक चेहरा और तेवर दिया है। सवाल अब यह है कि इस आक्रोश को दिशा कौन देगा?

देश ने वर्ष 1974 में भी एक बड़ा छात्र आंदोलन देखा था। महंगाई, बेरोज़गारी और भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ शुरू हुए उस आंदोलन की कमान जयप्रकाश नारायण ने संभाली। जेपी के पीछे दशकों का राजनीतिक अनुभव, त्याग और सबसे बढ़कर नैतिक बल था। छात्र आंदोलन आगे चलकर 'संपूर्ण क्रांति' में बदल गया और उसने देश की राजनीति में बड़े बदलाव की नींव रखी। आज हमने देखा कि जंतर-मंतर के बाद छात्रों का आक्रोश झारखंड में भी दिखाई दिया। आज सवाल यह है कि क्या युवा आक्रोश के पास ऐसा कोई नैतिक नेतृत्व है, जो उसकी ऊर्जा को सत्ता-विरोध से आगे बढ़ाकर समाज-निर्माण की दिशा दे सके?

यह प्रश्न इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आज की युवा राजनीति का बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया से संचालित होता है। वर्ष 2026 में Social Sciences & Humanities Open में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, सोशल मीडिया की एल्गोरिदमिक सिफ़ारिशें समान विचार वाले लोगों के नेटवर्क और 'इको चैंबर' को मज़बूत करती हैं तथा उनका राजनीतिक ध्रुवीकरण से संबंध है। इसी वर्ष Nature में प्रकाशित एक अलग प्रयोग के नतीजों में पाया गया कि एल्गोरिदमिक फ़ीड कुछ राजनीतिक मुद्दों पर लोगों की राय को प्रभावित कर सकती है। यानी सोशल मीडिया पर हम केवल सामग्री नहीं चुनते; कई बार सामग्री भी धीरे-धीरे हमें चुन रही होती है।

यहीं फ़्लिन प्रभाव और आज की डिजिटल पीढ़ी का सवाल एक-दूसरे से जुड़ता है। यदि पिछली पीढ़ियों में शिक्षा और जटिल सामाजिक वातावरण ने तार्किक क्षमताओं को बढ़ाया, तो आज का डिजिटल वातावरण हमारी सोच को किस दिशा में ले जा रहा है? हम अधिक सूचनाओं से घिरे हैं, लेकिन क्या हम अधिक गहराई से सोच रहे हैं? हम पहले से तेज़ी से प्रतिक्रिया देते हैं, लेकिन क्या हम पहले से बेहतर ढंग से विश्लेषण करते हैं? क्या वायरल होना और विचारवान होना एक ही बात है?

सोशल मीडिया के माध्यम से एकजुट हुए युवाओं के आक्रोश ने कई देशों में सत्ता को चुनौती देने की ताक़त दिखाई है, लेकिन आंदोलन के बाद कैसी राजनीति पैदा होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है। बांग्लादेश में छात्र आंदोलन ने शेख़ हसीना की सत्ता को उखाड़ फेंका, लेकिन उसके बाद पैदा हुई राजनीतिक जटिलताएं भी सामने हैं। नेपाल में जेन ज़ी के भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन ने सत्ता परिवर्तन किया, लेकिन नई सरकार अपने अंतर्विरोधों में उलझी हुई है। 'अरब स्प्रिंग' ने भी दिखाया था कि सोशल मीडिया युवाओं को सत्ता गिराने की ताक़त तो दे सकता है, लेकिन सत्ता के बाद की राजनीति का विकल्प अपने आप पैदा नहीं करता। मिस्र में आंदोलन के बाद अधिनायकवादी सत्ता लौट आई, जबकि लीबिया, सीरिया और यमन लंबे संघर्ष और अस्थिरता में फंसे रहे।

भारत के संदर्भ में बड़ा सवाल इसलिए यह भी है कि युवाओं के आक्रोश की यह लहर वास्तव में ज़मीन पर कितनी गहरी है और सोशल मीडिया पर कितना बड़ा बुलबुला? युवा सत्ता के लिए जहां नया मतदाता समूह है वहीं युवा आक्रोश विपक्ष के लिए सत्ता को चुनौती देने का संभावित आधार।

लेकिन जेन ज़ी की असली चुनौती इससे कहीं बड़ी है। उसे यह साबित करना होगा कि उसका आक्रोश केवल प्रतिक्रिया नहीं, विचार है; उसकी एकजुटता केवल भीड़ नहीं, चेतना है; और उसका विरोध केवल सत्ता बदलने की इच्छा नहीं, बेहतर व्यवस्था बनाने की प्रतिबद्धता है।

क्योंकि इतिहास गवाह है कि आंदोलन सत्ता को हिला सकते हैं, सरकारें गिरा सकते हैं और चुनावों का रुख़ बदल सकते हैं। लेकिन समाज बदलने के लिए केवल आक्रोश पर्याप्त नहीं होता। उसके लिए विचार चाहिए, संगठन चाहिए, धैर्य चाहिए और सबसे बढ़कर नैतिक बल चाहिए।

नई पीढ़ी के सामने असली परीक्षा यही है। उसे यह तय करना होगा कि वह एल्गोरिदम द्वारा तय की गई उत्तेजना का हिस्सा बनेगी या अपने विवेक से भविष्य की दिशा तय करेगी। यदि फ़्लिन प्रभाव हमें बताता है कि वातावरण हमारी बौद्धिक क्षमताओं को बदल सकता है, तो आज का डिजिटल वातावरण हमारे सामने एक और सवाल रखता है; क्या हम सूचना के युग में सचमुच अधिक समझदार हो रहे हैं, या केवल अधिक तेज़ी से प्रतिक्रिया देने वाले?

आक्रोश शुरुआत हो सकता है, मंज़िल नहीं। समाज की सबसे बड़ी ताक़त उसकी युवा पीढ़ी होती है, लेकिन वही युवा पीढ़ी यदि अपने आक्रोश की दिशा तय न कर पाए तो उसकी ऊर्जा परिवर्तन की ताक़त बनने के बजाय किसी और के स्वार्थ का ईंधन भी बन सकती है। आज भारत सहित दुनियाभर में जेन ज़ी के नाम पर जिस तरह की राजनीतिक हलचल दिखाई दे रही है, उसके बीच सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह नहीं है कि युवा कितने नाराज़ हैं, बल्कि यह है कि क्या उनका आक्रोश किसी वैचारिक और नैतिक दिशा में बदल रहा है? ■■

विशेष आयोजन

स्क्रॉल, लाइक्स, फ़ॉलोअर्स के बीच अपनी जगह ढूँढ़ती किताब

जेन-ज़ी के दौर में पढ़ने, ग़ौर करने और गहरी सोच का बदलता तरीक़ा

❖ डॉ. मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी

आज की नई पीढ़ी को लेकर एक शिकायत बहुत आम है—"बच्चे किताबें नहीं पढ़ते।" हाथ में मोबाइल है, आँखें स्क्रीन पर हैं और उँगली लगातार ऊपर की ओर चल रही है। इंस्टाग्राम (Instagram), यूट्यूब (YouTube), टिकटॉक (TikTok) और दूसरी सामाजिक-माध्यम (सोशल मीडिया) सेवाओं पर घंटों बिताने वाली पीढ़ी को देखकर ऐसा लगता है कि किताब और उसके पन्ने शायद धीरे-धीरे अतीत की वस्तु बनते जा रहे हैं। लेकिन क्या यह सही तस्वीर है?

इंटरनेट आपको जानकारी दे सकता है, लेकिन एक अच्छी पुस्तक उस जानकारी का संदर्भ, पृष्ठभूमि और सम्बन्ध समझाती है। वह किसी विचार को धीरे-धीरे विकसित करती है। वह आपको लेखक की पूरी तर्क-यात्रा से गुज़ारती है। और सबसे महत्वपूर्ण बात—वह आपको केवल निष्कर्ष नहीं देती, बल्कि निष्कर्ष तक पहुँचने की प्रक्रिया से परिचित कराती है।

वास्तव में आज का युवा कम नहीं पढ़ता, बल्कि अलग तरह से पढ़ता है। वह दिनभर संदेश, टिप्पणियाँ, समाचार, कैप्शन और तरह-तरह की डिजिटल सामग्री पढ़ता है। वह वीडियो देखता है, पॉडकास्ट सुनता है और किसी विषय पर कुछ ही क्षणों में अनेक स्रोतों से जानकारी हासिल कर लेता है। समस्या शायद पढ़ने की नहीं, पढ़ने की प्रकृति की है। तेज़ी से बदलती स्क्रीन ने मनुष्य को सूचना का उपभोक्ता तो बना दिया है, लेकिन क्या वह उसे उतनी ही गहराई से समझने और उस पर विचार करने वाला व्यक्ति भी बना रही है?

यही वह सवाल है जिसके कारण किताब आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक दिखाई देती है।

सूचना की दुनिया और ध्यान का संकट

सोशल मीडिया ने सूचना प्राप्त करने का तरीक़ा ही बदल दिया है। एक समय किसी विषय को समझने के लिए किताब, पत्रिका या अख़बार की आवश्यकता होती थी। अब कुछ शब्द लिखिए और सामने सैकड़ों परिणाम आ जाते हैं। एक मिनट का वीडियो किसी ऐतिहासिक घटना का परिचय दे सकता है, कोई विशेषज्ञ दस मिनट में किसी जटिल विषय को समझा सकता है और किसी लोकप्रिय रील में वही बात कुछ सेकंड में प्रस्तुत हो सकती है।

यह सुविधा निस्संदेह क्रान्तिकारी है, लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है। सोशल मीडिया की दुनिया लगातार हमारा ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करती है। एक वीडियो समाप्त होते ही दूसरा सामने आ जाता है। एक समाचार के बाद दूसरा समाचार, एक टिप्पणी के बाद दूसरी टिप्पणी और एक रील के बाद अगली रील। परिणाम यह है कि हमारा ध्यान लगातार एक विषय से दूसरे विषय की ओर खिंचता रहता है।

इसे केवल "नई पीढ़ी की कमी" कहना उचित नहीं होगा। यह उस पूरे डिजिटल वातावरण की देन है जिसमें वह विकसित हुई है। असली प्रश्न यह है कि क्या लगातार छोटी-छोटी और तेज़ उत्तेजनाओं (Stimuli) के आदी होने के कारण हम लम्बे और जटिल विचारों के साथ बैठने की अपनी क्षमता खोते जा रहे हैं?

क्योंकि किसी पुस्तक के सामने बैठना सोशल मीडिया की तरह नहीं होता। किताब आपको बार-बार नया आकर्षण देने का वादा नहीं करती। वह आपसे ठहरने, ध्यान देने और समझने की अपेक्षा करती है।

जब पहचान भी डिजिटल हो जाए

सोशल मीडिया अब केवल मनोरंजन या सूचना का

माध्यम नहीं रह गया है। वह पहचान का माध्यम भी बन चुका है।

पहले किसी व्यक्ति की पहचान उसके परिवार, मित्रों, शिक्षा, पेशे, सामाजिक सम्बन्धों और विचारों से बनती थी। अब उसकी डिजिटल पहचान भी उतनी ही महत्वपूर्ण हो गई है। उसकी तस्वीरें, परिचय, फॉलोवर्स की संख्या, पोस्ट और टिप्पणियाँ उसके बारे में एक सार्वजनिक छवि बनाती हैं। युवा अब केवल जीवन नहीं जी रहा; वह अपने जीवन को प्रदर्शित भी कर रहा है।

यहीं एक दिलचस्प परिवर्तन दिखाई देता है। पहले लोग कोई अच्छा क्षण इसलिए याद रखते थे कि वह उनके जीवन का हिस्सा था। अब कभी-कभी अच्छा क्षण इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उसे दूसरों को दिखाया जा सके। यात्रा, भोजन, सफलता, मित्रता, उपलब्धि—हर चीज़ डिजिटल प्रदर्शन का हिस्सा बनती जा रही है।

सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाला जीवन, स्वाभाविक रूप से, वास्तविक जीवन का पूरा चित्र नहीं होता। वहाँ प्रायः वही क्षण दिखाई देते हैं जिन्हें हम दिखाना चाहते हैं। असफलता, अकेलापन, तनाव, असुरक्षा और साधारण दिनों की नीरसता अक्सर स्क्रीन से बाहर रह जाती है। इसलिए प्रश्न केवल यह नहीं कि "दूसरे मुझे कैसे देखते हैं?" बल्कि यह भी है कि "कहीं मैं स्वयं को दूसरों की निगाह से देखने का प्रयास तो नहीं कर रहा?"

लाइक्स और फ़ॉलोअर्स की नई अर्थव्यवस्था

डिजिटल दुनिया में लोकप्रियता की अपनी करंसी है—लाइक, कमेंट और फ़ॉलोअर। संख्या बढ़ती है तो आत्मविश्वास बढ़ता है; कम प्रतिक्रिया मिलती है तो निराशा पैदा हो सकती है। दूसरे की पोस्ट पर हज़ारों लाइक्स देखकर अपने जीवन का मूल्यांकन करना शुरू हो जाता है। धीरे-धीरे सामाजिक स्वीकृति का अर्थ वास्तविक सम्बन्धों के बजाय डिजिटल प्रतिक्रिया से तय होने लगता है।

कई बार यह तुलना और असुरक्षा की मानसिकता को जन्म देता है। इसलिए यहाँ सावधानी आवश्यक है। हर युवा सोशल मीडिया का अस्वस्थ उपयोग नहीं करता और हर अधिक फ़ॉलोअर वाला व्यक्ति असुरक्षित नहीं होता। सोशल मीडिया स्वयं समस्या नहीं है; समस्या तब पैदा होती है जब उसका उपयोग व्यक्ति के आत्म-मूल्य का पैमाना बन जाता है।

फिर भी सोशल मीडिया खलनायक नहीं है

सोशल मीडिया की आलोचना करते समय उसके सकारात्मक पक्ष को भूलना भी अन्याय होगा। आज किसी छोटे शहर का विद्यार्थी विश्वस्तरीय व्याख्यान सुन सकता है। कोई भी भाषा सीख सकता है, किसी विशेषज्ञ से परिचित हो सकता है, स्वतंत्र पत्रकारिता को पढ़ सकता है, सामाजिक मुद्दों पर जागरूक हो सकता है और अपने विचारों को व्यापक समाज तक पहुँचा सकता है। यहाँ तक कि जिस माध्यम को किताब का सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी माना जा रहा है, वही किताब तक पहुँचने का रास्ता भी बन सकता है।

आज कोई युवा किसी लेखक को इंस्टाग्राम पर देख सकता है, उसका साक्षात्कार यूट्यूब पर सुन सकता है और फिर उसकी पुस्तक ख़रीद सकता है। किताबों पर आधारित डिजिटल समुदायों ने अनेक युवाओं को फिर से पढ़ने की ओर आकर्षित किया है।

इसलिए प्रश्न किताब बनाम सोशल मीडिया का नहीं होना चाहिए। प्रश्न यह होना चाहिए कि हम दोनों का इस्तेमाल किस उद्देश्य से करते हैं।

जब पूरी दुनिया मोबाइल में है तो किताब क्यों पढ़ें?

यह आज की पीढ़ी का बिल्कुल जायज़ सवाल है। जब गूगल पर जानकारी उपलब्ध है, यूट्यूब पर व्याख्यान उपलब्ध हैं, पॉडकास्ट सुन सकते हैं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) किसी विषय का सार कुछ सेकंड में बता सकती है, तो सैकड़ों पृष्ठों की पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता क्यों हो?

इस प्रश्न का उत्तर "क्योंकि किताब पढ़ना अच्छी आदत है" भर नहीं हो सकता। क्योंकि सूचना और ज्ञान एक चीज़ नहीं हैं।

इंटरनेट आपको जानकारी दे सकता है, लेकिन एक अच्छी पुस्तक उस जानकारी का संदर्भ, पृष्ठभूमि और सम्बन्ध समझाती है। वह किसी विचार को धीरे-धीरे विकसित करती है। वह आपको लेखक की पूरी तर्क-यात्रा से गुज़ारती है। और सबसे महत्वपूर्ण बात—वह आपको केवल निष्कर्ष नहीं देती, बल्कि निष्कर्ष तक पहुँचने की प्रक्रिया से परिचित कराती है।

इसी प्रकार ज्ञान भी विवेक के बराबर नहीं है। हज़ारों तथ्य जानना और किसी विषय पर गहराई से विचार कर पाना दो अलग क्षमताएँ हैं। एक छोटी वीडियो आपको बताती है

कि क्या सोचना है, जबकि एक अच्छी पुस्तक आपको यह सिखाती है कि कैसे सोचना है।

किताब आपको ठहरना सिखाती हैं

आज की डिजिटल अर्थव्यवस्था मूलतः ध्यान की अर्थव्यवस्था है। अनेक मंच चाहते हैं कि हम अधिक समय तक उनकी स्क्रीन पर बने रहें। हमारा ध्यान ही उनकी सबसे मूल्यवान सम्पत्ति है।

किताब इसके ठीक विपरीत अनुभव देती है। वह कहती है—रुकिए। कुछ देर एक ही विषय के साथ रहिए। पढ़िए। सहमत या असहमत होइए। प्रश्न कीजिए। फिर आगे बढ़िए। इस अर्थ में किताब पढ़ना केवल एक पुरानी आदत को बचाए रखना नहीं है। यह अपने ध्यान पर अपना अधिकार बनाए रखने का एक तरीक़ा भी है।

क्या नई पीढ़ी सचमुच किताबों से दूर है?

शायद हमें इस धारणा की भी जाँच करनी चाहिए। नई पीढ़ी में पुस्तक-विमुखता को लेकर सामान्य निष्कर्ष निकालना आसान है, लेकिन वास्तविकता अधिक जटिल है। ई-पुस्तकें, श्रव्य-पुस्तकें (Audiobooks), डिजिटल पुस्तकालय और ऑनलाइन पुस्तक-समुदाय पढ़ने के नए रास्ते खोल रहे हैं।

टिकटॉक जैसे मंचों पर पुस्तकों की चर्चा का बढ़ना भी इस विरोधाभास को सामने लाता है। जिस मंच को अक्सर पढ़ने की आदत का शत्रु समझा जाता है, उसी पर पुस्तकें लोकप्रिय हो सकती हैं। इससे एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलता है—नई पीढ़ी किताब की विरोधी नहीं है; उसे किताब तक पहुँचाने के नए रास्ते चाहिएं।

टिकटॉक जैसे मंचों पर पुस्तकों की चर्चा का बढ़ना भी इस विरोधाभास को सामने लाता है। जिस मंच को अक्सर पढ़ने की आदत का शत्रु समझा जाता है, उसी पर पुस्तकें लोकप्रिय हो सकती हैं। इससे एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलता है—नई पीढ़ी किताब की विरोधी नहीं है; उसे किताब तक पहुँचाने के नए रास्ते चाहिएं।

समाधान डिजिटल परहेज़ नहीं, डिजिटल अनुशासन है

युवा से यह कहना कि "मोबाइल छोड़ो और किताब पढ़ो" शायद व्यावहारिक समाधान नहीं है। मोबाइल उसके जीवन, शिक्षा, काम और सामाजिक सम्बन्धों का हिस्सा है। आवश्यकता डिजिटल परहेज़ की नहीं, डिजिटल अनुशासन की है।

दिन के कुछ समय को बिना किसी सूचना या व्यवधान के पढ़ने के लिए सुरक्षित किया जा सकता है। हर ख़ाली क्षण को स्क्रॉलिंग से भरने की आदत को बदला जा सकता है। विद्यालयों में केवल परीक्षा के लिए नहीं, आनंद और जिज्ञासा के लिए पढ़ने की संस्कृति विकसित की जा सकती है। घर में माता-पिता स्वयं पढ़ेंगे तो बच्चों को किताब की उपयोगिता समझाने के लिए अलग भाषण की आवश्यकता कम पड़ेगी। और सबसे महत्वपूर्ण बात, युवाओं को उनकी पसंद की किताब चुनने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। पढ़ने की आदत आदेश से नहीं, रुचि से पैदा होती है।

किताब बनाम मोबाइल नहीं, गहराई बनाम सतहीपन

अन्ततः यह बहस किताब और मोबाइल के बीच चुनाव की बहस नहीं है। मोबाइल दुनिया को हमारी जेब में ला सकता है लेकिन किताब हमारे अंदर उस दुनिया को समझने की क्षमता विकसित करती है। असल संघर्ष गहराई और सतहीपन, एकाग्रता और लगातार विचलन, स्वतंत्र विचार और एल्गोरिदम द्वारा निर्देशित पसंद के बीच है।

नई पीढ़ी को दोष देना आसान है। लेकिन हर पीढ़ी अपने समय के माध्यमों से प्रभावित होती है। आज की पीढ़ी का माध्यम मोबाइल है; कल कोई और होगा। चुनौती यह सुनिश्चित करने की है कि माध्यम बदलने के साथ मनुष्य की सोचने की क्षमता छोटी न हो जाए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में तो यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो गया है। यदि मशीन हमारे लिए किसी पुस्तक का सार कुछ सेकंड में बता सकती है, तो भी पूरी पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता समाप्त नहीं होती—बल्कि उसका महत्व और बढ़ जाता है। क्योंकि सार हमें पुस्तक की सूचना दे सकता है, पुस्तक स्वयं हमें उसके विचार के भीतर ले जाती है। मोबाइल हमें दुनिया से जोड़ सकता है, लेकिन किताब हमें उस दुनिया के अर्थ पर ठहरकर विचार करना सिखाती है।

नई पीढ़ी को मोबाइल छोड़ने की नहीं, डिजिटल माध्यमों के बीच किताब के लिए जगह बनाने की आवश्यकता है।

■■

एक अपील, एक ऐलान और तआरुफ़

आपकी ख़ुसूसी तवज्जह का सब से ज़्यादा मुस्तहिक़

40 साल की ख़िदमात

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना गया



कैफ़ियते-क़ियाम : इदारा का तीन यतीम लड़कियों से 21 दिसम्बर 1986 को एक किराया के खपरैल मकान में क़ियाम अमल में आया था, जो कभी साँप, बिच्छू और चिड़ियों का बसेरा था—बक़ौल अल्लामा इक़बाल (रह.) "इश्क़ ने आबाद कर डाले हैं दश्त-ओ-कोहसार"

हिन्दुस्तान की रियासत बिहार, झारखंड, बंगाल, उड़ीसा (ओडीशा) में अपने तर्ज़ की पहली और वाहिद इक़ामती दीनी व असरी उलूम की मशहूर तालीमगाहें (Residential) जो इस्लामी और असरी उलूम का संगम होने की वजह से मशहूर है। • इदारा बुनियाद के दिन से ही सही इस्लामी ख़ुतूत पर यतीम के साथ-साथ ग़रीब और ग़ैर-यतीम तालिबात की तालीमी व तर्बियती ख़िदमात अंजाम दे रहा है। • यहां की तालिबात को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनिवर्सिटी में पहले और दूसरे साल में बाआसानी दाख़िला मिल जाता है। • शोबा-ए-हिफ़्ज़ की तालिबा को भी हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक (Matric) तक पढ़ाया जाता है। • पांच ज़ुबानों में क़ुरआन और इस्लामियात और बिहार बोर्ड के निसाबे-तालीम के साथ मेयारी तालीम का नज़्म है। • **तालीमी साल** अप्रैल ता मार्च, • इदारा के अहाता (Campus) में ही पर्दे (Purdah) में रहकर नर्सरी (Nursery) से मैट्रिक (Matric) तक की तालीम, होम साइंस, उमोरे-ख़ानादारी, सिलाई-कटाई, मेहंदी व पेंटिंग और कम्प्यूटर की तालीम वग़ैरा दी जाती है। इसके लिए बच्चियों को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता। • **तालीमी मराहिल** • इब्तिदाई • सानवी • आला • फ़ासलाती तालीम • शोबा हिफ़्ज़ व नाज़रा **यतीम तालिबात की तादाद** 75 है। **नोट** यतीम तालिबात का सारा ख़र्च, तआम व क़ियाम व रिहाइश वग़ैरा बिल्कुल मुफ़्त (Free) है किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। **बैरूनी तालिबात की तादाद** अपने ख़र्च पर दारुल अक़ामा (Boarding) में रहकर तालीम हासिल करने वाली और दूसरे गांव से पढ़कर जाने वाली लगभग 100 हैं। **किफ़ाला स्कीम (Sponsorship)** के तहत एक यतीम बच्ची का सालाना ख़र्च तीस हज़ार रुपये (Rs. 30,000) है। आप भी एक यतीम बच्ची की किफ़ालत की ज़िम्मेदारी लेकर सवाब में शरीक हों। **असातिज़ा, मुअल्लिमात और दीगर मुलाज़िमीन की तादाद** 33 है। एक माह की तनख़्वाह एक लाख अस्सी हज़ार रुपये (Rs. 1,80,000) से ज़्यादा है। **सालाना ख़र्च** तक़रीबन पैंतालिस लाख रुपये (Rs. 45,00,000)। **ज़रिया आमदनी** मुस्लिम अवाम के चंदे **अपील** आज के माद्दापरस्ताना (Materialistic) और जदीद दौर में लड़कियों के लिए जदीद और मुकम्मल इस्लामी तर्ज़े-तालीम के साथ रिहाइशी (Residential) इदारों की पहले से कहीं ज़्यादा बढ़कर ज़रूरत है। • आप इस आसमान छूती महंगाई को देखते हुए और माहे रमज़ानुल मुबारक वग़ैरह के मुबारक मौक़ा पर इदारे की नन्ही-मुन्नी मासूम यतीम बच्चियों को ऊंचा उठाने के लिए अपने • ज़कात • अतियात • सदक़ात से भरपूर माली मदद करें ताकि वे तालीम और हुनर के मैदान में आगे बढ़ सकें और किसी से पीछे न रहें। • बाक़ी तामीरी व तालीमी मन्सूबों को पूरा करने के लिए रक़म की फ़ौरी ज़रूरत है। • इदारा आपके फ़राख़दिलाना और मुख़लिसाना भरपूर माली तआवुन का मुंतज़िर है। **याद रखें** यह लड़कियों का इदारा है। यहां चंदा वसूल करने वालों की बहुत कमी है। यहां का कोई भी मुहस्सिल कमीशन (उजरत) पर चंदा वसूल नहीं किया करता है।

नोट : इदारा की मुख़्तसर तारीख़ दस्तावेज़ी फ़िल्म (Documentary Film) नज़रे-इनायत (Nazr-e-Enayeth) यू-ट्यूब (You Tube) पर देखें।

चैक व ड्राफ़्ट और कोर बैंकिंग स्लिप पर सिर्फ़ यह लिखें : THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGAE

बराए राबिता चैक व ड्राफ़्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता

Founder & Hon. G. Secretary, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE,
At. : Kolowna, P.o : Cherki-824237, Distt. : Gaya (Bihar) India

Email : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Mobile : 8969435151, Website : www.gmgo.in

Beneficiary Name
THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE
Bank A/C No.: 300402010007752 (ज़कात/Zakath)
Bank A/C No.: 300402010009846 (डोनेशन/Donation)
Bank IFSC Code No: UBIN0530042
Bank: UNION BANK OF INDIA
(MAIN BRANCH GAYA)

Scan & Pay

याद रखें : बैंक में रक़म ट्रांसफ़र की तफ़्सील बराए-मेहरबानी स्कैन एंड पै (Scan & Pay) या किसी ज़रिये से रक़म ट्रांसफ़र के बाद स्क्रीन शॉट (Screen Shot) नाम व पता सहित व्हाट्स एप कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

व्हाट्स एप नम्बर 7367909126 बानी व इजाज़ी जनरल सेक्रेट्री इक़बाल अहमद ख़ां—9934480190

पटना ब्रांच ऑफ़िस : पटना शहर के हमदर्द अपना चैक व ड्राफ़्ट और रक़म देने के लिए इनसे राबिता करें।
जनाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ां (सदर) समनपूरा, पटना, **मोबाइल : 9934943229**
जनाब इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ां, समनपूरा, पटना, **मोबाइल : 9631867066**

साक्षात्कार

क्या Gen Z अपनी सभ्यता, संस्कृति और नैतिक एंव धार्मिक मूल्यों से विमुख हो रही है ?

युवा स्कॉलर, IIISR-नई दिल्ली के व्याख्याता और जमाअत इस्लामी हिन्द की प्रतिनिधि सभा के सदस्य डॉ. ख़ान यासिर से 'कान्ति' मासिक के सहयोगी मुशर्रफ़ अली की बातचीत

■ Gen Z का सबसे अहम वैचारिक मुद्दा क्या है?

सामाजिक विज्ञान में Generation (पीढ़ी) से आशय ऐसे लोगों के समूह से है जो लगभग एक ही समय में पैदा हुए हों और जिन्होंने अपने जीवन के शुरुआती महत्वपूर्ण वर्षों में समान ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिस्थितियों का अनुभव किया हो। इस दृष्टि से Gen Z को सामान्यतः 1997 से 2012 के बीच जन्मी पीढ़ी माना जाता है। यह वह पीढ़ी है जिसने इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और वैश्विक डिजिटल संस्कृति को अपने जीवन के स्वाभाविक वातावरण के रूप में पाया है।

तेज़ी से बदलती सूचनाओं, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, विकल्पों की बहुलता, स्वतंत्रता, पहचान और प्रामाणिकता की खोज ने इस पीढ़ी की सोच को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इसलिए वह परंपरागत धारणाओं को केवल परंपरा के आधार पर स्वीकार करने के बजाय अक्सर — "क्यों?", "इसका प्रमाण क्या है?" और "इसका मेरे जीवन से क्या संबंध है?" — जैसे सवाल पूछती है। बात घबराने वाली नहीं है, क्योंकि इसी प्रश्नाकुलता से उसके मन में गहरे अस्तित्वगत प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं, जैसे: "मैं कौन हूँ?", "मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है?", और "इस तेज़ी से बदलती दुनिया में स्थिरता, अपने अस्तित्व की सार्थकता और अर्थ कहाँ से मिलेंगे?" आवश्यकता केवल इन प्रश्नों को थोड़ा उभारने और सही दिशा में ले जाने की है; ऐसा किया जाए तो बातचीत सतही प्रश्नों से आगे बढ़कर गहरी, गंभीर और सार्थक चर्चा में बदल सकती है।

■ क्या Gen Z सच में धर्म-विमुख है या वह धर्म को समझने का कोई नया तरीक़ा ढूंढ़ रही हैं?

यह मान लेना उचित नहीं होगा कि Gen Z धर्म-विमुख या धर्म-विरोधी है। बात बस इतनी सी है कि उसका धर्म के साथ संबंध पिछली पीढ़ियों से भिन्न है। वह परंपरा को केवल परंपरा होने के कारण स्वीकार करने के बजाय उसके आधार और प्रासंगिकता पर प्रश्न करती है और इस्लामी बौद्धिक परंपरा में प्रश्न करना वैसे भी कोई नकारात्मक बात नहीं है। क़ुरआन स्वयं मनुष्य को चिंतन, तर्क, निरीक्षण और समझने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए युवाओं के प्रश्नों को दबाना या केवल "ऐसा ही है" कहकर चुप करा देना समाधान नहीं है।

आवश्यकता यह है कि उनके प्रश्नों को गंभीरता से लिया जाए और तर्क, प्रमाण, संवाद तथा उनकी वास्तविक जीवन-स्थितियों को ध्यान में रखते हुए संतोषजनक उत्तर दिए जाएँ। उन्हें केवल यह बताना पर्याप्त नहीं है कि क्या मानना है; उन्हें यह भी समझाना ज़रूरी है कि क्यों मानना है। इस दृष्टि से Gen Z को धर्म से दूर होती हुई पीढ़ी के बजाय सवाल करने वाली, समझने की इच्छुक और अर्थ की तलाश करने वाली पीढ़ी के रूप में देखना अधिक प्रासंगिक होगा। चुनौती उसके प्रश्नों को रोकना नहीं, बल्कि उनके बेहतर और अधिक संतोषजनक उत्तर प्रस्तुत करना है।

■ अगर कोई युवा यह कहता है, "मुझे धर्म की ज़रूरत महसूस नहीं होती," तो हमारी स्ट्रेटेजी क्या होनी चाहिए?

संवाद का उद्देश्य पराजित करना नहीं, बल्कि समझना और समझाना होता है। इसलिए, ऐसे युवाओं के साथ

बातचीत में हमें उनके कथन के पीछे छिपी मूल धारणाओं, प्रश्नों और तर्क के आधार को समझने का प्रयास करना चाहिए। उससे यह जानना चाहिए कि "धर्म की आवश्यकता महसूस न होने" से उसका आशय क्या है; क्या उसे ईश्वर, नैतिकता, जीवन के उद्देश्य, मृत्यु और अंतिम जवाबदेही जैसे प्रश्न महत्वपूर्ण ही नहीं लगते, या वह मानता है कि इनके उत्तर धर्म के बिना भी पाए जा सकते हैं?

इसके बाद बातचीत को "मुझे धर्म की आवश्यकता है या नहीं?" की सीमित बहस से आगे बढ़ाकर मनुष्य के कुछ बुनियादी प्रश्नों की ओर ले जाना अधिक प्रभावी होगा: "यह ब्रह्मांड किसने बनाया?" "किस लिए बनाया?" "मैं कौन हूँ?" "मेरे जीवन का अंतिम उद्देश्य क्या है?" "मुझे किस आधार पर सही और ग़लत तय करना चाहिए?" और "मृत्यु के पश्चात क्या है?" इससे चर्चा धीरे धीरे तात्कालिक चिंताओं से उठकर जीवन के उच्चतर उद्देश्य और उसके अंतिम अर्थ तक पहुँच सकती है।

इस संदर्भ में इस्लाम को केवल धार्मिक अनुष्ठानों और नियमों के रूप में नहीं, बल्कि एक समग्र और तार्किक विश्वदृष्टि (Worldview) के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो मनुष्य और ब्रह्मांड से जुड़े मूलभूत प्रश्नों के संतोषजनक और उद्देश्यपूर्ण उत्तर देती है। युवा को यह समझने का अवसर दिया जाए कि केवल भौतिक सफलता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सांसारिक सुख जीवन के अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकते। इस्लाम इन प्रश्नों को आपस में जोड़कर अस्तित्व का अर्थ, जीवन का उद्देश्य और मनुष्य की अंतिम मंज़िल एक स्पष्ट और सार्थक framework में प्रस्तुत करता है।

युवाओं के साथ संवाद में उन्हें अपनी तात्कालिक इच्छाओं और भौतिक सफलता की सीमाओं से ऊपर उठाकर जीवन के मूल प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करना हमारा पहला लक्ष्य होना चाहिए। एक बार बात यहां तक पहुंच जाए और मनुष्य ईमानदारी, निष्पक्षता और खुले मन से विमर्श करे कि मैं कौन हूँ, यह ब्रह्मांड क्यों है, और मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है, तो इस्लाम एक ऐसे समग्र और तार्किक धर्म और विश्वदृष्टि के रूप में सामने आता है जो इन प्रश्नों के उत्तर सबसे सुसंगत और उद्देश्यपूर्ण ढंग से देता है।

■ **यह नई पीढ़ी बिना रोक-टोक की आज़ादी और अपनी मर्ज़ी ज़िंदगी जीने को बहुत ज़रूरी मानती है। उन्हें वास्तविक आज़ादी कीअवधारणा कैसे समझाई जा सकती है?**

पहले स्वतंत्रता के अर्थ, उसकी प्रकृति और सीमाओं पर विचार करना आवश्यक है। हर व्यक्ति अपनी पसंद से जीवन जीना चाहता है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या निरपेक्ष और असीमित स्वतंत्रता वास्तव में संभव है? यदि प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी सीमा के अपनी हर इच्छा पूरी करने की स्वतंत्रता दे दी जाए, तो उसकी स्वतंत्रता स्वाभाविक रूप से दूसरे व्यक्ति के अधिकारों से टकराएगी। इसलिए वास्तविक जीवन में हर व्यक्ति और हर समाज को किसी न किसी प्रकार की सीमाएँ स्वीकार करनी ही पड़ती हैं। असली प्रश्न यह है कि ये सीमाएँ कैसी हों और इन्हें निर्धारित करने का अधिकार किसके पास हो।

मनुष्य द्वारा बनाई गई सीमाएँ सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक हो सकती हैं, लेकिन वे हमेशा न्यायपूर्ण नहीं होतीं। इतिहास में मनुष्य ने क़ानूनों, सामाजिक मान्यताओं और सत्ता के माध्यम से दूसरों पर प्रभुत्व और शोषण भी किया है। इस्लाम इस प्रश्न का उत्तर अल्लाह की सर्वोच्च संप्रभुता के सिद्धांत से देता है। अंतिम सत्ता और अधिकार अल्लाह का है और उसी ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा और चुनाव की क्षमता प्रदान की है। इसलिए मनुष्य स्वतंत्र है, लेकिन उसकी स्वतंत्रता निरंकुश नहीं है; वह अपने चुनावों के लिए अल्लाह के सामने उत्तरदायी भी है।

यहाँ संवाद का एक महत्वपूर्ण बिंदु यह होना चाहिए कि जब सीमाएँ अपरिहार्य हैं, तो सबसे न्यायपूर्ण और मानव-हितकारी सीमाएँ कौन निर्धारित कर सकता है? इस्लामी दृष्टि

कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें!

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

में मनुष्य के सृष्टिकर्ता और उसकी प्रकृति को सबसे बेहतर जानने वाला अल्लाह ही ऐसी सीमाएँ निर्धारित कर सकता है जो उसकी वास्तविक भलाई, गरिमा और स्वतंत्रता की रक्षा करें। इसलिए अल्लाह द्वारा निर्देशित सीमाएँ स्वतंत्रता का विरोध नहीं, बल्कि स्वतंत्रता को सही दिशा और उद्देश्य देने वाली सीमाएँ हैं। मनुष्य जब अपनी इच्छा से अपने सृष्टिकर्ता की आज्ञा स्वीकार करता है, तो वह मनुष्यों की मनमानी सत्ता, इच्छाओं और अनुचित प्रभुत्व से मुक्त होता है। ऐसी स्वतंत्रता व्यक्ति के भीतर संतुलन, आत्म-अनुशासन और गरिमा पैदा करती है तथा समाज में न्याय, शांति और पारस्परिक अधिकारों की रक्षा का आधार बनती है।

इस प्रकार Gen Z के साथ चर्चा केवल इस प्रश्न तक सीमित नहीं रहनी चाहिए कि "इस्लाम कितनी स्वतंत्रता देता है?" बल्कि यह भी दिखाना चाहिए कि "पूर्ण स्वतंत्रता क्यों संभव नहीं है?" "हर व्यवस्था को किन्हीं सीमाओं की आवश्यकता क्यों पड़ती है?" और "उन सीमाओं को निर्धारित करने के लिए सबसे विश्वसनीय आधार क्या हो सकता है?" इन प्रश्नों पर गंभीर और खुले संवाद के माध्यम से यह समझाया जा सकता है कि इस्लाम की स्वतंत्रता व्यक्ति की इच्छा को नकारती नहीं, बल्कि उसे नैतिक ज़िम्मेदारी, मानवीय गरिमा, न्याय और अंतिम सफलता से जोड़ती है।

■ **जेन ज़ी सेक्स, प्यार, शादी, पर्दा, महिलाओं की आज़ादी, LGBTQ+, धार्मिक आज़ादी और दूसरे सेंसिटिव टॉपिक पर सवाल उठाती हैं। ऐसे टॉपिक पर इस्लामिक राय रखते समय भाषा और स्टाइल में क्या ध्यान रखना चाहिए?**

जी, यह बात सही है कि Gen Z सेक्स, प्रेम, विवाह, पर्दा, स्त्री की स्वतंत्रता, LGBTQ+ और धार्मिक स्वतंत्रता जैसे संवेदनशील विषयों पर सीधे और बेझिझक प्रश्न उठाती है। इन विषयों पर इस्लामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते समय सबसे पहले यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस्लाम के विभिन्न आदेश और नैतिक निर्देश अलग-अलग और मनमाने नियमों का संग्रह नहीं हैं। वे एक समग्र और तार्किक जीवन-व्यवस्था का हिस्सा हैं जिसमें मनुष्य, उसकी गरिमा, स्वतंत्रता, परिवार, समाज और नैतिक ज़िम्मेदारी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसलिए किसी एक आदेश को उसके व्यापक संदर्भ से अलग करके प्रस्तुत करने से न केवल उसकी वास्तविक भावना और उद्देश्य समझना कठिन हो जाता है, बल्कि ग़लतफ़हमियों की संभावना भी बढ़ जाती है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि इन संवेदनशील विषयों को समझने के लिए इस्लामी आस्था की बुनियादी धारणाओं का स्पष्ट होना आवश्यक है, विशेषकर अल्लाह के एक होने, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की रिसालत और आख़िरत में जवाबदेही पर ईमान। जब व्यक्ति इन मूल सिद्धांतों को स्वीकार करता है,तो इस्लामी नैतिक शिक्षाओं के पीछे की बुद्धिमत्ता और उद्देश्य को समझना उसके लिए सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए, विवाह और यौन संबंधों से जुड़े इस्लामी निर्देशों या हया की अवधारणा को समझने के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस्लाम मनुष्य, उसकी इच्छाओं, उसके उद्देश्य और उसकी अंतिम जवाबदेही को किस व्यापक दृष्टि से देखता है। इसके विपरीत, यदि इन मूल मान्यताओं को स्वीकार ही न किया गया हो, तो किसी विशेष नैतिक निर्देश के पीछे की तत्वदर्शिताको समझाना स्वाभाविक रूप से ज़्यादा कठिन होगा।

इसलिए यदि कोई युवा तलाक़, परदा, विवाह, या समलैंगिकता जैसे किसी विषय पर इस्लामी दृष्टिकोण के पीछे की बुद्धिमत्ता को तुरंत स्वीकार न कर पाए, तो हमारा पहला उत्तर नाराज़गी नहीं, बल्कि धैर्य और संवाद होना चाहिए। हमें इस्लामी स्थिति को ईमानदारी से सामने रखना चाहिए, लेकिन साथ ही बातचीत को उन मूल प्रश्नों की ओर ले जाने का प्रयास करना चाहिए जिनसे ये नैतिक शिक्षाएँ निकलती हैं। इसका अर्थ किसी कठिन प्रश्न से बचना नहीं, बल्कि उसे उसके उचित वैचारिक संदर्भ में रखना है।

■ **Gen Z की एक बड़ी संख्या TikTok, Instagram, YouTube, Podcasts और दूसरे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मौजूद हैं। क्या इस्लाम की दावत को भी इन प्लेटफॉर्म पर उसी तरह मौजूद होना चाहिए?**

हाँ, निस्संदेह इस्लामी दावत को वहाँ उपस्थित होना चाहिए जहाँ Gen Z मौजूद है। यदि आज बड़ी संख्या में युवा Instagram, YouTube, TikTok, Podcasts और अन्य डिजिटल माध्यमों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं, प्रश्न पूछते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो दावत को इन माध्यमों से अलग रखना व्यावहारिक रूप से अपनी बात को उनसे दूर रखना होगा, जो उचित नहीं है।

लेकिन केवल माध्यम बदलना पर्याप्त नहीं है; संवाद की शैली को भी समझना होगा। इन प्लेटफ़ॉर्मों की प्रकृति

और उनकी संचार-शैली को अपनाते हुए भी अपने इस्लामी मूल्यों और नैतिक सीमाओं से समझौता न करना ही वास्तविक चुनौती है। इस्लामी दावत को सोशल मीडिया की सतही प्रवृत्तियों की नक़ल करने के बजाय उसकी प्रकृति को समझना चाहिए — संक्षिप्त और आकर्षक प्रस्तुति, दृश्य माध्यमों का प्रभावी उपयोग (visual storytelling), वास्तविक जीवन के प्रश्न, संवाद, प्रश्नोत्तर तथा विश्वसनीय और प्रामाणिक वक्ता।

साथ ही यह बात स्पष्ट रहनी चाहिए कि सोशल मीडिया पुस्तकों, गहन अध्ययन और शोध का विकल्प नहीं है। गंभीर साहित्य और मूल स्रोतों के अध्ययन का अपना महत्व है और उस पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। सोशल मीडिया की भूमिका मुख्यतः यह हो सकती है कि छोटे और प्रभावी प्रस्तुतिकरण के माध्यम से किसी गंभीर प्रश्न की ओर ध्यान आकर्षित किया जाए, जिज्ञासा पैदा की जाए और आगे के गहन अध्ययन का द्वार खोला जाए। इस प्रकार डिजिटल दावत वैचारिक गहराई का विकल्प नहीं, बल्कि उस गहराई तक पहुँचने का माध्यम बन सकती है।

■ आज का युवा किसी धार्मिक विद्वान की तुलना में किसी इन्फ्लुएंसर या कंटेंट क्रिएटर से ज़्यादा प्रभावित होता है। आप इस स्थिति को कैसे देखते हैं?

हमें पसंद आए या न आए, यह एक तथ्य है कि आज Gen Z के लिए प्रभाव और प्राधिकार (authority) केवल उम्र, पद या औपचारिक योग्यता से निर्धारित नहीं होते। जो व्यक्ति उसकी भाषा में बात करता है, उसके प्रश्नों को समझता है और डिजिटल माध्यमों पर लगातार उपस्थित रहता है, वह उनके लिए अधिक प्रभावशाली हो जाता है। इसे केवल समस्या और चुनौती के रूप में देखने के बजाय दावत के लिए एक नए अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है।

अच्छे आलिमे-दीन और विद्वानों के लिए भी सोशल मीडिया के दरवाज़े खुले हुए हैं। उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए इन माध्यमों पर आगे आना चाहिए। जब प्रामाणिक और अप्रामाणिक दोनों प्रकार की आवाज़ें युवाओं के सामने समान रूप से उपलब्ध होंगी, तो विवेकशील युवा के पास प्रामाणिक आवाज़ को पहचानने और प्राथमिकता देने का अवसर भी होगा। हमें प्रसिद्ध YouTubers और Content Creators के साथ प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं है; हमारा फ़ोकस ज्ञान, विश्वसनीयता, संवाद-कौशल और प्रामाणिकता पर होना चाहिए

साथ ही, युवाओं में यह क्षमता विकसित करना भी आवश्यक है कि वे किसी Influencer की बात को केवल उसकी लोकप्रियता के आधार पर स्वीकार न करें, बल्कि प्रश्न करें, स्रोतों की जाँच करें और तर्क के आधार पर अपनी राय बनाएँ। डिजिटल सामग्री के साथ पुस्तकों, मूल और प्रामाणिक स्रोतों तथा गहन अध्ययन की आदत विकसित करना भी उतना ही आवश्यक है। उद्देश्य युवा को स्क्रीन से काट देना नहीं, बल्कि उसे स्क्रीन की ग़ुलामी से मुक्त कराकर सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण उपभोक्ता बनाना है। ■■

लघुकथा

वर्चुअल लाइफ़, रियल लाइफ़

आरव अपने कॉलेज का एक लोकप्रिय ब्लॉगर था। उसका पूरा दिन फ़ोन के कैमरे, वीडियो एडिटिंग और सोशल मीडिया के 'लाइक्स' और 'कमेंट्स' गिनने में बीतता था। धीरे-धीरे उसे वर्चुअल दुनिया की ऐसी लत लगी कि वह अपने सामने बैठे असली दोस्तों और माता-पिता को नज़रअंदाज़ करने लगा।

एक दिन, कॉलेज के पास की बस्ती में भीषण आग लग गई। आरव तुरंत अपना कैमरा लेकर वहां पहुंच गया। उसने देखा कि चारों तरफ़ चीख़-पुकार मची है। एक ग़रीब महिला रोते हुए अपने बच्चे को बचाने की गुहार लगा रही थी। आरव के अंदर का कंटेंट क्रिएटर जाग उठा; वह मदद करने के बजाय उस दृश्य की लाइव स्ट्रीमिंग करने लगा ताकि उसकी वीडियो वायरल हो सके।

तभी उसके कॉलेज का एक साधारण छात्र, कबीर, अपनी जान की परवाह किए बिना धुएं के ग़ुबार में कूद गया और रोते हुए बच्चे को सुरक्षित बाहर निकाल लाया। वहां मौजूद सभी लोगों ने कबीर के साहस की सराहना की। आरव ने यह सब लाइव रिकॉर्ड तो कर लिया और उसकी वीडियो पर लाखों व्यूज भी आ गए, लेकिन कमेंट बॉक्स में लोग कबीर की तारीफ़ कर रहे थे और आरव को असंवेदनशील कहकर उसकी आलोचना कर रहे थे। आरव को अपनी ग़लती का एहसास हुआ। उसने समझा कि स्क्रीन पर दिखने वाली लोकप्रियता झूठी हो सकती है, लेकिन इंसानियत और वास्तविक जीवन में की गई मदद ही सच्ची पहचान होती है।

समाधान

Gen-Z की परवरिश और उन्हें समझने के दस मूल नियम

❖डॉ. जावेद इक़बाल

[आज के दौर में हर दूसरे घर में माता-पिता इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि Gen-Z (डिजिटल युग की नई पीढ़ी) के बच्चों से कैसे संवाद स्थापित करें और उनकी परवरिश किस प्रकार करें। इस संदर्भ में प्रोफ़ेसर डॉ. जावेद इक़बाल ने दस महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला है, जो माता-पिता और बच्चों के बीच के रिश्ते को मज़बूत बनाने में सहायक हो सकते हैं—संपादक]

1. भय से मुक्ति : बच्चों के ग़ैर-पारंपरिक करियर (जैसे SEO, डेटा साइंस, डिजिटल मार्केटिंग) को लेकर मन से डर निकालें। यह पीढ़ी पारंपरिक पढ़ाई के बजाय नए रास्तों पर चलकर भी सफल हो सकती है।

2. सकारात्मक संबंध बनाना : बच्चों के साथ लगातार मतभेद या विरोध का माहौल न रखें। उन्हें यह एहसास कराएं कि माता-पिता उनके जीवन में मूल्य जोड़ रहे हैं, केवल नसीहतें नहीं दे रहे हैं।

3. पहले सुनें, फिर समझाएं : बच्चों की बातें ध्यानपूर्वक सुनें। जब तक वे अपने मन की बात पूरी तरह न कह लें, तब तक अपनी राय या उपदेश उन पर न थोपें।

4. आदर का आदान-प्रदान : सम्मान दोनों तरफ़ से होता है। यदि आप बच्चे को आदर देंगे, तो बदले में आपको भी सम्मान मिलेगा। केवल अधिकार जताकर सम्मान हासिल नहीं किया जा सकता।

5. स्वयं आदर्श (रोल मॉडल) बनें : जिन आदतों की उम्मीद आप बच्चों से करते हैं (जैसे किताबें पढ़ना, समय पर सोना, व्यायाम करना), उन्हें पहले ख़ुद अपने आचरण में शामिल करें।

6. सकारात्मक पारिवारिक संस्कृति (तहज़ीब) : घर में ऐसा माहौल बनाएं जहाँ प्यार, सहयोग, हँसी-मज़ाक़ और एक साथ समय बिताने के मौक़े हों।

7. तकनीक का विकल्प दें : मोबाइल छीनने या पाबंदी लगाने के बजाय घर में खेल, कहानियाँ, सामाजिक गतिविधियाँ और सामूहिक पठन जैसे विकल्प उपलब्ध कराएं।

8. ज़िम्मेदारी का एहसास : बच्चों को घर के दैनिक और आर्थिक कार्यों में शामिल करें ताकि वे आत्मनिर्भर और ज़िम्मेदार बन सकें।

9. निरंतर टोका-ताकी से बचें : हर छोटी बात पर बच्चे को सुधारने की कोशिश न करें। कुछ बातों को नज़रअंदाज़ करना भी ज़रूरी है।

10. धैर्य और निरंतरता : चरित्र-निर्माण एक मैराथन की तरह है। बच्चों में सकारात्मक बदलाव रातों-रात नहीं आता, इसके लिए लंबे समय तक धैर्य बनाए रखना पड़ता है।

माता-पिता को चाहिए कि वे प्रतिदिन कम से कम 20 मिनट बच्चों के साथ बिना किसी उपदेश या नसीहत के सामान्य बातचीत करें, ताकि आपसी समझ और संबंध और अधिक मज़बूत हो सकें। ■■

नहीं है नाउम्मीद इक़बाल अपनी किश्ते वीराँ से
ज़रा नम हो तो यह मिट्टी बड़ी ज़रख़ेज़ है साक़ी

इक़बाल अपने बंजर खेतों से निराश नहीं है, अगर इसे थोड़ा सिंचित किया जाए, तो यह मिट्टी बहुत उपजाऊ है।

यह शेअर अल्लामा इक़बाल की इस उम्मीद और विश्वास को दिखाता है कि अगर थोड़ी मेहनत की जाए, तो बंजर दिखाई पड़ने वाली यह ज़मीन (नई पीढ़ी) बहुत उपजाऊ (सफल और जनहित में काम करने वाली) बन सकती है। यह शेअर देश के विकास और आत्मविश्वास की ओर इशारा करता है और हिम्मत देता है कि मेहनत और कोशिश से कोई भी समस्या हल की जा सकती है।

किश्ते वीराँ — बंजर खेत
ज़रख़ेज़ — उपजाऊ

“

जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्मों का सिलसिला टूट जाता है। अलबत्ता तीन चीज़ें ऐसी हैं जो इससे अलग हैं- जारी रहने वाला सदक़ा या ज्ञान जिससे फ़ायदा उठाया जाए, या नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे।

(हदीस : मुस्लिम)

”

A Well Wisher

Jamaat Islami Hind
Daltonganj, Jharkhand

विश्व घटनाचक्र

‘क़ुरआन केवल मुसलमानों के लिए नहीं, हर कोई पढ़ सकता है’— बसवराज रायरेड्डी



कर्नाटक के उच्च शिक्षा मंत्री बसवराज रायरेड्डी ने कहा है कि क़ुरआन केवल मुसलमानों के लिए नहीं है, बल्कि कोई भी व्यक्ति उसे पढ़ सकता है। उन्होंने कहा कि इस्लाम को लेकर समाज में कई ग़लतफ़हमियाँ फैलाई जा रही हैं और वे स्वयं क़ुरआन का अध्ययन करने के लिए तैयार हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित सामूहिक निःशुल्क विवाह समारोह में शामिल होते हुए रायरेड्डी ने इस्लाम को “महान धर्म” बताया। उन्होंने कहा कि लोगों को विभिन्न धर्मों का अध्ययन करना चाहिए और उनके पीछे के इतिहास को समझना चाहिए। रायरेड्डी ने इस्लाम को वैज्ञानिक प्रकृति वाला धर्म बताते हुए कहा कि यह इंसान को जीवन जीने का तरीक़ा सिखाता है। इस अवसर पर उन्होंने धार्मिक कट्टरता और जातिवाद से बचने की भी अपील की।

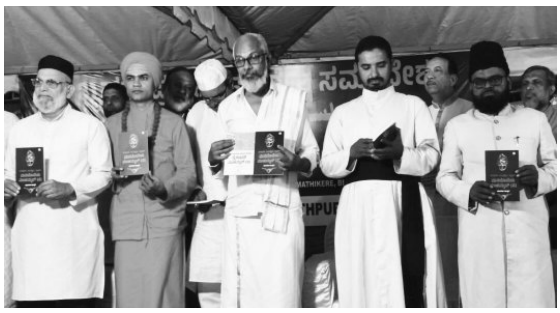
मंत्री बसवराज रायरेड्डी के वक्तव्य का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने धर्म को केवल धार्मिक पहचान तक सीमित न रखकर उसके अध्ययन और उसकी शिक्षाओं को समझने की आवश्यकता पर बल दिया। धार्मिक ग्रंथों को पूर्वाग्रहों के बजाय अध्ययन और समझ के दृष्टिकोण से देखने की ज़रूरत है। बहुधार्मिक समाज में एक-दूसरे के धर्म और परंपराओं को समझना आपसी अविश्वास कम करने का प्रभावी माध्यम हो सकता है। आज के समय में जब धर्म के नाम पर विभाजन की राजनीति ज़ोर पकड़ रही है, हमारे जनप्रतिनिधियों की ओर से ऐसे सकारात्मक सार्वजनिक वक्तव्यों की नितांत आवश्यकता है।

धर्म काटने का नहीं, जोड़ने का काम करे

बेंगलुरु में गत दिनों आयोजित सीरत (पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. का जीवन-चरित्र) सम्मेलन का सबसे महत्वपूर्ण संदेश शायद यही है कि धर्म मनुष्यों के बीच दीवारें खड़ी करने का नहीं, टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने का माध्यम बने। सम्मेलन में स्वामी, फ़ादर और मौलाना का एक मंच पर आना स्वयं इस संदेश का प्रतीक है कि धार्मिक विविधता टकराव का कारण नहीं, संवाद और सद्भाव की ताक़त बन सकती है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) की सीरत को ज्ञान, नैतिकता, न्याय, करुणा और मानव गरिमा की रौशनी में प्रस्तुत करना आज इसलिए अधिक प्रासंगिक है क्योंकि हमारा समाज अनेक प्रकार के विभाजनों से गुज़र रहा है। जाति, धर्म, भाषा और विचारधारा के नाम पर बढ़ती दूरियाँ केवल सामाजिक ताने-बाने को कमज़ोर नहीं करतीं, बल्कि मनुष्य के भीतर मौजूद संवेदना को भी कुंद करती हैं। ऐसे वातावरण में धर्म का वास्तविक दायित्व लोगों को जोड़ना है।

इस अवसर पर फ़ादर हैन्स जॉन की कैंची और सुई की उपमा विशेष रूप से विचारणीय है। कैंची काटती है, जबकि



छोटी-सी सुई बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़ देती है। यदि धर्म मनुष्य को मनुष्य से दूर करे, नफ़रत को बढ़ाए और अहंकार को धार्मिक आवरण प्रदान करे, तो उसके मूल उद्देश्य पर गंभीर प्रश्न खड़े होते हैं। इसके विपरीत, जो धार्मिक चेतना व्यक्ति को अपने भीतर सुधार, दूसरे के प्रति सम्मान और पीड़ित के प्रति करुणा के लिए प्रेरित करे, वही समाज के लिए सार्थक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि धर्म को पहचान की दीवार नहीं, इंसानियत का पुल बनाया जाए। यही सीरत की सबसे ख़ूबसूरत और सबसे ज़रूरी सीख है।

विश्व घटनाचक्र

नेपाल त्रासदी : मदद के लिए पहुंची जमाअत इस्लामी हिन्द की टीम

नेपाल में हुई भीषण त्रासदी ने एक बार फिर यह याद दिलाया है कि प्राकृतिक आपदाएँ देश की सीमाओं, धर्मों और राष्ट्रीयताओं का भेद नहीं करतीं। ऐसी विपत्ति के समय सबसे बड़ी आवश्यकता मानवीय संवेदना और त्वरित सहायता की होती है। जमाअत इस्लामी हिन्द के उपाध्यक्ष प्रोफेसर मुहम्मद सलीम इंजीनियर का नेपाल की जनता के साथ खड़े होने और हर संभव सहायता का प्रयास करने का आश्वासन इसी मानवीय भावना का परिचायक है। जमाअत इस्लामी हिन्द के सेक्रेट्री मौलाना शफ़ी मदनी के नेतृत्व में एक टीम ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में पहुंचकर राहत कार्य शुरू किया।

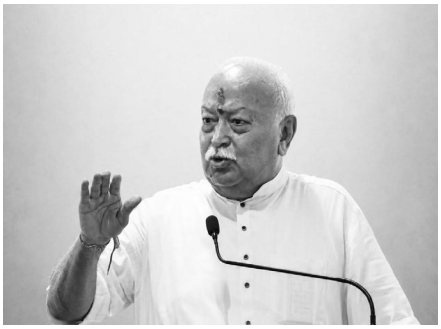
आपदा के शुरुआती घंटों में सामने आने वाली मृतकों की संख्या अक्सर पूरी तस्वीर नहीं होती। मलबे में फँसे लोगों की तलाश, घायलों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना, विस्थापित परिवारों के लिए भोजन और आश्रय की व्यवस्था तथा प्रभावित क्षेत्रों तक राहत सामग्री पहुँचाना तत्काल



प्राथमिकताएँ होती हैं। ऐसे समय में स्थानीय प्रशासन और स्वयंसेवी संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय राहत कार्यों को अधिक प्रभावी बना सकता है। नेपाल की त्रासदी में भारतीय नागरिकों और विदेशी पर्यटकों के प्रभावित होने की आशंका भी क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित करती है। सीमाओं से परे बढ़ाया गया मदद का हाथ न केवल पीड़ितों का सहारा बनता है, बल्कि पड़ोसी देशों के बीच विश्वास और मानवीय रिश्तों को भी मज़बूत करता है।

अमेरिका में भागवत : कथनी से आगे, करनी की कसौटी पर

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत का न्यूयॉर्क में यह कहना कि "अगर कोई हिंदू यह सोचता है कि भारत में मुस्लिम नहीं होने चाहिए, तो फिर वह हिंदू नहीं है" निस्संदेह स्वागतयोग्य बात है। बहुलतावादी भारत में किसी समुदाय के अस्तित्व को नकारना न तो लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप है और न ही देश की उस साझी संस्कृति के, जिसने सदियों से विविधताओं को साथ लेकर चलने की कोशिश की है। भागवत ने पहले भी अलग-अलग अवसरों पर इसी तरह के विचार व्यक्त किए हैं। ऐसे वक्तव्यों को सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जाना चाहिए।



लेकिन सवाल केवल यह नहीं है कि क्या कहा गया, बल्कि यह भी है कि कहा हुआ ज़मीन पर कितना दिखाई देता है। किसी संगठन या उसके नेतृत्व की विश्वसनीयता उसके भाषणों से कम और उसके व्यवहार से अधिक तय होती है। यही वह कसौटी है जिस पर भागवत के इस संदेश को भी परखा जाना चाहिए।

भारत में मुसलमानों के सम्मान और समानता की स्वीकार्यता केवल मंचों और विदेशों में दिए गए भाषणों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। इसे सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार में भी दिखाई देना चाहिए। नफ़रत फैलाने वाली भाषा, धार्मिक ध्रुवीकरण, अल्पसंख्यकों के प्रति अविश्वास और उन्हें लगातार संदेह की निगाह से देखने वाली प्रवृत्तियों के विरुद्ध भी उतनी ही स्पष्ट आवाज़ सुनाई देनी चाहिए।

भागवत जी का बयान इसलिए महत्वपूर्ण है कि वह एक सही दिशा की ओर संकेत करता है। लेकिन दिशा बताने और उस दिशा में चलने के बीच बड़ा अंतर होता है। अब असली परीक्षा यही है कि यह संदेश आरएसएस और उससे जुड़े सामाजिक-राजनीतिक व्यवहार में कितना उतरता है। देश को आश्वासन नहीं, उसके अनुरूप आचरण चाहिए। आख़िरकार, किसी भी विचार की विश्वसनीयता उसकी कथनी नहीं, करनी तय करती है।

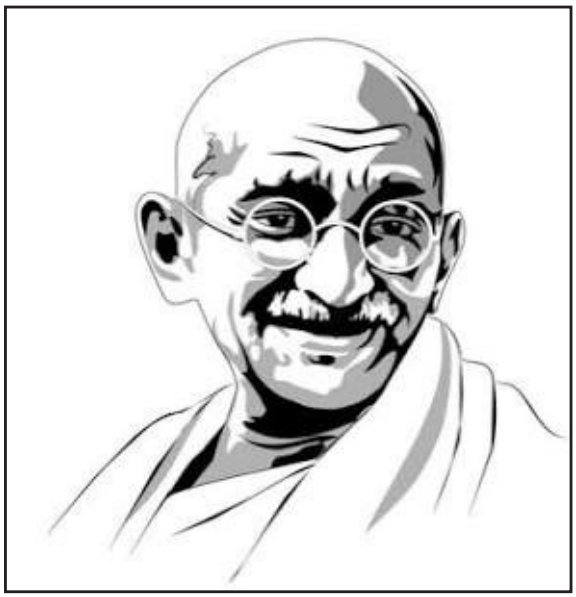
गांधी जयंती पर विशेष

गांधी जी का चिंतन और आज का भारत

❖संपादन प्रभाग

गांधी जी का चिंतन उस समय विकसित हुआ जब भारत विदेशी शासन, आर्थिक शोषण, सामाजिक भेदभाव और ग़रीबी से जूझ रहा था। आज परिस्थितियां बहुत बदल चुकी हैं। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि क्या गांधी जी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं? क्या अहिंसा, स्वदेशी, ग्राम स्वराज, सादगी और छोटे उद्योगों पर आधारित उनकी आर्थिक सोच आधुनिक औद्योगिक और डिजिटल भारत में उपयोगी हो सकती है?

इसका उत्तर सीधा 'हां' या 'नहीं' में देना उचित नहीं होगा। गांधी जी के कुछ विचारों को उसी रूप में लागू करना आज कठिन हो सकता है, लेकिन उनके मूल सिद्धांत आज भी भारत की अनेक समस्याओं का समाधान सुझाते हैं। वास्तव में आवश्यकता गांधी जी के विचारों को ज्यों का त्यों अपनाने की नहीं, बल्कि उन्हें आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप समझने और लागू करने की है।



अहिंसा और संघर्ष के बीच शांति का मार्ग

गांधी जी के लिए अहिंसा केवल हिंसा न करने का नाम नहीं थी, बल्कि यह विरोधी के प्रति भी मानवता और सम्मान बनाए रखने की जीवन-पद्धति थी। उन्होंने दिखाया कि बिना हथियार उठाए भी अन्याय और साम्राज्यवाद का मुक़ाबला किया जा सकता है।

आज दुनिया आतंकवाद, युद्ध, साम्प्रदायिक तनाव, राजनीतिक कटुता और सामाजिक टकराव जैसी समस्याओं से जूझ रही है। भारत भी समय-समय पर सामाजिक और राजनीतिक तनाव का सामना करता है। ऐसे वातावरण में गांधी जी की अहिंसा की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

लोकतंत्र में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन मतभेद को दुश्मनी में बदल देना लोकतांत्रिक संस्कृति को कमज़ोर करता है। सोशल मीडिया के दौर में भाषा की हिंसा, अफ़वाहें और नफ़रत तेज़ी से फैल सकती हैं। गांधी जी का सत्य, संयम और अहिंसक संवाद का सिद्धांत इस चुनौती का महत्वपूर्ण उत्तर हो सकता है। इसलिए यह कहना ग़लत होगा कि अहिंसा पुराना विचार है। आधुनिक समाज में हिंसा के रूप बदल गए हैं, इसलिए अहिंसा की आवश्यकता भी नए रूप में सामने आई है।

स्वदेशी : आत्मनिर्भरता से वैश्विक प्रतिस्पर्धा तक

गांधी जी ने स्वदेशी को केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं माना था। उनके लिए स्वदेशी का अर्थ था—अपने आसपास के लोगों, स्थानीय संसाधनों और स्थानीय उत्पादन को महत्व देना तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना। गांधी जी के स्वदेशी का अर्थ आज विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार नहीं, बल्कि ऐसी आत्मनिर्भरता होना चाहिए जिसमें भारत अपनी उत्पादन क्षमता, तकनीक और कौशल को मज़बूत करे तथा विश्व बाज़ार में प्रतिस्पर्धा कर सके।

भेदभाव रहित समाज : गांधी जी का सामाजिक सपना

गांधी जी के चिंतन का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक समानता था। उन्होंने अस्पृश्यता, ऊंच-नीच, छूत-छात के ख़िलाफ़ संघर्ष किया और समाज के कमज़ोर तथा वंचित वर्गों के सम्मान और अधिकार की बात की।

आज संविधान ने समानता और भेदभाव-विरोधी सिद्धांतों को क़ानूनी आधार दिया है, लेकिन सामाजिक जीवन में जाति, वर्ग, लिंग, धर्म और आर्थिक स्थिति के आधार पर असमानताएं और कहीं-कहीं भेद-भाव आज भी दिखाई देते हैं।

गांधी जी का सपना ऐसा समाज था जिसमें व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसकी जाति या जन्म से नहीं बल्कि उसके इनसान होने के कारण हो। आज जब समावेशी विकास, सामाजिक न्याय और समान अवसर की चर्चा हो रही है, तब उनका यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है।

सिर्फ़ क़ानून बनाकर भेदभाव समाप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए सामाजिक सोच में बदलाव भी आवश्यक है। गांधी जी का जीवन इस बात पर जोर देता है कि सामाजिक सुधार केवल सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं बल्कि नागरिक समाज की भी ज़िम्मेदारी है।

गांधी जी का आर्थिक चिंतन

गांधी जी आधुनिक अर्थव्यवस्था की उस दिशा को लेकर चिंतित थे जिसमें उत्पादन और उपभोग की असीमित दौड़ मनुष्य और प्रकृति दोनों को नुक़सान पहुंचा सकती है। उनका आर्थिक चिंतन मनुष्य-केंद्रित था।

उनका 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत कहता था कि संपत्ति रखने वाले व्यक्ति को समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए। धन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विलासिता नहीं बल्कि समाज के कल्याण में भी योगदान देना होना चाहिए।

आज भारत में आर्थिक विकास तेज़ी से हो रहा है, लेकिन इसके साथ आर्थिक असमानता, बेरोज़गारी, पर्यावरणीय संकट और संसाधनों के असमान वितरण जैसे प्रश्न भी सामने हैं। ऐसे समय में गांधी जी का विचार हमें याद दिलाता है कि आर्थिक विकास का अंतिम उद्देश्य केवल सकल घरेलू उत्पाद बढ़ाना नहीं, बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता बेहतर करना होना चाहिए।

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सामाजिक उद्यमिता, ज़िम्मेदार व्यवसाय और सतत विकास जैसे आधुनिक विचारों में गांधी जी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत की कुछ झलक दिखाई देती है।

पर्यावरण और सादगी

गांधी जी ने आधुनिक उपभोक्तावाद के ख़तरे को बहुत पहले समझ लिया था। उनका जीवन सादगी, सीमित आवश्यकताओं और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का उदाहरण था।

आज जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल संकट, प्लास्टिक कचरा और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी समस्याएं हमारे सामने हैं। ऐसे समय में गांधी जी का 'कम में संतोष' और ज़रूरत तथा लालच के बीच अंतर करने का विचार महत्वपूर्ण हो जाता है।

आज पूरी दुनिया 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' अर्थात सतत विकास की बात कर रही है। विकास ऐसा हो जो वर्तमान पीढ़ी की जरूरतें पूरी करे, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों को नुक़सान न पहुंचाए। गांधी जी का सादगीपूर्ण जीवन इस विचार के लिए प्रेरणा दे सकता है।

गांधी जी का भारत आज़ादी के पहले का भारत था, जबकि आज का भारत इक्कीसवीं सदी का भारत है। दोनों की आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी परिस्थितियों में बहुत अंतर है। इसलिए गांधी जी के विचारों को बिना परिवर्तन के लागू करना संभव भी नहीं है और आवश्यक भी नहीं। लेकिन उनके विचारों की आत्मा आज भी जीवित है।

भारत को यदि ऐसा विकास चाहिए जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक न्याय हो, तकनीकी विकास के साथ मानवीय संवेदना हो, रोज़गार के साथ श्रम का सम्मान हो, आत्मनिर्भरता के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा हो और विकास के साथ पर्यावरण की रक्षा हो, तो गांधी जी का चिंतन आज भी मार्गदर्शन कर सकता है।

इसलिए गांधी जी अप्रासंगिक नहीं हुए हैं; बल्कि बदलती परिस्थितियों में उनकी प्रासंगिकता को नए ढंग से समझने की आवश्यकता है। आज के भारत को गांधी जी का अतीत नहीं, बल्कि उनके मूल्यों का आधुनिक रूप चाहिए।

गांधी जी का संदेश शायद आज भी यही है कि विकास की दौड़ में मनुष्य को पीछे नहीं छूटना चाहिए। आर्थिक समृद्धि तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, स्वतंत्रता तभी पूर्ण है जब हर व्यक्ति सम्मान के साथ जी सके और शक्ति तभी सार्थक है जब उसका प्रयोग मानवता के हित में हो। इसी दृष्टि से देखा जाए तो आधुनिक भारत में गांधी जी के विचार इतिहास के पन्नों में बंद कोई पुरानी विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के भारत के लिए एक नैतिक दिशा-सूचक हैं। ■■

त्योहार तथा पर्व

❖संपादन प्रभाग

मानव जीवन में त्योहारों और पर्वों का विशेष स्थान है, जो समाज में हर्षोल्लास तथा एकता का संचार करते हैं। ये केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर, नैतिक मूल्यों और सामाजिक ताने-बाने को अक्षुण्ण रखने के सशक्त माध्यम हैं। जहाँ एक ओर ये पर्व सामूहिक ख़ुशी का कारण बनते हैं, वहीं कभी-कभी असामाजिक तत्वों या कुप्रथाओं के कारण ये विवाद का रूप भी ले लेते हैं। अतः इनके पवित्र स्वरूप को बनाए रखने के लिए एक निश्चित आचार संहिता की आवश्यकता महसूस होती है। इन्हीं बिंदुओं पर यहां एक संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत है।

'त्योहार' शब्द संस्कृत के 'तिथिहार' या 'उत्सव' से प्रेरित माना जाता है, जिसका अर्थ होता है वह दिन जो दैनिक दिनचर्या से अलग, किसी विशेष तिथि या घटना की ख़ुशी में मनाया जाए। वहीं 'पर्व' का शाब्दिक अर्थ 'गांठ' या 'जोड़' होता है। जैसे बांस की गांठें उसे मज़बूती देती हैं, वैसे ही जीवन के कालचक्र में आने वाले ये पर्व मानव जीवन को सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जोड़कर उसे मज़बूती प्रदान करते हैं। अरबी शब्द 'ईद' का हिंदी में मुख्य अर्थ 'पर्व', 'त्योहार' या 'उत्सव' ही होता है। धार्मिक पर्वों का सीधा संबंध किसी विशेष आध्यात्मिक दर्शन से होता है (जैसे- शिवरात्रि, ईद, ईस्टर), जबकि त्योहारों में सांस्कृतिक और मौसमी रंग अधिक मुखर होते हैं (जैसे- होली, ओणम, बैसाखी)।

'त्योहार' शब्द संस्कृत के 'तिथिहार' या 'उत्सव' से प्रेरित माना जाता है, जिसका अर्थ होता है वह दिन जो दैनिक दिनचर्या से अलग, किसी विशेष तिथि या घटना की ख़ुशी में मनाया जाए। वहीं 'पर्व' का शाब्दिक अर्थ 'गांठ' या 'जोड़' होता है।

सामाजिक जीवन में त्योहारों तथा पर्वों का महत्व

इनसान एक सामाजिक प्राणी है और त्योहार उसके सामाजिक जीवन को जीवंत बनाए रखने वाले मुख्य तत्व हैं। त्योहार जाति, वर्ग और लिंग के भेदों को मिटाकर लोगों को एक मंच पर लाते हैं। सामूहिक रूप से मनाए जाने वाले उत्सवों से आपसी भाईचारा बढ़ता है। त्योहारों के माध्यम से संसकार और कलाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती हैं।

दैनिक जीवन की नीरसता और तनाव से मुक्ति दिलाने में त्योहार 'स्ट्रेस बस्टर' का काम करते हैं। ये जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। पर्वों के दौरान बाज़ारों में रौनक़ बढ़ जाती है। नए कपड़े, सजावट का सामान, मिठाइयां और मिट्टी के दीये बनाने वाले छोटे कारीगरों से लेकर बड़े व्यापारियों तक, सभी को रोजगार और आर्थिक लाभ मिलता है।

हर त्योहार के पीछे असत्य पर सत्य की जीत, त्याग, क्षमा और परोपकार जैसी शिक्षाएं होती हैं, जो समाज को नैतिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

विभिन्न धर्मों में मनाए जाने वाले मुख्य त्योहार

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ हर धर्म के अपने अनूठे पर्व हैं, जो देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को और ख़ूबसूरत बनाते हैं :

हिंदू धर्म के मुख्य त्योहार

दीपावली: कार्तिक अमावस्या को मनाया जाने वाला यह 'प्रकाश पर्व' अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है।

होली : फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला यह 'रंगों का त्योहार' आपसी मतभेद भुलाकर गले मिलने और सामाजिक समानता का संदेश देता है।

दशहरा (विजयादशमी) : यह पर्व 'अधर्म पर धर्म की विजय' का उद्घोष है।

मकर संक्रांति/पोंगल/ओणम : ये फ़सल कटाई से जुड़े मौसमी त्योहार हैं, जो प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग नामों से मनाए जाते हैं।

इस्लाम धर्म के मुख्य त्योहार

ईदुल-फ़ित्र : रमज़ान के महीने में इनसानों के मार्गदर्शन

के लिए ईश्वरीय संदेश अर्थात क़ुरआन के अवतरण, तथा पवित्र महीने के तीस रोज़ों (उपवास) पूर्ण कर लेने के अवसर पर यह त्योहार मनाया जाता है। यह अल्लाह के प्रति आभार तथा इनसानों के साथ भाईचारे का पर्व है।

ईदुल-अज़हा (बक़रीद) : यह हज के अवसर पर तथा हज़रत इबराहीम की ख़ुदा के प्रति सर्वोच्च क़ुर्बानी और वफ़ादारी की याद में मनाया जाने वाला 'त्याग का त्योहार' है।

ईसाई धर्म के मुख्य त्योहार

क्रिसमस : हर साल 25 दिसंबर को ईसा मसीह (जीसस क्राइस्ट) के जन्मदिन के रूप में यह त्योहार पूरी दुनिया में धूमधाम से मनाया जाता है।

ईस्टर और गुड फ़्राइडे : गुड फ़्राइडे ईसा मसीह के बलिदान (क्रूस पर चढ़ाए जाने) का दिन है और उसके तीन दिन बाद ईस्टर संडे को उनके पुनर्जीवित होने की ख़ुशी में मनाया जाता है।

सिख धर्म के मुख्य त्योहार

गुरु पर्व (गुरपरब) : सिख धर्म के संस्थापकों, विशेषकर गुरु नानक देव जी और गुरु गोविंद सिंह जी के प्रकाश उत्सव (जयंती) को गुरुद्वारों में कीर्तन, अरदास और लंगर के साथ श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है।

बैसाखी : अप्रैल महीने में मनाया जाने वाला यह पर्व ख़ालसा पंथ की स्थापना के साथ-साथ नई फसल के आगमन की खुशी का प्रतीक है।

बौद्ध धर्म और जैन धर्म के त्योहार

बुद्ध पूर्णिमा : गौतम बुद्ध जी के जन्म और ज्ञान प्राप्ति (बोधिसत्व) का पर्व माना जाता है।

महावीर जयंती : जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर जी के जन्मदिवस पर मनाया जाने वाला यह पर्व सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह की सीख देता है।

राष्ट्रीय पर्व

देश में 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) तथा 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) राष्ट्रीय पर्व के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं।

त्योहारों के अलावा अलग-अलग धर्मों तथा संप्रदायों में कुछ जयंतियां तथा शहीदी दिवस भी प्रमुखता से मनाए जाते हैं।

त्योहार : ख़ुशी के साथ विवाद का कारण (चुनौतियां)

वर्तमान समय में त्योहारों के स्वरूप में कुछ विकृतियां आई हैं, जिससे कई बार सामाजिक तनाव और विवाद की स्थिति पैदा हो जाती है :

ध्वनि और वायु प्रदूषण : त्योहारों पर तेज़ आवाज़ में डीजे बजाना, देर रात तक लाउडस्पीकर का उपयोग करना और अत्यधिक पटाखे जलाना बुजुर्गों, बीमारों और बच्चों के लिए परेशानी का सबब बनता है।

जबरन चंदा वसूली : कई बार त्योहारों के नाम पर स्थानीय समितियों द्वारा आम जनता या व्यापारियों से जबरन धन की मांग की जाती है, जो विवाद का कारण बनती है।

हुड़दंग और नशाख़ोरी : होली या नए साल जैसे त्योहारों पर शराब या अन्य नशीले पदार्थों का सेवन कर हुड़दंग मचाने, महिलाओं से अभद्रता करने और सड़कों पर उपद्रव करने से त्योहार का माहौल ख़राब होता है।

मार्ग अवरुद्ध होना और यातायात की समस्या : सड़कों के बीचोबीच पंडाल लगाना, बिना अनुमति धार्मिक जुलूस निकालना जिससे घंटों एम्बुलेंस और आम जनता ट्रैफिक में फंसी रहे, सामाजिक असंतोष को जन्म देता है।

सांप्रदायिक संवेदनशीलता : संकीर्ण मानसिकता के कारण कभी-कभी एक धर्म के जुलूस या त्योहार के दौरान दूसरे धर्म के स्थलों के सामने भड़काऊ नारेबाज़ी की जाती है, जिससे दंगे और सांप्रदायिक तनाव भड़क जाते हैं।

त्योहार और धार्मिक पर्व समाज को जीवन शक्ति प्रदान करते हैं। इनका मूल उद्देश्य इनसान को इनसान से जोड़ना और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना तथा नैतिक संस्कारों को बढ़ावा देना है। यदि हम त्योहारों के व्यावसायिक और उग्र होते स्वरूप को छोड़कर उनके मूल आध्यात्मिक व मानवीय संदेश को अपनाएं, तो विवादों की कोई गुंजाइश नहीं बचेगी।

मनाने के तरीक़े तथा 'आचार संहिता' (Code of Conduct)

त्योहारों की पवित्रता और समाज की सुख-शांति को बनाए रखने के लिए नागरिक और प्रशासनिक स्तर पर एक व्यावहारिक 'आचार संहिता' का पालन अत्यंत आवश्यक है :

1. पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता: त्योहारों में पटाख़ों का सीमित प्रयोग हो या पूरी तरह 'ग्रीन पटाख़ों' को अपनाया जाए। मूर्तियों के विसर्जन के लिए कृत्रिम तालाबों का उपयोग हो ताकि नदियां प्रदूषित न हों। केमिकल रंगों के स्थान पर प्राकृतिक व हर्बल रंगों का प्रयोग किया जाए।

2. ध्वनि प्रदूषण पर कड़ा नियंत्रण : उच्च न्यायालयों और सरकार द्वारा निर्धारित डेसिबल सीमा और समय सीमा (जैसे रात 10 बजे के बाद लाउडस्पीकर पर रोक) का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। अस्पतालों, शिक्षण संस्थानों और रिहायशी इलाकों के पास तेज़ आवाज़ वाले यंत्रों पर पूर्ण प्रतिबंध हो।

3. स्वैच्छिक सहयोग और पारदर्शिता : त्योहारों के लिए चंदा पूरी तरह स्वैच्छिक होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को मानसिक या आर्थिक रूप से विवश न किया जाए। एकत्रित धन का ऑडिट और पारदर्शी हिसाब होना चाहिए।

4. सार्वजनिक व्यवस्था और यातायात का सम्मान: धार्मिक पंडालों या स्वागत द्वारों के निर्माण के लिए स्थानीय प्रशासन से लिखित अनुमति ली जाए। यह सुनिश्चित किया जाए कि मुख्य सड़कें और आपातकालीन मार्ग (Emergency Routes) प्रभावित न हों। धार्मिक जुलूसों के मार्ग और समय का निर्धारण पुलिस प्रशासन के समन्वय से पहले ही तय कर लिया जाना चाहिए।

5. सोशल मीडिया और भड़काऊ बयानों पर रोक: त्योहारों के संवेदनशील समय में सोशल मीडिया पर किसी भी प्रकार की अफ़वाह, भड़काऊ संदेश या मीम्स साझा करने पर पूर्ण रोक होनी चाहिए। त्योहारों की समितियों को 'शांति दूत' नियुक्त करने चाहिए जो अफवाहों पर नियंत्रण रख सकें।

6. समावेशी और गरिमापूर्ण आचरण : त्योहार मनाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हमारी खुशी किसी दूसरे की असुविधा का कारण न बने। नशाखोरी और हुड़दंग के खिलाफ त्योहार आयोजकों को स्वयं कड़े नियम बनाने चाहिए।

निष्कर्ष

त्योहार और धार्मिक पर्व समाज को जीवन शक्ति प्रदान करते हैं। इनका मूल उद्देश्य इनसान को इनसान से जोड़ना और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना तथा नैतिक संस्कारों को बढ़ावा देना है। यदि हम त्योहारों के व्यावसायिक और उग्र होते स्वरूप को छोड़कर उनके मूल आध्यात्मिक व मानवीय संदेश को अपनाएं, तो विवादों की कोई गुंजाइश नहीं बचेगी। एक सजग नागरिक के रूप में हमारा यह कर्तव्य है कि हम "स्वतंत्रता वहीं तक भली, जहाँ तक वह दूसरों के अधिकारों का हनन न करे" के सिद्धांत को त्योहारों पर भी लागू करें। जब हम नियमों और आचार संहिता के दायरे में रहकर उत्सव मनाएंगे, तभी हमारे त्योहार सच्चे अर्थों में समाज के लिए 'कल्याणकारी' और 'आनंददायी' सिद्ध होंगे। ■■

ग़ज़ल

• हफ़ीज़ मेरठी •

यह क्या ख़बर थी अजल[1] के सुपुर्द[2] कर देगा
उसे गुमां था शिफ़ा[3] उसको चारागर देगा

अगर्चे मुझ पे बहुत मेहरबान है सैयाद[4]
बुलन्दियों पे नज़र की तो पर कतर देगा

यह मेरी ज़ौक़े[5] नबुर्द[6] आज़माई मेरे लिए
कोई अदु, कोई दुश्मन तलाश कर देगा

वह ज़िंदगी की ज़मानत तो दे रहा है मगर
मेरी शनाख़्त[7] को क़िस्तों में क़त्ल कर देगा

जो कह रहा है क़सम खा के "बेज़रर हूं मैं"
वह एक रोज़ अचानक ही वार कर देगा

बशर[8] को ऐसे मसाइल हैं आजकल दरपेश
जो शब को सोचने, बैठा तो सुब्ह कर देगा

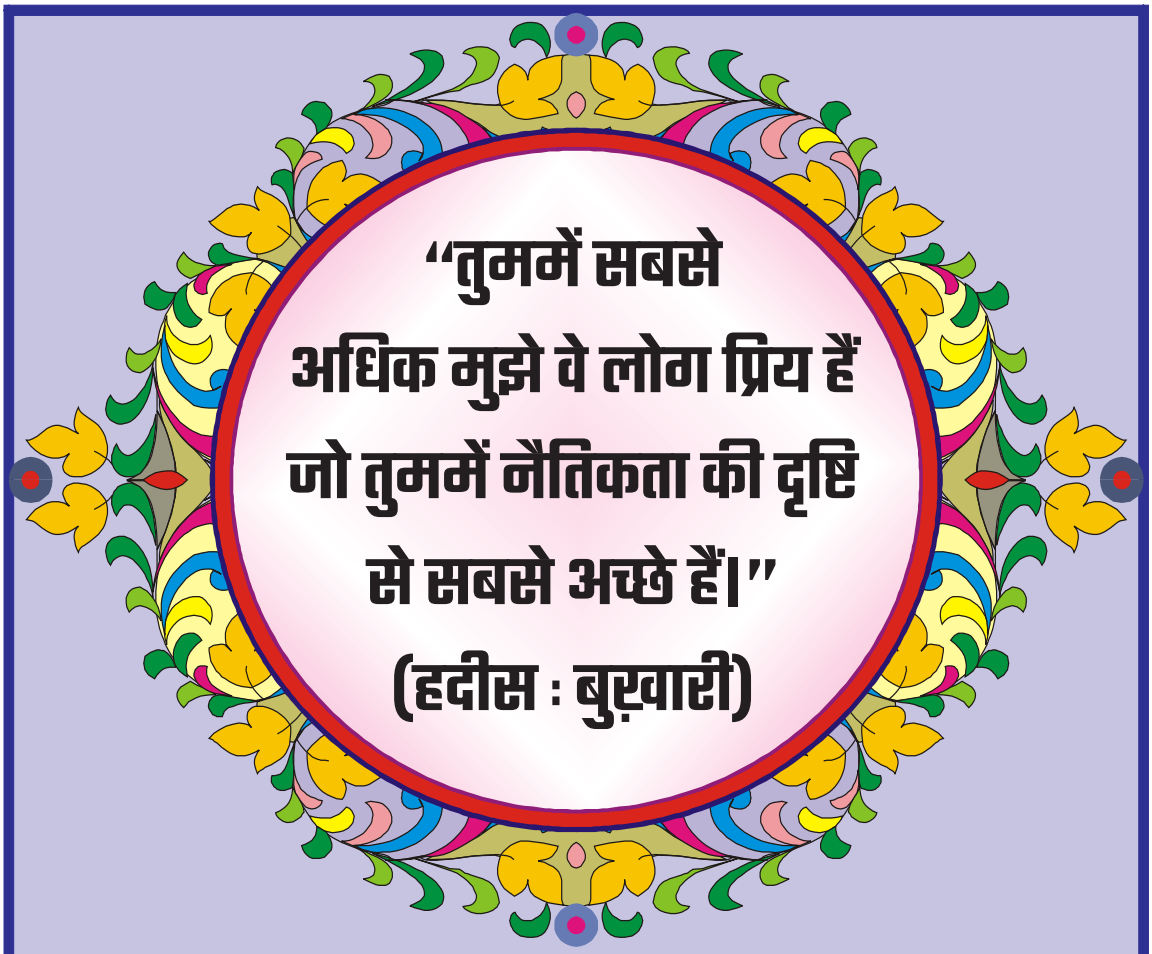
अब ऐसा लगने लगा है कि जैसे कम्प्यूटर
फ़लक[9] के सारे सितारे शुमार कर देगा

मैं डर रहा हूं बहुत उसकी सादालौही[10] से
मेरे ख़िलाफ़ कोई उसके कान भर देगा।

'हफ़ीज़' मुझको फ़रिश्ता कहेगी जब दुनिया
मेरा ज़मीर[11] मुझे संगसार[12] कर देगा।

.....

कठिन शब्द : 1. मौत, 2. हवाले, 3. बीमारी से छुटकारा, 4. शिकारी, 5 कामना, 6. पंजा लड़ाना, 7. पहचान, 8. इंसान, 9. आकाश, 10. निश्छलता, 11. अन्तःकरण, 12. पत्थर मारकर मार डालना।



A Well Wisher

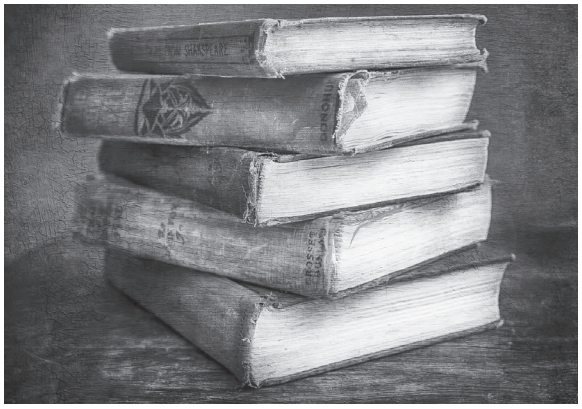
Jamaat Islami Hind
Surat (Gujrat)

किताबों की आख़िरी हिचकी

❖वुसअतुल्लाह ख़ान

अगर मैं कहूँ कि जिसके पास भी किताबों का जितना संग्रह है, उसे संभालकर रख लें। कुछ ही वर्षों में वह समय आने वाला है जब अधिकतर लोग किताबें खोजते फिरेंगे, लेकिन उन्हें बहुत-सी किताबों की एक भी प्रति नहीं मिलेगी। जिन लोगों ने अपना किताबों का संग्रह सुरक्षित रखा होगा, वे गर्व से दूसरों को दिखाएँगे और कहेंगे—देखो, हमारे पास इस विषय पर यह किताब मौजूद है।

अगर आपने इस चेतावनी को गंभीरता से नहीं लिया तो बहुत संभव है कि आने वाले समय में आप अपने एआई-युग के पोते, पोती या बेटी को इंटरनेट पर किसी किताब की तस्वीर दिखाकर समझाएँगे—"देखो बेटा, इसे किताब कहते हैं। हमारे समय में किताबें काग़ज़ पर छपती थीं।"



इस समय दुनिया में सबसे अधिक किताबें बड़ी-बड़ी एआई कंपनियाँ ख़ारीद रही हैं। वे उन्हें तेज़ गति वाले स्कैनरों से कॉपी कर रही हैं और फिर हाइड्रोलिक मशीनों से काटकर उनका कागज़ गूदा बना रही हैं।

आख़िर ऐसा क्यों किया जा रहा है? ये कंपनियाँ किताबों को स्कैन करके उनकी डिजिटल कॉपी सुरक्षित करने के बाद उनकी असली काग़ज़ी प्रतियाँ नष्ट क्यों कर रही हैं?

रणनीति यह है कि जब भविष्य में आपको इतिहास, दर्शन, समाजशास्त्र, विज्ञान या किसी भी विषय के बारे में बुनियादी अथवा उच्च स्तर की जानकारी चाहिए होगी और दुनिया से किताबें लगभग ग़ायब हो चुकी होंगी, तब यही एआई कंपनियाँ आपको वही ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक और वैज्ञानिक जानकारी देंगी, जो उन्होंने अपने एआई मॉडल में सुरक्षित कर रखी होगी।

इसका अर्थ यह हुआ कि ये कंपनियाँ ज्ञान और ऐतिहासिक तथ्यों में अपनी पसंद के अनुसार बदलाव कर सकेंगी। वे किसी तथ्य को तोड़-मरोड़कर पेश कर सकती हैं, उसे विकृत कर सकती हैं या किसी सच्चाई को पूरी तरह छिपा सकती हैं। और फिर उसी "दूषित ज्ञान" को हमें बेच सकती हैं।

हमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी बताया गया है कि किताब केवल काग़ज़ का ढेर नहीं होती। उसमें सुरक्षित ज्ञान मानवता की साझा बौद्धिक और सांस्कृतिक विरासत होता है। लेकिन एआई कंपनियों के लिए किताबें उनके एआई मॉडल की प्रशिक्षण-भूख मिटाने वाला सिर्फ़ "चारा" हैं।

विडंबना यह है कि ये कंपनियाँ ख़ास तौर पर उन किताबों को ख़रीद रही हैं जो वर्ष 2022 तक प्रकाशित हो चुकी हैं। क्योंकि 2022 के बाद प्रकाशित किताबों के बारे में इन कंपनियों को भी आशंका है कि कहीं वे ख़ुद एआई की मदद से लिखी गई न हों।

यह मामला इस साल की शुरुआत में सामने आया, जब कैलिफ़ोर्निया की एक संघीय अदालत में कुछ प्रकाशकों ने कॉपीराइट उल्लंघन का मुक़दमा दायर किया और एंथ्रोपिक एआई मॉडल से जुड़े "पैनामेंट प्रोजेक्ट" की जानकारी अदालत के सामने रखी।

पता चला कि फ़रवरी 2024 में कैलिफ़ोर्निया की सिलिकॉन वैली में दुनिया के बेहतर चैटबॉट बनाने वाली एक कंपनी ने अपने एंथ्रोपिक मॉडल को प्रतियोगिता में आगे रखने के लिए गूगल बुक्स के एक पूर्व अधिकारी टॉम ट्रवी की सेवाएँ ली थीं।

उन्हें बस एक काम करना था—दुनिया की प्रमुख भाषाओं में प्रकाशित अधिक से अधिक किताबें ख़रीदना।

ख़ास प्राथमिकता उन किताबों को दी जानी थी जिनका कॉपीराइट समाप्त हो चुका था। इन किताबों की कागज़ी प्रतियों को डिजिटल डेटा में बदलने के बाद हाइड्रोलिक मशीनों से काटकर नष्ट कर दिया जाना था।

संघीय अदालत ने फ़ैसला दिया कि किसी किताब की बिना अनुमति कॉपी प्रकाशित करना निश्चित रूप से कॉपीराइट का उल्लंघन है। लेकिन अगर किसी व्यक्ति या कंपनी ने किताब ख़रीदी है तो वह उसकी निजी संपत्ति है। इसलिए उस ख़रीदी हुई किताब को नष्ट करना कॉपीराइट उल्लंघन नहीं माना जाएगा—ख़ासकर तब, जब नष्ट करने से पहले उसका डेटा डिजिटल रूप में सुरक्षित कर लिया गया हो।

हालाँकि, बिना सोचे-समझे बड़े पैमाने पर किताबें ख़रीदने की इस मुहिम में कुछ चोरी किए गए संस्करण भी ख़रीद लिए गए। इसलिए उन किताबों के असली प्रकाशकों को एंथ्रोपिक मॉडल विकसित करने वालों की ओर से डेढ़ अरब डॉलर का जुर्माना देना पड़ा।

विडंबना यह है कि ये कंपनियाँ ख़ास तौर पर उन किताबों को ख़रीद रही हैं जो वर्ष 2022 तक प्रकाशित हो चुकी हैं। क्योंकि 2022 के बाद प्रकाशित किताबों के बारे में इन कंपनियों को भी आशंका है कि कहीं वे ख़ुद एआई की मदद से लिखी गई न हों।

ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूरोप और अमेरिका में पुराने और दुर्लभ किताबों के व्यापारी इन दिनों बहुत परेशान हैं। एआई कंपनियों के लिए "किताबी चारा" ख़रीदने वाली बिचौलिया कंपनियों ने बहुत बड़े-बड़े ऑर्डर देना शुरू कर दिया है। ये ऑर्डर सामान्य ख़रीद-बिक्री की तुलना में कई गुना अधिक हैं। बिचौलिये मनमानी क़ीमत देकर किताबें ख़रीद रहे हैं।

जिन किताबों की लाखों प्रतियाँ मौजूद हैं, उन्हें फिलहाल कोई बड़ा ख़तरा नहीं है। लेकिन ऐसी दुर्लभ किताबें, जिनकी दुनिया में शायद केवल पाँच-छह प्रतियाँ ही बची हैं, अब अपने अस्तित्व की लड़ाई हार रही हैं।

इनमें सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में प्रकाशित दुर्लभ नक्शे, वर्ष 1558 में प्रकाशित रोम का इतिहास तथा सत्रहवीं, अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के यात्रा-वृत्तांतों के पहले संस्करण जैसी किताबें शामिल हैं।

एक वर्ष पहले तक अगर कोई ग्राहक ऐसी दुर्लभ किताब ख़रीद लेता था तो दुकानदार उसकी क़द्रदानी से बहुत ख़ुश होता था। लेकिन अब अचानक पुराने और प्रसिद्ध किताब विक्रेताओं को कुछ नए ग्राहकों की ओर से एक साथ तीन-तीन हज़ार ऐसी किताबों के ऑर्डर मिल रहे हैं जो लंबे समय से बाज़ार में उपलब्ध नहीं हैं।

अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशित किताबें "टू ज़ीरो डबल सेवन एआई" नामक बिचौलिया कंपनी के लोग ख़रीद रहे हैं। हालांकि डिजिटल तकनीक पर नज़र रखने वाले एक प्रमुख थिंक टैंक "फ़ोर ओ फ़ोर मीडिया" की जाँच के अनुसार "आईएसबीएन डीबी" नामक संस्था एक साथ दस लाख किताबों के शीर्षक ख़रीदने की क्षमता रखती है।

जो किताबें युद्धों, अशांति, आग और दूसरी प्राकृतिक व मानवीय आपदाओं से बचते हुए सदियों तक सुरक्षित रहीं, अब उन्हें सिर्फ़ इसलिए एआई का चारा बनाया जा रहा है कि एआई इंसान से बेहतर और अधिक तेज़ी से एक अच्छा ईमेल लिख सके।

पुराने समय में विजेता लोग पराजित लोगों को ज्ञान से वंचित करने के लिए पुस्तकालयों में आग लगा देते थे। यूनानियों द्वारा अलेक्ज़ेंड्रिया के पुस्तकालय को नष्ट किए जाने और हलाकू ख़ान द्वारा बग़दाद के पुस्तकालयों को तबाह किए जाने की कहानियाँ पढ़कर हम सोचते थे कि सदियों पहले का इंसान कितना बर्बर और ज्ञान का दुश्मन था। लेकिन आज आधुनिक तकनीक के रूप में किताबों के ज्ञान को जिस अस्तित्वगत ख़तरे का सामना है, उसके सामने अतीत की वे घटनाएँ भी बच्चों की शरारत जैसी लगने लगी हैं।

इससे पहले कि किताबें भी दुनिया की बहुत-सी वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की तरह धीरे-धीरे विलुप्त हो जाएँ, कॉपीराइट के अंतरराष्ट्रीय क़ानूनों की नए सिरे से समीक्षा करने की तत्काल आवश्यकता है।

लेकिन दुनिया की प्राथमिकताओं की सूची में शायद इस त्रासदी पर सबसे अंत में चर्चा होगी।

फिर भी हम बेबस होकर इसके अलावा क्या कह सकते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि किताबें ही दुनिया से ग़ायब हो जाएँ और हमारे हाथ में केवल कॉपीराइट के क़ानून रह जाएँ। ■■

AI के दौर में महिलाओं की गरिमा कितनी सुरक्षित?

❖तबस्सुम शेख़ पुसद

आज के दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी AI ने दुनिया को नई दिशा दी है। शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान और अनेक क्षेत्रों में इसका उपयोग मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए हो रहा है। लेकिन जब इसी तकनीक का इस्तेमाल किसी महिला की तस्वीर के साथ ग़लत तरीक़े से छेड़छाड़ करने और उसकी प्रतिष्ठा को नुक़सान पहुंचाने के लिए किया जाता है, तो यह तकनीक की तरक़्क़ी नहीं, बल्कि उसके ख़तरनाक दुरुपयोग का उदाहरण बन जाता है।

हाल ही में रेल में हुई एक घटना ने इसी गंभीर समस्या की ओर ध्यान खींचा। एक महिला यात्रा कर रही थी और उसकी तस्वीर बिना अनुमति के ली गई। इसके बाद उस तस्वीर का AI के माध्यम से ग़लत और आपत्तिजनक तरीक़े से इस्तेमाल किए जाने का मामला सामने आया। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि आज कोई महिला ट्रेन में सफ़र करते समय भी अपनी तस्वीर और निजता को लेकर कितनी सुरक्षित है।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि किसी महिला की सामान्य तस्वीर भी ग़लत हाथों में पहुंचने के बाद AI की मदद से बदली जा सकती है। तस्वीर वास्तविक न होने के बावजूद उसे देखकर दूसरे लोग उसे सच समझ सकते हैं। इससे महिला की प्रतिष्ठा, मानसिक शांति और पारिवारिक जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

लेकिन इस घटना में एक युवक का क़दम सराहनीय रहा। उसने इस ग़लत काम को देखकर तमाशा नहीं देखा और न ही उस सामग्री को फैलाने का हिस्सा बना। उसने शिकायत की और मामले सामने लाने की ज़िम्मेदारी निभाई। आज के समय में जब कई लोग किसी घटना को देखकर केवल वीडियो बनाने या उसे दूसरों तक पहुंचाने में लग जाते हैं, उस युवक ने इसके विपरीत एक ज़िम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाई।

उस युवक का यह क़दम समाज के लिए एक बड़ा संदेश है। ग़लत चीज़ देखकर चुप रहना आसान है, लेकिन उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना हिम्मत और ज़िम्मेदारी की निशानी है। अगर हर व्यक्ति ग़लत काम को देखकर केवल तमाशाई बनने के बजाय उचित तरीक़े से शिकायत करे, तो ऐसे अपराधों को रोकने में काफ़ी मदद मिल सकती है।

इस घटना का सबसे बड़ा नुक़सान उस महिला की इज़्ज़त और मानसिक शांति पर पड़ सकता है। उसे यह चिंता हो सकती है कि उसकी तस्वीर किसके पास है और आगे कहां तक फैल सकती है। सोशल मीडिया और इंटरनेट की दुनिया में एक बार कोई सामग्री फैल जाने के बाद उसे पूरी तरह हटाना मुश्किल हो सकता है।

इसका असर केवल महिला तक सीमित नहीं रहता। उसके परिवार को भी सामाजिक दबाव और मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए किसी भी आपत्तिजनक तस्वीर या वीडियो को आगे भेजने के बजाय उसकी रिपोर्ट करना और उचित अधिकारियों तक जानकारी पहुंचाना ही ज़िम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है।

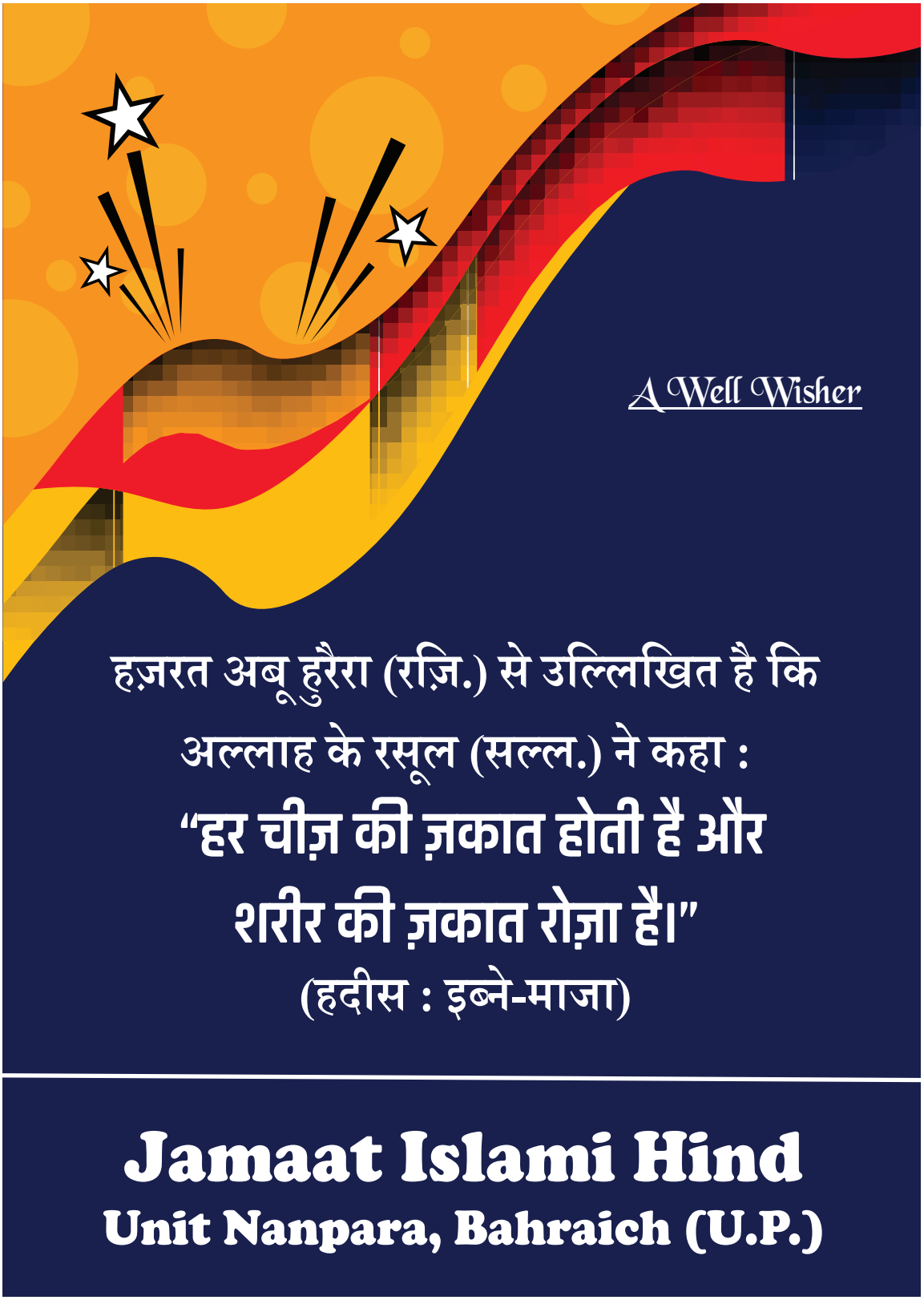
हमें यह समझना होगा कि किसी महिला की तस्वीर सार्वजनिक स्थान पर दिखाई देने का अर्थ यह नहीं है कि कोई भी व्यक्ति उसका मनमाना इस्तेमाल कर सकता है। उसकी निजता और सम्मान का सम्मान करना हर व्यक्ति की ज़िम्मेदारी है।

AI स्वयं दुश्मन नहीं है। यह एक तकनीक है, जिसका उपयोग अच्छे कामों के लिए किया जा सकता है। असली समस्या तब पैदा होती है जब इंसान अपनी तकनीकी क्षमता का इस्तेमाल किसी दूसरे इंसान की इज़्ज़त और ज़िंदगी को नुक़सान पहुंचाने के लिए करता है।

इसलिए आज ज़रूरत केवल AI के बारे में सीखने की नहीं, बल्कि AI का इस्तेमाल किस जिम्मेदारी और नैतिकता के साथ किया जाए, यह सीखने की भी है। युवाओं को समझाना होगा कि किसी की तस्वीर के साथ ग़लत करना मज़ाक़ नहीं है और ऐसी सामग्री को आगे फैलाना भी ज़िम्मेदारी से भागना है।

तकनीक इंसान की मदद के लिए है, किसी इंसान की इज़्ज़त और ज़िंदगी को तबाह करने के लिए नहीं।

रेल में हुई इस घटना से हमें एक महत्वपूर्ण सबक मिलता है—ग़लत काम देखकर तमाशाई मत बनिए। आवाज़ उठाइए और पीड़ित व्यक्ति की मदद कीजिए। उस युवक ने यही करके एक मिसाल क़ायम की। ■■


A Well Wisher
हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से उल्लिखित है कि
अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने कहा :
"हर चीज़ की ज़कात होती है और
शरीर की ज़कात रोज़ा है।"
(हदीस : इब्ने-माजा)
Jamaat Islami Hind
Unit Nanpara, Bahraich (U.P.)

शिक्षा : अधिकार से बाज़ार तक

❖जुनैद अली

इस विचार पर विश्वव्यापी सहमति है कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सबसे सशक्त आधार होती है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि मानवीय चेतना के विकास, सामाजिक समरसता, आर्थिक उन्नति और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का प्रमुख साधन भी है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए भारत में 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा को संविधान के अनुच्छेद 21(ए) के तहत मौलिक अधिकार बनाया गया। लेकिन खेदजनक स्थिति यह है कि संवैधानिक अधिकारों की लंबी सूची वाले भारत में उनके प्रभावी क्रियान्वयन की तस्वीर आज भी संतोषजनक नहीं है।

आजादी के आठ दशक बीतने और ठोस क़ानूनी प्रावधानों के बावजूद शिक्षा का अधिकार हर वर्ग और हर स्तर तक सहज रूप से पहुंचाने में देश पूरी तरह सफल नहीं हो सका है। शिक्षा क्षेत्र की परिस्थितियां स्पष्ट करती हैं कि उचित क्रियान्वयन के बिना कठोर क़ानूनी प्रावधान भी सकारात्मक परिणाम नहीं दे सकते और संवैधानिक अनुच्छेद महज प्रतीक बनकर रह जाते हैं। पिछले एक दशक से अधिक के अनुभव में शिक्षा क्षेत्र में सार्वजनिक संस्थानों के मुक़ाबले निजी संस्थानों की तेज़ वृद्धि ने एक नई चिंता पैदा की है। सरकारों ने शिक्षा के लिए पर्याप्त सार्वजनिक संसाधन उपलब्ध कराने के बजाय निजी निवेश को बढ़ावा दिया, जिससे शिक्षा का बाज़ार तेज़ी से विस्तृत हुआ।

आंकड़े इस बदलाव को स्पष्ट करते हैं। ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) के अनुसार 2013 में निजी विश्वविद्यालयों की संख्या 219 थी, जो 2023 में बढ़कर 546 हो गई। यानी एक दशक में लगभग 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके विपरीत सरकारी विश्वविद्यालयों की संख्या 504 से बढ़कर 733 हुई। इसी अवधि में सरकारी विश्वविद्यालयों में नामांकन लगभग 51.90 लाख से बढ़कर 73.90 लाख हुआ, जबकि निजी विश्वविद्यालयों में नामांकन 11.90 लाख से बढ़कर 34.60 लाख पहुंच गया। यानी निजी विश्वविद्यालयों में नामांकन की वृद्धि कहीं अधिक तेज़ रही।

सरकारी विश्वविद्यालयों में अपेक्षाकृत कम आकर्षण के पीछे कई कारण हैं—समय पर शैक्षणिक सत्र का संचालन न होना, शिक्षकों की कमी, रोज़गारपरक पाठ्यक्रमों का अभाव और कमज़ोर आधारभूत सुविधाएं। इसके विपरीत निजी संस्थान बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर, आधुनिक पाठ्यक्रम और प्लेसमेंट के नाम पर विद्यार्थियों को आकर्षित करते हैं। लेकिन इन सुविधाओं की क़ीमत इतनी अधिक है कि उच्च शिक्षा का बड़ा हिस्सा मध्यम और निम्न आय वर्ग की पहुंच से बाहर होता जा रहा है।

स्कूली शिक्षा की स्थिति भी कम चिंताजनक नहीं है। नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट के अनुसार 2014-15 से 2024-25 के बीच देश में लगभग 94 हज़ार सरकारी स्कूल बंद हुए या दूसरे स्कूलों में विलय कर दिए गए। इसका अर्थ है कि औसतन प्रतिदिन लगभग 25 सरकारी स्कूलों की संख्या कम हुई। इसी अवधि में सरकारी स्कूलों की संख्या 11.07 लाख से घटकर 10.13 लाख रह गई, जबकि निजी स्कूलों की संख्या 2.88 लाख से बढ़कर 3.39 लाख हो गई। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या में भी 2.26 करोड़ की कमी दर्ज की गई।

निजी संस्थानों की बढ़ती संख्या को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। उन्होंने शिक्षा के अवसरों का विस्तार किया है और कई संस्थानों ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी उपलब्ध कराई है। समस्या निजी क्षेत्र के अस्तित्व से अधिक उसके अनियंत्रित विस्तार और शिक्षा के मुनाफ़े का माध्यम बनने की है। जब शिक्षा सामाजिक सेवा या मौलिक अधिकार के बजाय व्यापार बन जाती है तो फीस, डोनेशन और अन्य शुल्क आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों के लिए गंभीर बाधा बन जाते हैं। उच्च शिक्षा के लिए लिया गया क़र्ज़ पढ़ाई पूरी होने के बाद भी युवाओं का पीछा करता रहता है और रोज़गार न मिलने की स्थिति में पूरा परिवार आर्थिक संकट में फंस सकता है।

यही स्थिति शिक्षा में असमानता को और गहरा करती है। संपन्न परिवार अपने बच्चों को महंगे निजी स्कूलों, विश्वविद्यालयों और कोचिंग संस्थानों में भेज सकते हैं,

जबकि प्रतिभाशाली लेकिन आर्थिक रूप से कमज़ोर विद्यार्थी अवसरों की कमी के कारण पीछे रह जाते हैं। कई बार योग्यता से अधिक आर्थिक क्षमता संस्थानों तक पहुंच तय करने लगती है। यह स्थिति उस लोकतांत्रिक विचार के बिल्कुल विपरीत है, जिसमें शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता और समान अवसर का सबसे बड़ा माध्यम माना जाता है।

उदारीकरण के साथ कोचिंग संस्थानों का विस्तार भी शिक्षा व्यवस्था की एक बड़ी विडंबना बनकर सामने आया। प्रतियोगी परीक्षाओं में सीमित सीटों और बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने कोचिंग को एक बड़े उद्योग में बदल दिया। यदि सरकारी स्कूल और विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्याप्त सीटें और रोज़गारपरक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने में सक्षम होते तो कोचिंग पर निर्भरता इतनी अधिक नहीं होती। अवसर सीमित होंगे तो प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक रूप से बढ़ेगी और प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी तो कोचिंग का बाज़ार भी विस्तार पाएगा। इसका सबसे दुखद पक्ष यह है कि प्रतियोगी परीक्षाओं के दबाव और असफलता के कारण हर वर्ष बड़ी संख्या में युवा मानसिक तनाव और निराशा का सामना करते हैं।

इसी पृष्ठभूमि में शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 महत्वपूर्ण हो जाता है। संसद ने इसे 2009 में पारित किया और 1 अप्रैल 2010 से लागू किया गया। इसके तहत 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा का प्रावधान किया गया। कमज़ोर और वंचित वर्गों के बच्चों के लिए निजी विद्यालयों में 25 प्रतिशत सीटों का प्रावधान भी इसी क़ानून का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अतिरिक्त शिक्षक-छात्र अनुपात, विद्यालय भवन, पुस्तकालय, खेलकूद और अन्य बुनियादी सुविधाओं के मानक तय किए गए हैं।

लेकिन क़ानून और ज़मीन की वास्तविकता में बड़ा अंतर है। केवल दाख़िला बढ़ा देना शिक्षा की सफलता नहीं है। यदि विद्यालय में पर्याप्त शिक्षक नहीं हैं, भवन और प्रयोगशालाएं नहीं हैं, डिजिटल संसाधन उपलब्ध नहीं हैं और पढ़ाई का स्तर कमज़ोर है तो नामांकन का आंकड़ा शिक्षा की वास्तविक तस्वीर नहीं बता सकता। आज साक्षरता का अर्थ भी केवल पढ़ने या हस्ताक्षर करने की क्षमता तक सीमित नहीं रह गया है। बदलती अर्थव्यवस्था में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, कौशल, विवेक और आलोचनात्मक चेतना विकसित करना भी है।

नई शिक्षा नीति और व्यावसायिक शिक्षा पर बढ़ते ज़ोर के संदर्भ में भी यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या आर्थिक रूप से कमज़ोर और वंचित वर्गों के बच्चों को समान अवसर मिल रहे हैं। यदि गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा लगातार महंगी होती गई और सार्वजनिक संस्थानों की संख्या तथा क्षमता सीमित होती गई तो शिक्षा सामाजिक समानता का माध्यम बनने के बजाय सामाजिक विभाजन को और मज़बूत कर सकती है।

भारत सैद्धांतिक रूप से एक कल्याणकारी राज्य है। संविधान के नीति निदेशक तत्व राज्य को सामाजिक और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने की दिशा दिखाते हैं। ऐसे में शिक्षा जैसे बुनियादी क्षेत्र में बेलगाम निजीकरण गंभीर सवाल खड़े करता है। निजी संस्थानों की भूमिका हो सकती है, लेकिन शिक्षा की मूल ज़िम्मेदारी राज्य से विमुख नहीं की जा सकती। क्योंकि बाज़ार का मूल उद्देश्य लाभ है, जबकि कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य समान अवसर और सार्वजनिक हित सुनिश्चित करना है।

सरकारें अक्सर संसाधनों और बजट की कमी को शिक्षा क्षेत्र में पर्याप्त निवेश न कर पाने का कारण बताती हैं। लेकिन सवाल यह है कि यदि विज्ञापनों, प्रशासनिक ख़र्चों और दूसरे ग़ैर-ज़रूरी मदों पर बड़े पैमाने पर धन ख़र्च किया जा सकता है तो शिक्षा जैसे बुनियादी क्षेत्र के लिए पर्याप्त संसाधन क्यों नहीं जुटाए जा सकते? शिक्षा पर ख़र्च को व्यय नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण में निवेश के रूप में देखने की आवश्यकता है।

वास्तविक विकास वही है जिसमें देश की आर्थिक प्रगति के साथ उसके नागरिकों को समान अवसर मिलें। यदि एक ओर विकसित भारत का सपना दिखाया जाए और दूसरी ओर सरकारी स्कूल बंद होते जाएं, सार्वजनिक विश्वविद्यालय संसाधनों के अभाव में कमज़ोर पड़ते जाएं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग़रीबों की पहुंच से बाहर होती जाए तो यह विकास का अधूरा मॉडल होगा।

शिक्षा किसी राष्ट्र के भविष्य की प्रयोगशाला है। इसलिए सरकारों को यह तय करना होगा कि शिक्षा बाजार की वस्तु होगी या नागरिक का अधिकार। यदि भारत को वास्तव में समानता, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय पर आधारित विकसित राष्ट्र बनाना है तो शिक्षा को मुनाफ़े की वस्तु नहीं, बल्कि सार्वजनिक ज़िम्मेदारी और मौलिक अधिकार के रूप में मज़बूत करना होगा। वरना संविधान में दर्ज शिक्षा का अधिकार काग़ज़ पर मौजूद रहेगा और वास्तविक जीवन में अवसरों की दीवारें और ऊंची होती जाएंगी। ■■

मदीना मार्केट की स्थापना

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) का क्रांतिकारी क़दम

❖डॉ० फ़रहत हुसैन

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने जब 622 ईस्वी में मक्का से मदीना हिजरत (प्रवासन) की, तो उन्होंने न केवल एक धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी, बल्कि साथ ही एक स्वतंत्र और न्यायपूर्ण आर्थिक प्रणाली भी खड़ी की।

अधिकांश धर्मग्रंथों तथा धर्मगुरुओं का क्षेत्र मनुष्यों का आध्यात्मिक और नैतिक उत्थान होता है। उनकी शिक्षाओं, आदेशों, निर्देशों तथा प्रवचनों का केंद्र बिंदु यही होता है। व्यापार, व्यवसाय, लेनदेन तथा अर्थ जगत से जुड़ी अन्य समस्याओं को वे कम ही चर्चा का विषय बनाते हैं। इस्लाम एक संपूर्ण जीवन व्यवस्था तथा संतुलित मार्ग है इसलिए उसने मनुष्य के नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक प्रत्येक विभाग के साथ आर्थिक क्षेत्र पर समुचित ध्यान दिया। पवित्र क़ुरआन में अर्थव्यवस्था संचालन के सभी महत्वपूर्ण सिद्धांत दे दिए गए हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने इन बुनियादी सिद्धांतों तथा अपनी तत्वदर्शिता और अनुभव का प्रयोग करते हुए ईश्वरीय मार्गदर्शन में व्यवहारिक तथा विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कर दी जो हदीस की पुस्तकों में पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। पैग़म्बर (सल्ल०) के इन बहुमूल्य कार्यों में एक कार्य मदीना मार्केट की स्थापना भी माना जाता है।

इस्लाम एक संपूर्ण जीवन व्यवस्था तथा संतुलित मार्ग है इसलिए उसने मनुष्य के नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक प्रत्येक विभाग के साथ आर्थिक क्षेत्र पर समुचित ध्यान दिया। पवित्र क़ुरआन में अर्थव्यवस्था संचालन के सभी महत्वपूर्ण सिद्धांत दे दिए गए हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने देखा कि मदीने का पूरा व्यापार यहूदी क़बीलों (विशेषकर बनू क़ैनुक़ा) के नियंत्रण में था, जहां ब्याज, धोखाधड़ी और एकाधिकार का बोलबाला था। बाज़ार में आने वाले दूसरे लोगों के साथ उनका व्यवहार भी उचित नहीं था। मदीने में उस समय चार बाज़ार थे, जो यहूदियों द्वारा संचालित होते थे। मुस्लिम व्यापारियों, विशेष कर मक्का से हिजरत करके मदीना पहुंचने वाले लोगों को, जो बुनियादी तौर पर व्यापारी वर्ग से संबंधित थे, वहां व्यापार करने में कई दिक्क़तों का सामना करना पड़ता था। यहूदी व्यापारी भारी कर (Tax) वसूलते थे और उनकी नीतियां अन्य व्यापारियों तथा आम लोगों के हितों के प्रतिकूल तथा शोषण पर आधारित थीं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मुसलमान और मक्कावासियों के बीच 'बद्र' की लड़ाई हुई जिसमें मुसलमानों का पलड़ा भारी रहा। कहा जाता है कि यहूदी भी लड़ाई के परिणाम से ख़ुश नहीं थे। उन्होंने मुसलमानों को विशेष कर बाज़ार में आने वाली मुस्लिम औरतों को परेशान करना शुरू कर दिया। एक बार यहूदियों ने अपने बाज़ार में एक मुस्लिम औरत का मज़ाक़ उड़ाते हुए उसके कपड़े खींच कर निर्वस्त्र करने का प्रयास किया जिसके नतीजे में विवाद इतना बढ़ गया कि एक यहूदी और एक मुस्लिम नौजवान की हत्या हुई। बाज़ार में यहूदियों की लेनदेन की कार्यप्रणाली तथा उनकी अपमान करने वाली घटनाओं को ध्यान में रखते हुए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने यह निर्णय लिया कि अपनी अलग मार्केट स्थापित की जाए।

पैग़म्बर (सल्ल०) स्वयं एक अनुभवी व्यापारी रह चुके थे, इसलिए वे एक ऐसी व्यवस्था चाहते थे जो शोषण से मुक्त हो, और सभी लोग सम्मान के साथ व्यापार कर सकें। इसलिए उन्होंने मदीना मार्केट की घोषणा की जिसे 'सूक़ अल-मदीना' (मदीने का बाज़ार) नाम दिया गया और कहा: "यह तुम्हारा बाज़ार है, इसमें न तो किसी से कोई टैक्स लिया जाएगा और न ही किसी का विशेषाधिकार होगा।"

मदीना मार्केट की मुख्य विशेषताएं

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीने की मार्केट के लिए बहुत ही रणनीतिक और सुलभ स्थान (Strate-

gic Location) का चयन किया था। यह स्थान मदीने के मुख्य प्रवेश द्वार के पास एक विशाल और खुला स्थान था। यह जगह ऐसी थी जहां से गुज़रने वाले व्यापारिक क़ाफ़िले (caravans) आसानी से पहुंच जाते थे। अच्छे स्थान तथा बेहतरीन और न्यायसंगत नीतियों के कारण मदीने की इस मार्केट ने बहुत तेज़ी से उन्नति की। यह बाज़ार केवल मुसलमानों के लिए नहीं बल्कि सभी धर्म के लोगों के लिए पूर्ण रूप से खुला था। अन्य धर्म के लोग अर्थात ग़ैर-मुस्लिम, ईसाई और यहूदी व्यापारी भी यहां बिना किसी भेदभाव के अपना कारोबार और क्रय-विक्रय कर सकते थे।

मदीना मार्केट में इस्लाम के वित्तीय नियमों के अनुसार क्रय-विक्रय तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों के संचालन को नियंत्रित किया गया। यहां उन सिद्धांतों तथा नियमों के विस्तार में जाने का मौक़ा नहीं है; केवल मुख्य विशेषताओं को बहुत संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

कर-मुक्त व्यापार (Tax-Free Market): मदीना बाज़ार की सबसे बड़ी ख़ासियत यह थी कि वहां व्यापारियों से कोई टैक्स या बाज़ार शुल्क नहीं लिया जाता था। इससे वस्तुओं की क़ीमतें कम हुईं और यह बाज़ार यहूदियों के बाज़ार के मुक़ाबले अधिक प्रतिस्पर्धी, सभी के लिए सुविधाजनक तथा व्यापारियों और ग्राहकों की संतुष्टि का करण बन गया।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने बुनियादी आर्थिक सिद्धांतों तथा अपनी तत्वदर्शिता और अनुभव का प्रयोग करते हुए ईश्वरीय मार्गदर्शन में व्यवहारिक तथा विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कर दी जो हदीस की पुस्तकों में पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। पैग़म्बर (सल्ल.) के इन बहुमूल्य कार्यों में एक कार्य मदीना मार्केट की स्थापना भी माना जाता है।

कोई स्थायी स्थान या एकाधिकार नहीं : इस बाज़ार में कोई भी व्यक्ति अपनी दुकान के लिए जगह आरक्षित नहीं कर सकता था। जो व्यापारी सुबह पहले आता, वह अपनी पसंद की जगह पर सामान सजा सकता था। इसका उद्देश्य बड़े व्यापारियों के एकाधिकार को रोकना था।

ब्याज (Riba) पर पूर्ण प्रतिबंध : इस्लाम में ब्याज को पूरी तरह प्रतिबंधित किया गया है। इस बाज़ार में ब्याज-आधारित सभी प्रकार के लेन-देन को अवैध घोषित कर दिया गया, जिसने यहूदी ऋण प्रणाली की कमर तोड़ दी।

पारदर्शिता और ईमानदारी : बाज़ार में नाप-तौल में हेरफेर करने, सामान की कमियां छिपाने और जमाख़ोरी (Hoarding) करने पर सख़्त पाबंदी थी। बाज़ार में आने वाले व्यापारियों को रास्ते में रोक कर सौदा करने की अनुमति नहीं थी।

निगरानी व्यवस्था (Market Supervision) : बाज़ार को सुचारू रूप से चलाने और नियमों का पालन करवाने के लिए पैग़म्बर (सल्ल०) ने 'हिस्बाह' (Hisbah) नाम की एक निगरानी संस्था बनाई। वे स्वयं और उनके द्वारा नियुक्त निरीक्षक, जिनको 'मुहतसिब' कहा जाता था, बाज़ार का दौरा करते थे। वे सामान की गुणवत्ता और नाप-तौल के पैमानों की जांच करते थे।

इतिहास के अनुसार, उन्होंने पुरुषों के साथ-साथ 'शिफ़ा बिन्त अब्दुल्लाह' (रज़ि०) नामी सहाबी महिला को भी बाज़ार निरीक्षणकर्ता की ज़िम्मेदारी सौंपी थी, क्योंकि इस बाज़ार में महिला व्यापारी भी व्यापार करती थीं।

यहूदी बाज़ार पर इसका प्रभाव

मदीना मार्केट की न्यायपूर्ण नीतियों, शून्य टैक्स और कम क़ीमतों के कारण न केवल मुस्लिम बल्कि ग़ैर-मुस्लिम और ख़ुद कई यहूदी व्यापारी भी इस नए बाज़ार की तरफ़ आकर्षित होने लगे। इसके परिणामस्वरूप :

- यहूदियों का आर्थिक एकाधिकार पूरी तरह समाप्त हो गया।
- मदीना आर्थिक रूप से पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया।
- इस बाज़ार ने मदीने के नए बने इस्लामी राज्य को राजनीतिक और सामाजिक मज़बूती प्रदान की।

निष्कर्ष

मदीना मार्केट केवल वस्तुओं की क्रय-विक्रय का केंद्र नहीं था, बल्कि यह सामाजिक न्याय और कल्याणकारी अर्थशास्त्र (Welfare Economics) का एक अनूठा मॉडल था। इस मार्केट के द्वारा क़ुरआन में वर्णित आर्थिक शिक्षाओं को पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने व्यावहारिक रूप दिया जिसके नतीजे में वित्तीय लेनदेन अधिक पारदर्शी तथा सबके लिए स्वीकार्य हुए। क़ीमतों को कृत्रिम रूप से बढ़ाने अथवा शोषण के अन्य सभी रास्ते बंद करने के तरीक़े इस मार्केट के द्वारा लोगों के सामने आए। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा स्थापित इस बाज़ार ने यह साबित किया कि एक सफल अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाने के लिए पूंजीपतियों के एकाधिकार को तोड़ना और आम जनता तथा छोटे व्यापारियों को समान अवसर देना कितना आवश्यक है। ■■

अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.)

यसरिब वाले

(गतांक से आगे)

❖मुशर्रफ़ अली

अगले वर्ष यानी नुबूवत के ग्यारहवें वर्ष में जब हज का मौसम आया तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अपने साथियों के साथ फिर सक्रिय हुए। मक्का वालों ने आपको झुठलाने और लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का जो अभियान चला रखा था उसे देखते हुए आप रात के अंधेरे में हज पर आये क़ाफ़िलों के पास जाते, ताकि कोई रुकावट न डाल सके। ऐसे ही एक रात जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अबू-बक्र और अली को लेकर अपने मिशन पर निकले तो आपकी मुलाक़ात यसरिब के 6 नवजवानों से हुई। यसरिब, 'मदीना' का पुराना नाम है। जब हिजरत करके नबी (सल्ल०) वहां गये तो लोगों ने उसे मदीनतुन नबी (नबी का शहर) कहना शुरू किया जो बाद में केवल मदीना रह गया। यसरिब के ये 6 नवजवान ख़ज़रज के क़बीले से सम्बंध रखते थे। यसरिब में दो क़बीले औस और ख़ज़रज एक दूसरे के घोर प्रतिद्वंद्वी थे सदियों से एक-दूसरे के साथ लड़ते-लड़ते ये दोनों क़बीले तंग आ चुके थे। ये लड़ाई को ख़त्म करना चाहते थे।

यसरिब के आस-पास कई यहूदी बस्तियां भी थीं। उन यहूदियों से यसरिब वाले सुनते रहते थे कि इसी ज़माने में एक नबी भेजा जाने वाला है। यहूदी यह भी कहते थे कि जब वह नबी आ जाएगा तो उसका अनुपालन करके हम सारी दुनिया को जीत लेंगे और मूर्तिपूजकों को मार डालेंगे।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उन 6 नवजवानों के सामने इस्लाम पेश किया, उनको अल्लाह के रास्ते की ओर बुलाया और उनके सामने क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ा। ये बातें सुनकर वे आपस में बातें करने लगे कि यह वही नबी मालूम होते हैं जिनका हवाला देकर यहूदी हमें धमकियां देते हैं। उन्होंने तुरन्त इस्लाम क़ुबूल कर लिया ताकि नबी को यहूदी अपने साथ न ले जा सकें। उन्होंने यह भी सोचा कि अल्लाह के दीन के माध्यम से हमें गृह युद्ध से भी छुटकारा मिल जाएगा। ये 6 लोग वहां के बहुत प्रतिष्ठित और समझदार लोग थे। उन्होंने यह फ़ैसला किया कि इस्लाम के नाम पर हम मदीना वालों को जोड़ लेंगे। अतः मदीना पहुंचकर उन्होंने घर-घर इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाना शुरू किया।

अगले वर्ष यानी नुबूवत के 12वें वर्ष में पिछले वर्ष के 6 लोगों में से 5 लोग 7 नये लोगों के साथ आये, जिनमें दो लोग क़बीला औस के भी थे। इन बारह लोगों ने नबी से मुलाक़ात की और आपके हाथ पर शपथ ली कि वे अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे, चोरी नहीं करेंगे, व्यभिचार से दूर रहेंगे, अपनी संतान की हत्या नहीं करेंगे, किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाएंगे और किसी भी बात में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की अवज्ञा नहीं करेंगे। जब हज पूरा हो गया तो नबी (सल्ल०) ने मुसअब बिन उमैर को अपना दूत बनाकर उन लोगों के साथ यसरिब भेज दिया। (मुसअब बिन उमैर मक्का में सबसे पहले ईमान लाने वालों में से हैं) मुसअब ने वहां इस्लाम क़ुबूल करने वालों की इस्लामी शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था की और जो लोग अभी बहुदेववाद पर थे उन्हें इस्लाम की ओर बुलाने का काम करने लगे।

मदीना में हज़रत मुसअब बिन उमैर को अपेक्षा से बढ़कर कामयाबी मिली। मदीना के लोग किसान थे, वे व्यापारी नहीं थे। उनकी अर्थव्यवस्था खेती-किसानी पर आधारित थी मक्का की तरह बहुदेववाद पर नहीं। वहां लोगों ने इस्लाम का विरोध नहीं किया। इस्लाम को वहां के सरदारों का भी सहयोग प्राप्त हुआ, जिसके कारण वहां बड़ी तेज़ी से लोग इस्लाम क़ुबूल करने लगे। ऐसा भी हुआ कि किसी क़बीले के सरदार ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और उसने अपने प्रभाव से पूरे क़बीले को इस्लाम में दाख़िल करा लिया।

नुबूवत के तेरहवें वर्ष यसरिब के 70 मुसलमान हज

करने मक्का आये। रास्ते में उन्होंने आपस में यह सलाह की कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मक्का में ठोकरें खाने के लिए कब तक छोड़े रखा जाएगा? वे कब तक डर के साये में जीते रहेंगे? क्यों न उन्हें हम यसरिब ले चलें। नबी को मक्का से मदीना ले जाना कोई आसान काम नहीं था। यह न केवल मक्का वालों से दुश्मनी मोल लेनी थी, बल्कि पूरे अरब के सभी क़बीलों को ललकारना था, क्योंकि पूरा अरब मक्का वालों का समर्थक और सहयोगी था।

यसरिब वालों ने सभी पहलुओं पर सोच-विचार करने के बाद यह फ़ैसला किया कि वे नबी को अपने साथ ज़रूर ले जाएंगे। हज के बाद अक़बा नाम की घाटी में उन्होंने नबी (सल्ल०) से मुलाक़ात की। नबी (सल्ल०) के चचा अब्बास ने यसरिब वालों को सम्बोधित करके कहा : हमारे बीच मुहम्मद की जो हैसियत है वह तुम्हें मालूम है। हमने मुहम्मद को बहुदेववादियों से सुरक्षित रखा है यह तुम्हें मालूम है। ये अपने लोगों के बीच मान-सम्मान के साथ हैं और सुरक्षित हैं। अब इन्हें तुम लोग अपने साथ यसरिब ले जाना चाहते हो, क्या तुम इन्हें निभा लोगे और इनको विरोधियों से बचा लोगे। अगर तुम इन्हें ले जाने के बाद अपना पल्ला झाड़ लोगे तो अभी से ही अलग हो जाओ, क्योंकि ये अपने लोगों के बीच सुरक्षित और प्रतिष्ठित हैं।

यसरिब वालों ने सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद यह ज़िम्मेदारी उठायी थी, इसलिए वे पीछे नहीं हटे और नबी (सल्ल०) के हाथ पर शपथ ले ली। शपथ में पिछले वर्ष वाली बातों के अलावा ये बातें भी शामिल थीं :

• अल्लाह की राह में उठ खड़े होंगे और अल्लाह के मामले में किसी निन्दक और आलोचक की परवाह नहीं करेंगे।

• जब मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा तो मेरी मदद करोगे और जिस चीज़ से अपनी जान और अपने बच्चों की सुरक्षा करते हो उससे मेरी भी सुरक्षा करोगे।

उन्होंने इन बिन्दुओं पर भी शपथ ली और खुले मन से ली। उनकी ओर से एक आदमी ने खड़े होकर यह भी कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे और कुछ लोगों, अर्थात यहूदियों के बीच समझौते के बंधन हैं, और हम उन्हें काटने वाले हैं। कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि हम ऐसा कर डालें फिर अल्लाह आपको विजयी बनाये तो आप हमें छोड़कर अपनी क़ौम की ओर पलट आएं।

इसके जवाब में नबी (सल्ल०) ने कहा : नहीं, बल्कि आप लोगों का ख़ून मेरा ख़ून और आप लोगों की बर्बादी मेरी बर्बादी है। मैं आपसे हूं और आप मुझसे हैं। जिससे आप लड़ाई करेंगे उससे मैं लड़ाई करूंगा और जिससे आप समझौता करेंगे उससे मैं समझौता करूंगा।

यसरिब वालों से बात पक्की हो जाने के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने प्रथम चरण में स्वयं यसरिब जाने के बजाय मुसलमानों को यसरिब हिजरत कर जाने की अनुमति दे दी।

हिजरत करने का अर्थ यह था कि केवल अपनी जान और अपना ईमान बचाकर यहां से निकलें और वहां पहुंचने तक जान का ख़तरा मोल लें। जबकि वहां पहुंचकर क्या सामने आने वाला है यह भी स्पष्ट नहीं। और यह भी स्पष्ट नहीं था कि आगे कैसे-कैसे संकटों का सामना होने वाला है।

अपनी जीवन भर की कमाई, सारे रिश्तेदार, सामाजिक हैसियत और प्रतिष्ठा सब यहीं छोड़कर जाना है। लेकिन मुसलमानों ने यह सब जानते हुए भी हिजरत करना शुरू कर दिया, क्योंकि उनके जीवन में जो चीज़ सबसे क़ीमती थी, वह था, उनका ईमान। वे अपना सबकुछ देकर भी अपना ईमान बचाना चाहते थे, लेकिन यह भी कोई आसान काम नहीं था। बहुदेववादियों ने चारों ओर पहरे बिठा रखे थे। वे मुसलमानों को आसानी से जाने नहीं देते थे। जाने वाला सब कुछ छोड़कर जाता था इसके बावजूद वे उन्हें बांधकर क़ैद कर देते थे, उनसे सवारी का ऊंट और रास्ते का ज़रूरी सामान भी छीन लेते थे। कई मुहाजिरों को तो बहुदेववादियों ने आधे रास्ते के बाद घेर कर पकड़ लिया और लाकर मक्का में क़ैद कर दिया।

लेकिन इन सबके बावजूद लोग लगातार निकलते ही रहे और केवल दो से ढाई महीने के अन्दर तीन लोगों को छोड़कर सारे मुसलमान मदीना से पलायन कर गये। ये तीन लोग थे : ख़ुद अल्लाह के रसूल (सल्ल०), हज़रत अबू-बक्र (रज़ि०) और हज़रत अली (रज़ि०)। इनके अलावा कुछ ऐसे मुसलमान भी मक्का में रह गये जिन्हें बहुदेववादियों ने पकड़ कर क़ैद कर रखा था। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को अभी अल्लाह की ओर से अनुमति नहीं मिली थी। इसलिए वे रुके हुए थे और अपने इन दोनों साथियों को भी रोके हुए थे।

उधर हब्शा से भी मुसलमान हिजरत करके मदीना आ गये थे। हज़रत अबू-बक्र ने भी हिजरत की पूरी तैयारी कर ली थी। सामान भी बांध लिया था और सवारी की व्यवस्था भी कर ली थी।

जब मक्का के मूर्तिपूजकों ने देखा कि मुसलमान एक-एक करके निकल गये और अपने बाल-बच्चों को भी निकाल ले गये, यहां तक कि अपने सामान को भी बहुत हद तक ठिकाने लगा गये, तो उनके हाथों के तोते उड़ गये। वे इतने विचलित और दुखी हुए कि पहले कभी नहीं हुए थे। उन्हें अपनी अर्थव्यवस्था ख़तरे में पड़ी मालूम होने लगी, जो मूर्तिपूजा के आधार पर टिकी हुई थी। वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की नेतृत्व-क्षमता और मुसलमानों के बलिदान की भावना से भी घबरा रहे थे। जो कभी भी उनके लिए चुनौती बन सकती थी।

यसरिब में इस्लाम के जड़ पकड़ने और यसरिब वालों के उसके समर्थन में मक्का वालों के विरुद्ध खड़े होने में मक्का वाले अपने लिए गंभीर ख़तरे देख रहे थे। यमन आने-जाने के लिए मक्का वालों के व्यापारिक क़ाफ़िले जिस रास्ते से गुज़रते थे, उस रास्ते में यसरिब की स्थिति बड़ी रणनीतिक थी। उस रास्ते में हल्का-सा भी ख़तरा उनकी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत हानिकारक हो सकता था।

इन्हीं हालात में मक्का के बहुदेववादियों ने दारुन-नदवा में अपनी संसद बुलायी, जिसमें क़ुरैश के सभी क़बीलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें केवल इस बात पर बहस हुई कि जैसे भी हो जल्दी से जल्दी इस्लाम के पैग़म्बर को ही रास्ते से हटा दिया जाए, ताकि इस्लाम का यह अभियान यहीं का यहीं समाप्त हो जाए। वे अपने अस्तित्व के बचाव का इसके अलावा कोई रास्ता नहीं पाते थे। संसद में यह तय हुआ कि मक्का के सभी क़बीलों का एक-एक योद्धा तलवार लेकर एक साथ निकले और एक ही साथ मुहम्मद पर हमला करके उसकी कहानी समाप्त कर दे। इस तरह किसी एक क़बीले पर उसकी हत्या का आरोप नहीं आएगा, बल्कि सभी क़बीले उसमें शामिल होंगे और मुहम्मद के क़बीले वाले स्पष्ट है कि सारे क़बीलों से एक साथ तो लड़ नहीं सकते अतः मजबूरन वे ख़ून बहा (जुर्माना) लेने पर राज़ी हो जाएंगे। सभा समाप्त हुई और सभी लोग जल्दी से जल्दी इस योजना को पूरा करने में जुट गये। ■■

लघुकथा

तस्बीह के दाने

सुबह की हल्की ठंडक में ज़िक्र-ए-इलाही करते हुए क़दम बढ़ाना मेरी रोज़मर्रा का हिस्सा है। एक हाथ में तस्बीह के दाने ढुलकते रहते और ज़बान पर अल्लाह का नाम होता। इस सुहानी वॉक में बंटी शर्मा जी अक्सर मेरे हमक़दम होते, बातों-बातों में राह आसान हो जाती और वापसी के मोड़ पर बलविंदर भी मुस्कुराता हुआ मिल जाता। हम तीनों का यह छोटा-सा कारवां रोज़ सुबह के सन्नाटे में सौहार्द की मिठास घोल देता।

एक सुबह, जैसे ही मैंने तस्बीह का एक दाना आगे खिसकाया, अचानक धागा टूट गया। देखते ही देखते सारे पवित्र दाने छिटककर सड़क और किनारे उगी घास में बिखर गए। मैं हतप्रद होकर वहीं ठिठक गया, हाथ ख़ाली थे और समझ नहीं आ रहा था कि इस तरह बिखरे दानों को कैसे समेटूं।

तभी बंटी जी बिना एक पल गंवाए नीचे झुके। उन्होंने ज़मीन से पहला दाना उठाया, उसे माथे से लगाया, अदब से चूमा और मेरी हथेली पर रख दिया। इतने में वापसी के रास्ते से बलविंदर भी आ पहुंचा। स्थिति की संवेदनशीलता को समझते ही वह भी बिना कुछ कहे घास में दाने तलाशने लगा। अगले कुछ मिनटों तक दोनों दोस्त ज़मीन पर बिखरे एक-एक दाने को बड़े जतन से चुनते, उसे चूमते और सम्मान के साथ मेरे हाथों में सौंपते चले गए।

उस दिन धागा टूटने से तस्बीह भले ही बिखर गई थी, लेकिन उन दानों को चुनते बंटी और बलविंदर के हाथों ने इंसानियत और आपसी आदर के एक ऐसे अटूट धागे को पिरो दिया था, जिसकी चमक से मेरा दिल बाग़-बाग़ हो उठा। उस पल मुझे गहरा एहसास हुआ कि जब तक दिलों में ऐसा सम्मान और मुहब्बत ज़िंदा है, तब तक हमारे समाज का ताना-बाना कभी कमज़ोर नहीं हो सकता।

—लेखक : **मुक़ीत ख़ान, खंडवा**

भारतीय धर्म-ग्रंथ और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.)

❖प्रस्तुति : सय्यदा हुमैरा

[भारतीय धर्म ग्रंथो में पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० के बारे में जो उल्लेख मिलता है उसके संबंध में AI द्वारा निम्न जानकारियां उपलब्ध कराई गईं]

डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय ने इस विषय पर सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक शोध कार्य किया है। वह पंजाब यूनिवर्सिटी और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में संस्कृत के प्रोफ़ेसर रहे हैं। उन्होंने "कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब" (1969), ", नराशंस और अंतिम ऋषि"(1970) और "मुहम्मद इन द वेदास एंड पुराणास" (Mohammed in the Vedas and Puranas) जैसी कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। उनके बाद प्रोफ़ेसर आशित कुमार बंदोपाध्याय और कुछ दूसरे स्कॉलर्स ने भी इस विषय पर काम किया।

प्रोफ़ेसर वेद प्रकाश उपाध्याय की इस रिसर्च में हिंदू धर्म-ग्रंथों (वेदों और पुराणों) के श्लोकों के हवाले से बताया गया है कि उनमें उल्लिखित "कल्कि अवतार" और "नराशंस ऋषि" के जो गुण तथा विशेषताएं बताई गई हैं, वे पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० पर सही बैठती हैं। इस रिसर्च के मुख्य बिंदु नीचे दिए गए हैं :

1. 'नराशंस' शब्द का अर्थ : प्रशंसनीय व्यक्ति (Praiseworthy Man): ऋग्वेद और अन्य वेदों में एक शख़्सियत का उल्लेख है जिसे 'नराशंस' कहा गया है।

संस्कृत में 'नर' अर्थात इंसान और 'आशंस' अर्थात प्रशंसा। इसका अर्थ है "वह इंसान जिसकी प्रशंसा की जाए". अरबी भाषा में 'मुहम्मद' शब्द का भी यही मतलब होता है।

2. 'कल्कि अवतार' के माता-पिता और जन्मस्थान: कल्कि पुराण और भागवत पुराण के अनुसार, अंतिम अवतार के माता-पिता और जन्म स्थान के नाम बताए गए हैं जो मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन से मेल खाते हैं :

सुमति (माता) : सुमति का मतलब होता है शांत या नर्मदिल, जो अरबी नाम 'आमिना' (मुहम्मद सल्ल०की माता) का समानार्थी (synonym) है।

विष्णुयश (पिता) : विष्णुयश का अर्थ है 'विष्णु (ईश्वर) का सेवक', जो अरबी नाम 'अब्दुल्लाह' (मुहम्मद सल्ल० के पिता) का बिल्कुल सही अनुवाद है।

शम्भल (जन्मस्थान) : ग्रंथों में उनके जन्मस्थान को 'शम्भल' बताया गया है जिसका मतलब है 'अमन और शांति का घर'। मक्का शहर को भी अरबी में 'दारुल अमान' (शांति का स्थान) कहा जाता है।

3. अथर्ववेद की भविष्यवाणी : अथर्ववेद (काण्ड 20, सूक्त 127) में कुछ ऐसी ख़ूबियां हैं जो अरब के इलाक़े की ओर इशारा करती हैं :

ऊंट की सवारी : इसमें उन्हें एक 'ऊंट पर सवारी करने वाला ऋषि' बताया गया है। शास्त्रों के अनुसार, किसी भी भारतीय ऋषि के लिए ऊंट की सवारी वर्जित (forbidden) थी।

दुश्मनों से सुरक्षा : इसमें उल्लेख है कि वह 60,000 से अधिक दुश्मनों के बीच सुरक्षित रहेंगे। रिसर्च के अनुसार, मक्का की उस समय की आबादी लगभग इतनी ही थी।

4. चार साथी (Four Companions), चार सहाबा: शास्त्रों में ज़िक्र है कि कल्कि अवतार चार देवताओं या साथियों की मदद से बुराई को ख़त्म करेंगे। इस रिसर्च के मुताबिक़, यह इस्लाम के पहले चार ख़लीफ़ा (अबू बक्र, उमर, उस्मान, और अली रज़ियल्लाहु अन्हुम) की तरफ़ इशारा है।

5. भविष्य पुराण में 'महामद' नाम का उल्लेख : भविष्य पुराण (प्रतिसर्ग पर्व 3, खण्ड 3, अध्याय 3) में स्पष्ट रूप से लिखा है कि एक 'म्लेच्छ' (विदेशी/अरब) धर्म-गुरु आएंगे जिनका नाम 'महामद' होगा।

अनुयायियों की निशानियां : इसमें उनके मानने वालों की निशानियां बताई गई हैं—जैसे उनका ख़तना (circumcision) होगा, वह दाढ़ी रखेंगे, अज़ान (prayer call) देंगे, और सुअर (pork) को छोड़कर हलाल मांस खाएंगे।■■

A Well Wisher

Mohammad Shuaib Ansari
Dariyabad,
Barabanki
(U.P.)

"खाओ और पियो और सदक़ा (दान) करो और पहनो जब तक उसमें अपव्यय और अहंकार न हो।"

(हदीस : अहमद, नसई, इब्ने-माजा)

KANTI Monthly, New Delhi
October 2026
Posted on 20-21 September 2026
Published on 18 August 2026
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52

"उस क़ौम पर रहमत नहीं उतरती जिसमें रिश्ते-नाते को तोड़ने वाला मौजूद हो।" (हदीस : बैहक़ी)

A Well Wisher

Mohammad Haji Idrees
Damoh (M.P.)